

वाङ्मयों के पार

श्रेष्ठ की अन्य रचनाएँ

नाटक

विपयाम (पुरस्कृत)

२००

ज्वाह (पुरस्कृत)

२००

छाया

१२५

स्वप्न-संग (पुरस्कृत)

२००

घण्ट (पुरस्कृत)

२५०

घटरंज के विताही

२००

कविता

रूप-दर्शन (सचिव पुरस्कृत)

१०

घाँसों में

२५०

बन्दना के बोल

२५०

पंजाब की प्रीत-कहाणियाँ (सचिव)

३००

का रेखा

प्रेम में

आमाराम एरड संघ, दिल्ली-६

बादलों
के
पार
□ □
□

□
□ □
हरिकृष्ण 'प्रेमी'



आत्माराम रायटर्स

काश्मीरी गेट, दिल्ली.

देश और काम के कारण जो 'टेकनीक' में केर-बखल होता रहता है।
 विज्ञान की समस्त संमंथ को भी बहुते से अधिक बुद्धिवा प्रदान कर रही है—
 इसलिए घाम केवल पशों एवं जोड़ी हस्त-रचना की सामग्री की सहायता से
 नाटकों का अधिनव करने का सम्भव नहीं है—इसलिए वहाँ विज्ञान संमंथ
 की सहायता को तैयार सदा रहना है वहाँ बड़े पैटिण्य वाले हस्तों की रचना
 की जाती है और उनमें बस्ती-जस्ती हस्तों का परिवर्तन घणाच्छीय है बसिक
 समुच्चिवाजनक है। किन्तु भारत की—विशेष कर से हिन्दी के संमंथ की तो
 रिमति ही और है। यहाँ व्यावसायिक संमंथ है वहाँ अब हमें नाटकहीनों के
 लिए ही नाटक लिखने पड़ते हैं—और जसी रचना-कीयत का प्रबोध करना
 पड़ना है जो नाटकों को सरसता से अधिनव कर सकें। मुझे इस बात का
 सम्योप है कि मैंने नाटक भारतवर्ष के अधिक स्वामी पर सप्तमनापूर्वक ऐसे मए
 हैं—धने जाते हैं।

येप जो कहना है वह तो नाटक स्वयं ही कहेंगे।

—इतिहास 'प्रेमी'

क्रम

१	बादलों के पार	१
२	यह भी एक खेल है	१३
३	गर या होटल	२३
४	प्रेम घग्घा है	४०
५	बाणी-मन्थिर	५५
६	रूप-सिद्धा	७४
७	नया समाज	१०७
८	मातृ भूमि का मात	१२३
९.	यह मेरी जन्म-भूमि है	१४२
१०	निष्कुर ग्याय	१५८
११	परचाताप	१७३

बादलों के पार

पात्र-सूची

- माधव
एक मुबक राधा का प्रेमी बाद में संन्यासी ।
- राधा
एक मुबती माधव की प्रेमिका बाद में विधवा ।
- कमल
राधा का देवर ।
- दुर्गा
राधा की मास ।

पहला दृश्य

[हरिपुरा गाँव की नाम हुआ नदी के तट पर राधा बंगला में घासी चका बसाए घाती है । राधा इत गाँव के एक दुसीन बाह्यल की पुत्री है । पिछले साल उतका बिजल हुआ का घोर वर्ष उताए होने के पहले ही उधकी माँग का तिमूर पुँष गया । बीजल से उतके घन-अप को पुताक के अल की तरह मिला एका है । अघप से उतकी घालों में बिताव के ओ बाएक एा दिए हैं उतकी कहु घोर भी अतिक मपुर हुा गई है । राधा घाट पर अड़े को रसकर बैठ जाती है घोर पानी में लम्बा के मुनहने बावलों की ओ छाया बड़ रही है उसे देकती रहती है ।]

राधा—यह मुनहनी बावलों की छाया नदी के पानी में कितनी सुन्दर पान पड़ती है किन्तु अभी अँधेरा एा आएना घोर इन सहरों में केउस आकाश के धामु ही दिनाई रहे । मेरा अविष्य एक अमानक अणकार है, बनमें इन बिजली-ये-अन-बीजन को छिनाकर मैं कैसे बनूँगी ?

[आषव का प्रवेश]

आषव—कोन राधा ! तुम मोट घाई रहे ।

राधा—हाँ मैं मोट घाई हूँ लेकिन "

आषव—बहु बाग मीन में कहुने की क्या आरपाना है राधा ! तुम्हारी अिमूर-रूँत बाँग अई-बहीन अनाइयाँ सब-मुँछ बह रही है ।

[राधा रोती है]

तुम रोती हो राधा ! लेकिन रोने से अँधेरा की अदियाँ कम नहीं होती । अउर व। अाप महु। अुमनी ।

राधा—अबिन अागे मैं की अमानाअुगी अजना है "

आषव—बहु अागों के पानी थे नहीं तुम अजना । तुम्हें पार है अने अक-अ के अिन । इन नदी-अिनारे के व ओ म एक अगि-अिअनी गीता काते से

तुम मुझसे छिपती फिरती थीं मैं तुमसे ।

राधा—वै दिन भूमे नहीं जा सकते । हम बड़े हुए और हमारा खेल भी बड़ा हुआ । मैं तुमसे छिपने के लिए विवाह की घोट में चली गई । मैं तुमसे मिलना तो चाहती थी लेकिन मैं कुसीन बाहाल की कन्या और तुम कामरु के छोकरे, हमारे मिलन-मार्ग में समाज ने बाईं खोर दी थी ।

माधव—हाँ राधा इसलिए हम केवल खेल सकते थे । एक-दूसरे से मिलने की इच्छा प्राणों में पाले हुए एक-दूसरे से छिपते फिरता ही हमारे ज्ञान्य में बसा है ।

राधा—लेकिन माधव !

माधव—क्या राधा !

राधा—यह तो हम मिल सकते हैं । त्रिघ घोट में मैं जाऊँगी वह फिर चुकी है । तुम भाकर मुझे पकड़ लो ।

माधव—तुम यह क्या कहती हो राधा ! मह पाप ।

राधा—पाप नहीं माधव यह स्वाभाविकता है । तुम्हारा प्रेम मेरी रस-रस में प्रवाहित हो रहा है । समाज ने मुझे किसी दूसरी काया से बाँध बिना जा रहीसे तो मैं पराई नहीं हो गई । मैं सब कहती हूँ, माधव यह फुप धभी तक पवित्र है । उस तपेदिक के भरीख कुसीन बाहाल ने इस पर अपने होंठ नहीं लगाए हैं । तुम इसे धपनी पूजा में ले लो ।

माधव—तुम हिन्दू-नारी हो !

राधा—नहीं मैं एक दुर्बल जाती हूँ । मुझे भूख लगती है । मुझे प्यास लगती है । मुझे मोक्षन चाहिए मुझे पानी चाहिए । तुम मेरे हृदय की भूख मिटाओ माधव । तुम मेरे प्राणों की प्यास मिटाओ नहीं तो

माधव—नहीं तो !

राधा—नहीं तो मैं पत्थे मासे का पानी पिऊँगी । मैं पिछाचिनी हो जाऊँगी । संसार खोने के बड़े में बिल सेकर बड़ा है ऐसा बिल जो आत्मा को मार बालता है जाना को नहीं ।

माधव—राधा !

राधा—माधव ! तुमसे बचपन में मुझे वेदों पर चढ़कर लोड़-लोड़कर कल सिखाए हैं। अब बचान होने पर मुझे भुक्तों मारोते ? लेकिन वह काया भुधी नहीं रहना चाहती। जो इसे भुधी रहना चाहते हैं वे प्रकृति के विरुद्ध खतरे हैं। पराजित होते हैं। पत्रि के धम्पकार में वे अपनी भूम मिटाते हैं। मैं दिन के प्रकाश में

माधव—दिन के प्रकाश में समाज से विद्रोह करना चाहनी हो। इतना कम तुममें हो सकता है, बुद्धिमें तो नहीं है। मुझे तुम्हारा जोन बचपन से ही रहा है। मैं तुम्हारे परिवार को अपने प्राणों में धरे हुए सार में विविध-सा भूम रहा हूँ। किसी कार्य में मेरा मन नहीं लग रहा। मैंने समझा था तुम बुर हो। स्मृति के प्रकाश में तुम्हारी भूमि को स्थापित करके उसके चरलों पर धीनुषों का धर्म बढ़ाना ही मैं अपना बम समझता था। धार वह मूर्ति प्रकट होकर रह रही है तुम मुझे ले लो। मैं संसार की धर्मों में जापी बनने से नहीं करता लेकिन मेरी दृष्टिदेवि तुम क्यों अपने प्राणन से नीचे उतरती हो ? भारतीय भाषों की आदियों ने जो कल्पना की है वह सांसारिक धारणा से बहुत ऊँची है। तुम वहीं बैठो राधा !

राधा—तुम मेरा अपमान करते हो !

माधव—मैं अपमान नहीं करता राधा ! तुम स्वयं अपना अपमान कर रही हो। तुम अपने अन्दर द्विपी धर्म को नहीं पहचानती।

राधा—मेरा जीवन मेरा अपना है। समाज समझा स्वामी नहीं है। मैंने बचपन से तुम्हारे चरलों पर अपना हृदय-भुवन रणा था वहीं से उठाकर विधी के कुमरी समूह रण दिया था। वह वाद था।

माधव—उठ वाद को तुम बुद्ध बना लो राधा !

राधा—घोर अपने जीवन की तरफ बना लूँ। यह मुझमें ही था। (तनक कर माधव के सामने लड़ी होती है। अपने लिए ले लड़ी किलका डेनी है) मुझे देणो माधव अपनी तरह से देणो। मैं बचपन की राधा नहीं हूँ। मेरी लानों की बढ़पन में बुद्ध का धारणा है। मैं अपनी ही भागना के बस से दुपड़ें-दुपड़ें हो जाऊँगी। तुम अपनी दृष्टिदेवि को धम्पकार की घोर बन जाने दो।

माधव—मैं जानता हूँ, राधा तुम्हारे पास कम है। बत है, धीरे धीरे बढ़ रही है। इन बिल्लियों की सपटों में तुम झुलसी जा रही हो। मेरे स्मृति पत्रि प्रकाश दे लेंगे तो मैं अपने को बच समझूँगा। तुम मेरी मिट्टी का मोह छोड़ दो। राधा ! तुम माधव घाई हो घोर में धाव जा रहा है। इस मौक की छाड़ कर जा रहा है। अब तक तुम मुझे प्रप्राप्त की मैं अपने पशु को पराजित कर सकता था, लेकिन अब ! मैं तुमसे भी दुर्बल हूँ। मैं जना बार्डेमा ठाकि दुर्बल बालों में कहीं मुझे तुम्हारी मिट्टी का मोह न हो जाए। धमकान् तुम्हें बस है राधा ! बिया !

[माधव का प्रस्थान]

राधा—बच्चा जना गया। अभी तक मैंने अपने-आपको सुहायित समझा था। क्या अब बिबला समझना होगा ? समाज में मेरे साथ जो क्रिया का क्या अब उसे स्वीकार करना होगा ? (घड़े में पानी भरकर घिर पर रखती है) अब मेरे घिर पर बोझ बढ़ गया है। रास्ते में रपटन है। मुझे डर है कहीं घिर न पड़ूँ।

[प्रस्थान]

[अन्त-परिवर्तन]

दूसरा दृश्य

[राधा अपनी ललुराल के घर में अपने कमरे में बाइने के घाने बड़ी है। अपने लम्बे-लम्बे बालों को कंधे से झुलसा रही है।]

राधा—(बालों को हाथों में लेकर) अपने घिर पर इतना घामकाए साथे ईश्वर के सुनेपन में जीवन का मार्ग कैसे पार कर सकूँगी ! जो इश्वर गया मर नहीं है उसे जीवन बढ़ाने से जना क्यों करते हैं ? लोग कहते हैं जीवन तर

राधा—माधव ! तुमने बचपन में मुझे पैरों पर बड़कर तोड़-सोड़कर कम बिताए हैं । अब बचान होने पर मुझे नुसों मारोये ? मैरिन यह काया भूषी नहीं रखना चाहती । जो इसे भूषी रखना चाहते हैं वे प्रकृति के विरुद्ध चलते हैं । पचबिठ होते हैं । राशि के अम्बकार में वे अपनी भूख मिटाते हैं । मैं दिन के प्रकाश में

माधव—दिन के प्रकाश में समाज से विद्रोह करना चाहती हो । इतना बस तुममें हो सकता है मुझमें तो नहीं है । मुझे तुम्हारा सोम बचपन से ही रहा है । मैं तुम्हारे अस्तित्व को अपने प्राणों में धरे हुए सतार से बिखिल-सा भूम रहा हूँ । किसी कार्य में मेरा मन नहीं लग रहा । मैंने समय-सा या तुम बुर हो । स्मृति के आकाश में तुम्हारी मूर्ति को स्थापित करके उसके चरलों पर आँसुओं का अम्य बड़ाया ही मैं अपना बर्ष समझता था । जान वह मूर्ति प्रकट होकर वह रही है तुम मुझे ले लो । मैं लज्जार की धाँकों में बापी बनने से नहीं करता लेकिन मेरी इच्छाएँ तुम क्यों अपने आसन में नीचे उतरती हो ? भारतीय माटी की श्रितियों ने जो कल्पना की है वह आँसुकारिक भावना से बहुत ऊँची है । तुम वहीं बैठो राधा !

राधा—तुम मेरा अपमान करते हो ।

माधव—मैं अपमान नहीं करता राधा ! तुम स्वयं अपना अपमान कर रही हो । तुम अपने अम्बर द्विपी पवित्र को नहीं पहचानती ।

राधा—मेरा जीवन पित्त अपना है । समाज उसका स्वामी नहीं है । मैंने बचपन से तुम्हारे चरलों पर अपना हृदय-सुमन रखा था वही से उठकर किसी ने दूसरी बगल रख दिया था । वह पाप था ।

माधव—उस पाप को तुम पुन्य बना लो राधा ।

राधा—घोर अपने जीवन को नरक बना लूँ । यह मुझसे न होया । (तनक कर माधव के सामने पड़ी होती है अपने तिर से लाड़ी खिन्नका देती है) मुझे देखो माधव अपनी तरह से देखो । मैं बचपन की राधा नहीं हूँ । मेरी सानों की बड़कन में भूकम्प का आह्लास है मैं अपनी ही मातना के देन से दुकड़े-दुकड़े हो जाऊँगी । तुम अपनी इच्छाओं की अम्बकार की घोर मत्त जाने लो ।

माचन—मैं जानता हूँ राधा तुम्हारे पास क्या है, पत है, और भावुक हृदय है। इन नितापों की सपटों में तुम फूसती जा रही हो। मेरी स्मृति यदि प्रकाश हो सके तो मैं अपने को क्या समझूँगा। तुम मेरी मिट्टी का मोह छोड़ दो। राधा। तुम घास पार्क हो और मैं घास का रहा हूँ। इस घास को छोड़ कर जा रहा हूँ। जब तक तुम मुझे अप्राप्य भी मैं अपने पपु को परचित कर सकता था लेकिन अब। मैं तुमसे भी दुर्बल हूँ। मैं जला जाऊँगा यदि दुर्बल सखों में कहीं मुझे तुम्हारी मिट्टी का मोह न हो जाए। जगदान् तुम्हें बत दे राधा ! विदा !

[माचन का प्रत्याग]

राधा—बहु जला गया। पानी तक मैंने अपने-आपको मुहागिन समझा था। क्या अब निधवा समझना होगा ? समाज ने मेरे हाथ की किया था क्या अब उसे स्वीकार करना होगा ? (घड़े में बानी भरकर सिर पर रखती है) अब मेरे सिर पर बोझ बढ़ गया है। रास्ते में खपटन है। मुझे डर है कहीं बिर न पड़ूँ।

[प्रत्याग]

[बड़-परिवर्तन]

दूसरा दृश्य

[राधा अपनी सानुराल के घर में अपने कमरे में आइने के आगे खड़ी है। अपने सामने-सामने बालों को लथे से बुलका रही है।]

राधा—(बालों को हाथ में लेकर) अपने सिर पर इतना धम्यकार सारे वैश्व के सुयोग में जीवन का मार्ग कैसे पार कर सऊँगी। जो हृदय धया मर नहीं है उसे लोप बड़कने से मना क्यों करते हैं ? लोप करते हैं जीवन तर-

पट बौड़ा का रहा है लेकिन मुझे तो एक लख भी पहाड़ मान पड़ता है। बाबू धोर नयकर सपटें हैं। उनके नीतर होकर इतना लम्बा रास्ता पार करता है। श्रमियों की प्रज्ञा है धरती पर एक भी मुसल न आए, वहीं तो तुम्हारे लिए बरक में स्वान होता।

[बाहर किसी प्रकाल में मृत्य-दान छिड़ रहा है। बाबा स्पष्ट सुनाई रहा है।]

प्राण क्यों प्यासे रहें हैं

की रहा संसार प्यासे !

[माने की प्रार्थना राधा की बोका देती है]

राधा—मह कीन मेरे ही हृदय का कीन या रही है ! प्राण मेरा मन बहुत केवल हो रहा है।

[कंधा वहीं भू नार-दान पर पड़कर प्रान्तमारी के बात बाकर प्रथम से एक कीदो निकालती है और उसे देवती है। नीत प्राण बड़ रहा है।]

मह रही तरिता क्षमक्यती

पर रहे पर मोप बाकर ।

प्यास अपनी तु बुझाती

क्यों न बसके तीर बाकर ?

धर्म मुह क्यों करती,

तामने नकु-पार पाकर ?

पाप इसमें कीन ता तु

प्यास प्राणों की बुझ है ।

प्राण क्यों प्यासे रहें ये

की रहा संसार प्यासे ।

या रही कोमल किसी तप-

की मिखा नर दान प्यारा ।

कीद अपनी नर बहुता

है मुखा की स्नेह पादा ।

तू विमल क्या सोचती है ?
 है जगत् जगल सारा ।
 तू स्वयं कैवलि बनो है
 रात-दिन बग्यन सजाने ।
 प्राण क्यों प्यासे रहूँ ये
 पी रहा तू० प्यासे ।
 रात साईं है सजाकर
 पूज तारों के मनीश्वर ।
 पर्वतों के भी हृदय से
 फूटते रस-राग-निर्झर ।
 तू फिर बननी प्रसैली
 बच का यह बोझ डोकर ?
 क्या मरना चाह मैं
 रो बूँद पंखी को चुरा से ।
 प्राण क्यों प्यासे रहूँ ये
 पी रहा सझार प्यासे ।

[पीछ समाप्त हो जाता है । राधा फिर घाड़ने के सामने खड़ी हो जाती है । एक बार हाथ की तस्वीर देखती है दूसरी बार घाड़ने में प्रपन्नो छवि ।]

राधा—(तस्वीर को देखती हुई) एक दिन मैंने तुमसे कहा था 'प्राण क्यों प्यासे रहूँ ये पी रहा संसार प्यासे । किन्तु तुम मिष्टान्त हो ! तुम बने यय । मेरे जीवन में एक और प्रसृष्टि की प्राण बंधकर । जिस ऊँचे आकाश में बैठकर तुम अपनी दृष्ट-देवी की आराधना करते भी वहाँ मेरा हाड़-मांस का सरीर नहीं जा सकता । मैं पाप की ज्वाला से अपने घोंट बनाऊँगी । (फिर घाड़ने में देखती है । वहाँ उसे एक पुरुष की आकृति नजर आती है । वह चौंक पड़ती है । उसके हाथ से तस्वीर छूट जाती है । फिरकर देखती है । ओंख से घाँसें जाम करती है किन्तु पीछे लड़ा हुआ उसका चेहरा जमल केवल मुस्करा देता है । वह घाँसें मोची कर बैठती है ।)

कमल—भाभी !

राधा—देवर !

कमल—बहु बड़ा कुस्म है !

राधा—किध पर ?

कमल—दूम पर ।

राधा—किरका ?

कमल—बिधाता का ।

राधा—राधा पर बिधाता का जो कुस्म है उसकी कमल को क्यों चिन्ता है ?

कमल—उह में भी सोचता हूँ कि ऐसा क्यों है ? जो ज्वाला है वह पतलों को प्रामाण्य करती ही है । ज्वाला पतलों से पूजनी है वे क्यों घाते हैं ? जिन दीप-छिन्काओं पर घाबरल होते हैं उन घाबरलों के चारों तरफ वे चक्कर मचाते हैं ।

राधा—लेकिन क्या मनुष्य भी ऐसा ही करे ?

कमल—मैं ऐसा नहीं कहता कि मनुष्य भी ऐसा ही करे । लेकिन मनुष्य भी बागबर है वह अपनी बाढना को छिपाता चाहता है और बागबर नया है । वास्तव में देखा जाए तो माली-माभ का स्वभाव एक है । प्रत्येक ज्ञानु अपने उपहार और अपनी प्रावस्यकताएँ लेकर घाती है और मनुष्य के जीवन की भी ज्ञानुएँ होती हैं । उन ज्ञानुओं के उपहार और प्रावस्यकताएँ होती हैं । उन उपहारों की ग्रहण करना और प्रावस्यकताओं को पूरा करना मानव-हृदय का स्वाभाविक बर्भ है ।

राधा—तुम मुझसे क्या कहने के लिए राठ के समय आए हो ?

कमल—तुम्हारी छिन्कुर का छिबिया कहीं है ?

राधा—बहु दो बर्भ से घलमायी मैं बन्ध पड़ी है ।

[कमल छिबिया उठा लाता है]

कमल—पुरा न मालो मैं तुम्हारे घाव खोल करता हूँ । (नस्सक में छिन्कुर भर बैठा है) घब परा घाहने में देखो । तुम्हारा हाहाकार घब हँस बड़ा न !

[राधा घाहने में देखती है]

राधा—घोर मेरा वैभव्य रो पड़ा न ! रहने दो देवर, जो सकीर बिपाता ने पोंछ दी उसे बुबाप भरने से लाभ ही क्या ! जब सबेरे धाकाप मास होना तब संसार साम धाँसे करेगा ।

कमल—(घाहने के सामने राधा को बयल में बाड़ा हो जाता है) क्या हम पास-पास खड़े हुए बुरे भगते हैं ?

राधा—तुम इनने नीच हो देवर ! तुम्हारे भाई मरकर भी मुझ में जीवित हैं ।

कमल—तुममें जीवित हैं वह तुम सब कहती हो भाभी ? तुमने किस दिन अपने हृदय में जन्में रखा ? यदि रखीं तो सामय वे मौत के मूँह में से भी लौट पाते । (नीचे से तस्वीर उठाता है) तुम एक क्षण भी उनको अपने हृदय में न रख सकी । यह तस्वीर जो तुमने एकांत की साबिन बना रखी है सो क्या भँवर की स्मृति-सूत्रा के लिए ? तुम अपने हृदय के खिरे में जिस पाप को छिपाए बठी हो क्या मैं उससे अधिक कासा हूँ ।

राधा—तुम कामे नहीं हो देवर ! मैं देवी भी नहीं हूँ कमल ! संसार में बिरसा ही पुरुष बैठता होगा बिरसो ही गारी देवी होगी ! लेकिन प्रत्येक पुरुष को भ्रमर बनना आवश्यक नहीं और प्रत्येक गारी को बेस्वा होना आवश्यक नहीं । मैं जानती हूँ मेरे लिए मेरा रूप और यौवन अभिष्टाप है । मेरा मानना बिल्लन हृदय मुझे न जाने कहाँ-कहाँ सड़ा से जाता है ! फिर भी घाँधी-सूफान के भीतर मैं गारीरव की बीप-सिखा को बुझने न दूँगी ।

कमल—मैं तो समाज की निदय कड़ियों के बिच्छड़ बिछोड़ करना चाहता हूँ ।

राधा—मैं तुम्हें इसमें सह्ययता दूँगी देवर ! न जाने कितनी परीब बिचवाएँ वैभव्य की ज्वाला में जल रही हैं ! सम्भवतः वहाँ तुम मुझ-जैसा रूप न पाओ, लेकिन गारी का रूप ही तो सब-कुछ नहीं है । फिर किसी रूप के घोर से समाज से बिछोड़ करना सात्त्विक नहीं होगा । बोलो देवर है तुममें साहस ?

कमल—मैं सोचूँगा ।

[सहता राधा को साथ बुर्ग का प्रवेश कमल और राधा

किर क्यों कोंक रहा बेकार, मुसाकिर ।

बीचन का मल बोध उतार ।

मुसाकिर, बीचन का मल बोध उतार ।

बीचन तो बिधि का दीपक है ।

यह बलता रहता अपलक है ।

कोन बका पाया सबतक है ।

इतमें बिधि का लोह अपाट, मुसाकिर ।

बीचन का मल बोध उतार ।

मुसाकिर, बीचन का मल बोध उतार ।

राजा—इम गीत ने मेरे प्राणों को हिता बिना है । मागों यह मेरी धन्तरात्मा की पुकार है । तो क्या मुझे मरने का भी अधिकार नहीं है ? अब हमारे कपड़े सँके हो जाते हैं हम डूबते पहल सेठे हैं सँके उतार सेठे हैं ।

[संन्यासी के बेस में माबब का प्रवेश]

माबब—मेरिग हमें मरे होने का अधिकार तो नहीं है । हमारे डूबते कपड़ों की धलपारी की बानी हमारे पास नहीं है । तुम धरतराति के सुनेपम में संगा के बाट पर बसा करने चाई ही ?

राजा—संन्यासी तुम मेरे माबब तो नहीं हो ?

माबब—मैं माबब का तुम्हारा भी का किन्तु तुम्हारा न रहकर मैंने तुम्हें पा लिया है, राजा !

राजा—कब ? प्राय ?

माबब—प्राय नहीं प्राय के बहुत पहले जब भवबान् ने मुझे संघार के प्रत्येक प्राणी मे तुम्हें देखने की प्राँकी की । यह तो बताओ तुम नहीं कँते प्राई ?

राजा—तुम्हारे सामने मेरा पाप का बुझ कुछ भी क्षिरा नहीं रहना चाहता । धाबरग-हीन होकर तुम्हारे सामने आने में मुझे शान्ति मिलती है ।

माबब—हमें धारे संघार के सामने धाबरग-हीन होकर रहना चाहिए । तभी हमें सच्ची शान्ति मिलेगी । हाँ कही बसा कहुनी पी ?

राधा—मैं तुम्हें प्यार करती हूँ यह बात मेरे बेबर कमलबाबू जान गए और एक रात जब मैं घाड़ि के सामने लड़ी होकर अपना रूप प्रीर तुम्हारी उत्सीर देख रही थी वे भा गए और मेरे साथ घा बड़े हुए । बोले 'क्या हम दोनों एक साथ बच्चे नहीं लगते । फिर उन्होंने मेरी माँग में सिद्धुर भरकर कहा 'क्या तुम्हारी माँप में सिद्धुर बच्चा नहीं लगता ?

माधव—तुमने कुछबाप सिद्धुर भरवा लिया ।

राधा—हाँ भरवा लिया । मैं बिचबा हुई कब थी ? जब तक तुम हो मैं अपने-आपको बिचबा क्यों समझूँ ?

माधव—फिर क्या हुआ ?

राधा—इसने ही में छान साहिया घा गई और मुझे कर्षकनी कहकर घर से निकल जाने का हुकम सुनाया । कमलबाबू ऐसे भागे कि एक मास तक लौटे ही नहीं । मेरी ब्रतिहिदा ने असत्य को सत्य करना चाहा पर बिपाठा ने बचा लिया । छान ने मेरी घाटमा को छान्ति पाने के लिए कासी भेज दिया । किन्तु बाबा बिस्वनाथ के मन्धिर में भी मुझे छान्ति नहीं मिली । भोप मुझे पापिन समझते हैं मेरी घोर घाबें सटाते हैं । मुझे कुलम बस्तु समझकर हाव भी बकाते हैं । इसलिये घाटम-वेदना ने कहा 'गंगा की घोब में बिषाम करो ।

माधव—राधा ! भयबान् के मन्धिर में छान्ति बबस्तु मिलती है । तुमने घभी तक उसका मन्धिर देखा नहीं बबकी मूर्ति को पहचाना नहीं ।

राधा—तुम रिखा सकते हो !

माधव—बिखाडेना राधा ! तुम्हीने तो घनजान ने मुझे भयबान् का मन्धिर बिखाया है । वह सम्पूर्ण बिस्व भयबान् का मन्धिर है । प्रत्येक घाणी भयबान् की मूर्ति है । घनकी सेवा करने जें ही सच्ची घान्ति मिलती है राधा ! मैं जब से सेवा-मन्धिर का साधक बना हूँ मेरे घोसेवन के रूपके क्षिल-मिम्न ही गए हैं मेरी घीमार्यें बड़ गई हैं । भानों में महाप्राण में मिळ गया हूँ ।

राधा—माधव मुझे भी अपने करणों में स्थान बोदे ?

माधव—अपने करणों में । मैं तुमसे दूर वा ही कब । बिंस तरह मने तुम्हें जोना तुम मुझे बाबती । बासना के बाबलों के पार पदि तुम म्दीकतीं छीं

त के प्रारम्भ होने से लगभग २३ वर्ष पूर्व का काल । बम्बल-
 लड का एक प्राण । बिबबा नदी-तट की एक जिला पर बनी हुई वा रही है ।
 समय रात का प्रारम्भ बिबबा की बग १९ १७ वर्ष के लगभग है । उष्णत
 नीर बर्त शरीर सुमठित लम्बा, शर्मल शार्कबक स्वयं । धीरों में शार्कपेल,
 मात्रकता के साथ ठेक । वेद्य सुर्षिपूर्त्त होते हुए भी स्वभाव के प्रकृत्युपन का
 श्यक्त करने जाता । सिर से उत्तरीय का पस्तु बिलककर धूमि पर निर क्या
 है । उत्तरीय के अतिरिक्त एक कुबट्टा बस धीर कम्बे के शर्म-पाद्य शम्भेधित
 है । मने में पुष्क-द्वार है । लम्बे बात बानु में ल्युरा रहे हैं ।]

बिबबा—(धान)

ओ निकट इतना, बही है
 हाम कितनी दूर ?

बस मयन में बूँदली
 बहु शवि बिबा नुम्बो नुमाता ।
 बस बढ़ाती हाव, तब
 कुछ भी नहीं है हाव जता ॥

धूल में मिलते शबलन
 स्वयं होकर दूर ।
 ओ निकट इतना बही है
 हाम, कितनी दूर ?

ओ लज्ज बस मयन-तारा
 लीबनी में है नमापा ।
 बहु मयन का शवि होकर
 दूर से ही मुतकुराया ॥

इतलिय बमता नहीं है
 धातुधों का पुर।
 जो निष्क इतना, बही है
 हाय, कितनी दूर ?

पालने में बवाल के, हर
 बम किते झुला झुलाया।
 क्यों न उसमें प्रेम मेरा
 आज तक बहुचाल पाया ॥

दिल उसी को प्यार
 करने के लिए मजबूर।
 जो निष्क इतना, बही है
 हाय कितनी दूर ?

[बिजया पील गाँव में तस्लीम है। भीपाल आकर उसकी नजर बचाकर
 उसके पास खड़ा रहता है। भीपाल एक बलिष्ठ और सुन्दर नवयुवक है।
 बलका बेश योद्धा का है। कमर में तलवार, हाथ में धनुष कन्धे पर पीछे की
 ओर तरकश। वय लगभग २५ वर्ष।]

भीपाल—बिजया ।

बिजया—(पाना बन्द करके खड़ी होकर, उत्तरीय का परता सिर पर
 डालती हुई) तुम बड़े अशिष्ट हो भीपाल !

भीपाल—ऐसे क्रोध कष्ट से ऐसे कठोर शब्द घोभा नहीं बैठे बिजया ।

बिजया—तुम अपनी सीमा के बाहर जाते हो ।

भीपाल—मैंने तुम्हारा अपमान किया है क्या बिजया ?

बिजया—अपमान तो नहीं किया ।

भीपाल—तब ?

बिजया—यहाँ एकान्त में मुझे अस्त-व्यस्त मेघ में डेर तक चुपचाप खड़े
 देखते रहना ।

भीपाल—मैं तुम्हें जीवन भर देखना चाहता हूँ बिजया ।

बिजया—(किंचित् लज्जा-मिश्रित स्नेह से) किस अधिकार से ?

श्रीपाल—बिस अधिकार से जीव तुम्हें इस समय बंध रहा है ।

बिजया—दूर रहकर आकाश से ?

श्रीपाल—हाँ तुम मेरे जीवन की प्रेरणा हो स्फूर्ति हो । तुम्हारी स्मृति मेरे रक्त को पति देती है । तुम्हें पाने की इच्छा करना मेरे जीवन का जीवन है—लेकिन तुम्हें पा मेना मेरे जीवन की मृत्यु है ।

बिजया—उभर बैठते हो श्रीपाल ! कहीं बर्बा हुई है इसलिए जन्मल से बस बड़ गया है । बार के बोनो घोर बटारों हैं । बस को बँसने को स्वाभ नहीं मिस रहा । बड़ कितना जोर कर रहा है घोर कितने बेप से घाने बड़ रहा है ।

श्रीपाल—इसारे-तुम्हारे बीच इनसे भी कड़ी घोर बड़ी बटारों हैं बिजया ।

बिजया—कौन-सी बटारों ?

श्रीपाल—एक है तुम्हारा नाई जयदेव ! उसे अपने कुल का पबिवाभ है । मैं एक साधारण किसान का पुत्र हूँ और तुम बार के सुप्रसिद्ध माधव बाठि के पत्र-कुस की कन्या हो । पृष्ठी पर पैर रखकर बसने नामा प्राणी आकाश की तारिका की घोर कँठे हाव बड़ा सकता है ?

बिजया—यदि वह तारिका आकाश से उतरकर तुम्हारी पों में आ पिरे तो ?

श्रीपाल—मैं उसे स्वीकार नहीं करूँगा ।

बिजया—क्यों ?

श्रीपाल—मैं कृपा का शान नहीं चाहता ।

बिजया—तो बोरी करना चाहते हो शका शानता चाहते हो । शका शानता तो कामरठा नहीं है ?

श्रीपाल—मैं इतना छोटा नहीं बनना चाहता कि मुझे घपनी ही बीज की बोरी करनी पड़े ।

बिजया—तब तुम क्या चाहते हो ?

श्रीपाल—बबसा ।

बिजया—किससे ?

धीपाल—बपरेब से !

बिजया—क्यों तो इसीलिए तुमने हम छोड़कर घरन पकड़े हैं ?

धीपाल—यही हम पकड़ना जानता है वह घरन पकड़ना भी जान सकता है ।

बिजया—किंतु उधका उधिन प्रयोग करना भी जान पाए ठब न ?

धीपाल—मानकता का ठरस्कार करने वालों—सृष्टि के चिरलत भाव प्रेम का अपमान करने वालों के विरुद्ध भरा घरन होता । जाना है बिजया ! तुम मेरे जीवन की स्फूर्ति हो—मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ ।

[धीपाल प्रणाम करता है]

बिजया—तुम जा तो रहे हो धीपाल कि नु मुझे भय है तुम मागे भूष बाघोसे ।

धीपाल—तुम्हाप प्रेम मेरा माम-बघक है ।

[धीपाल का प्रस्वभ]

बिजया—(धीपाल की घोर देखती हुई) विभिन्न मुबक ! धाकांला के माधैम को न सीनास सकने के कारण न जान किम विस्फोट की घोर जा रखा है ?

[बिजया कुछ क्षण स्तब्ध-सी खड़ी लगी घोर देखती रहती है, जिस घोर अभिप्राय भया है । फिर एक लम्बी साँस लेकर प्रिता पर बह जाती है । कुछ क्षण विचार-जाल रहकर बही पीत गाने लगती है । पीत प्राचा ही ही पाता है कि इसका माई बपरेब प्रवेध करता है । बपरेब भी गोरबल बलिष्ठ घरीर, बड़ी घांनें और रीबदार बेहरे बाला बबघबक है । तनिक बेध-भुषा बपकों एवं बाल-बाल से बसके भद्र घीर तुमभ्यल होने का प्रामात मिलता है ।]

बपरेब—(बिजया के कान पर हाथ रखकर) बिजया !

बिजया—(बौकलर) धोह भया !

बपरेब—बौक क्यों उठी बहन ?

बिजया—मैं डर गई थी ।

बपरेब—भालब कन्या होकर डर का नाम लेती है, बिजया !

बिजया—मैं घरन की घार से नहीं डरती, मिह के तीबल गलीं से नहीं

करती । मैं मनुष्य के सारीरिक बल से नहीं करती । हिंसा से मैं बड़ सकती हूँ ।

अपरेब—फिर करती किससे हो बड़ किससे नहीं सकती ?

बिजया—मनुष्य के प्रेम से । (स्निग्ध पदपत्र बिजया स्वर में) भैया ।

अपरेब—(बिजया के मस्तक पर हाथ रखते हुए) क्या बात है बिजया ?

बिजया—मैं अपने हृदय पर बिजब नहीं पा सकी हूँ । प्राणों में घातों पहर ज्वाला जलती है । तुम्हारी बंध-धौरव की बीमारों मुझे बन्धी बनाकर नहीं रख सकेंगी ।

अपरेब—बिजया ।

बिजया—हाँ भैया मैं बिजोहूँ करूँगी ।

अपरेब—किससे ?

बिजया—तुम्हारे धर्मिणत से । मेरे भाई मालव-मुक्त भूपस्य अपरेब से ।

अपरेब—तुम मुझसे कुछ करोगी ?

बिजया—हाँ ।

अपरेब—कौन सकोगी ?

बिजया—मबस्य ।

अपरेब—कैसे ?

बिजया—अपनी बलि देकर । इस शरीर को—जिसमें ऐसा मातन रक्त प्रवाहित है जो मुझे प्रेम के स्वाधीन-प्रवेश में जाने से रोकता है—बम्बल के उद्दाम प्रकाश में प्रवाहित करके ।

अपरेब—बहुत तुम्हें हो क्या पया है ?

बिजया—तुम ठो सब जानते हो भैया ।

अपरेब—यहाँ भीपाल घाया बा ?

बिजया—हाँ ।

अपरेब—तभी तुम इतनी बंधल हो उठी हो । बिजया तुम्हें एक काम करना पड़ेगा ।

बिजया—क्या ?

अपरेब—मालव भूमि को भीपाल का मस्तक बाहिर ।

विजया—मालव भूमि को या तुम्हें ?

अपरेव—तुम्हें नहीं मालव भूमि को ।

विजया—लेकिन उसे तो तुमसे अनुता है मालव भूमि से नहीं ।

अपरेव—यह मेरे अपराम का दण्ड मालव भूमि को देना चाहता है ।

विजया—मालव भूमि को या मालव-बण को ?

अपरेव—यह विदेशी शासन हमारे देश पर होना ठक क्या कोई बात पुरानीता से बच सकेगी ?

विजया—विदेशी शासन मालव-भूमि पर ।

अपरेव—हाँ बिन सकोँ मैं सिंध और सीराह पर अधिकार कर लिया है, उन्हें भीपाल ने मालवा पर आक्रमण करने को आमंत्रित किया है ।

विजया—तुम लोगों का बंधाभिमान अपने ही देश में देश के अनु उत्पन्न कर रहा है । तुमने भीपाल का अपमान किया है और निराशा उसे अनु के पास खींच ले गई है ।

अपरेव—बिना बातों ने सदा भारत का संव-रक्षक बनकर आठठामियों को देश में घाने से रोका है बिनाने विक्रम महुानु की निस्सविजयी युवागी सेना को हजारों प्राणों की बाजी लगाकर वापस सौट जाने की बाध्य किया उसे क्यों न अपने ऊपर बर्ब हो ? उसे अपनी संनिकृता एवं बल-विक्रम पर अविमान क्यों न हो ?

विजया—किन्तु जो बातें संनिक नहीं है, क्या वह अनुभ्य ही नहीं है ? कार्य-विमानन नीच-ऊँच की सीबारें क्यों खड़ी करे ?

अपरेव—यह इन बातों पर विचार करने का समय नहीं है ।

विजया—देश के पास इन बातों पर विचार करने का समय नहीं है तो एक के बार हुए भीपाल इस देश में अम्म सेवा । तुम एक भीपाल का मस्तक लेकर देश की रक्षा नहीं कर सकोगे ।

अपरेव—तू भीपाल और देश दो में से कितने चुनेगी !

विजया—तुम देश और मानवता दोनों में से कितने चुनेगे ?

अपरेव—पुरानीता मानवता का सबसे बड़ा पतन है ।

बिजया—घीर प्रेम ?

अपदेव—जो प्रेम देख की हल्का करे उसका पना चोटना ही होना । जीपाल
मासवा क मागो नही-परबतों से परिचित है । शक-धना संख्या में हमसे अधिक
है । उसके पास अपार अवारोहिसू-बल है अस्त्र-अस्त्र भी अपरिचित है । यदि
जम्हें इस देख की भूमि से परिचित व्यक्ति मिल जाए तो परिग्राम हमारे लिए
पर्यकर है । सोचो बिजया छत समय हमारे देख का क्या होना ?

बिजया—तुम मेरी हत्या कर दो मिया !

अपदेव—बिजया कर्तव्य घीर प्रेम के डंड में जो कर्तव्य की बिजबी बना
सकता है वही सच्चा मागन है । तुम देख के महत्त्व को समझो । तुम्हारे पिता
तुम्हारे बाबा घीर तुम्हाठी ग जाने कितनी पीड़ियों ने इस भूमि की रक्षा में
अपना रक्त सींचा है बहुत । कितनी बहनों ने अपने पादों को रणभूमि में
बिसर्जित किया है—कितनी सुन्दरियों ने मौकम के प्रयात-काल में शतियों को
स्वर्ग का मार्ग दिखाया है । यह एक बिजया या एक सीपास का प्रश्न नहीं है—
यह देख का प्रश्न है । सोच बहुत तू क्या कहती है ?

[बिजया चुप रहती है]

अपदेव—तू सोचना चाहती है, तो सोच ! तू मागन-क्या है बिजया !
अभी घाता है !

[अपदेव का अस्वान । बिजया हतबुद्धि-सी लड़ी रहती है । फिर कई
गीत मुनमुनाने लगती है । जीपाल प्रवेष्ट करता है ।]

जीपाल—बिजया !

बिजया—मच्छर हुआ तुम का मछ, नहीं तो मुझे तुम्हारे नाक बागा पड़ता ।

जीपाल—हाँ मैं का गया हूँ । मैंने अपना निश्चय बदल दिया है । मैं तुम्हें
अपने साथ में आना चाहता हूँ ।

बिजया—लेकिन जीपाल मैंने भी अपना निश्चय बदल दिया है ।

जीपाल—क्या ?

बिजया—मुझे तुम्हाठ मोह छोड़ना होना ।

जीपाल—पहले तुम मेरे पास क्यों आना चाहती थीं ।

बिजया—वह केवल बचपन था। बचपन जबानी से क्या प्यारा है। प्रायः मैं बड़ा बचपन करना चाहती हूँ—तुम इसे पात्रपत्र कहोगे—लेकिन प्रायः मैं तुम्हारे साथ जीवन का अन्तिम खेल खेलूंगी। बचपन में हम साथ खेलते हैं—बोली प्रायः भी सेसोगे।

श्रीपाल—घबराव बिजया !

बिजया—तो माफो तुम्हारे बलिष्ठ हाथों को मैं अपने उत्तरीय से बाँध दूँ।

श्रीपाल—क्यों ?

बिजया—यह भी एक खेल है। घाँस-गिन्नी में घाँसें बन्ध करते हैं—लेकिन यह नए प्रकार का खेल है इसमें हाथ बाँधने पड़ते हैं। माफो हाथ बड़ाओ।

[श्रीपाल हाथ बड़ाता है बिजया उसके हाथ अपने उत्तरीय से खूब कस कर बाँध देती है। हुसरी घोर से जयदेव का प्रवेश।]

श्रीपाल—(जयदेव को बिना देखे ही) प्रणाम।

बिजया—मागे का खेल मेरे भीया खेलेंगे।

[बिजया जयदेव की घोर जँगी उठाती है]

श्रीपाल—बिजया तुम ऐसा खस कर सफ़ती हो इसकी मुझे कल्पना भी नहीं थी।

बिजया—मुझे इस बात का प्रमिमाण है कि मैंने अपने प्रियतम को ईश्वर-श्रेष्ठ से बना लिया।

जयदेव—(श्रीपाल से) तुम मेरे अपराध का दण्ड मातृसूत्रि को देना चाहते हो।

बिजया—घोर बेश मे तुम्हारे अपराध का दण्ड मुझे देने का निश्चय किया है।

श्रीपाल—जयदेव तुम वीर हो। साहस घोर पुरुषार्थ के लिए प्रसिद्ध मालव भाँति के वीर हो तुम जस-द्वारा मुझे बन्धन में बाँधना पसन्द करते हो ?

जयदेव—इस समय बेश के सम्मुख जीवन-मरण का प्रश्न है श्रीपाल ! उदारता के लिए घबकाव नहीं है।

बिजया—(बीपाल है) प्रियतम मैं अपने अग्रज के लिए धमा चाहती हूँ। (मने से पुष्प-द्वार उतारकर बीपाल को बहनाकर) यह मेरे प्रेम का अन्तिम प्रमाण है। धाक हमारा स्वयम्बर है। धाम मालव-जाति की परम्परा के प्रति कुल एक भील कृपक-कुमार को मैं बरमाणा पहचाती हूँ। मैं तुम्हारी हूँ—
तुम्हारी रूखी—तुम्हारे साथ रूखी।

बीपाल—मेरे हाथ बंधे हुए हैं, बिजया। मैं तुम्हें कुछ प्रतिदान नहीं दे सकता।

बिजया—प्रेम प्रतिदान नहीं चाहता। तुम्हारे चरलों की रथ मुझे मिल सकती है। मेरे लिए यही अमूल्य निधि है।

[बिजया बीपाल के चरल छूती है]

[अन्त]

घर या होटल ?

पात्र-सूची

सुरेन्द्र

एक बनी मुषक ।

कसा

सुरेन्द्र की पत्नी ।

कुमुद

सुरेन्द्र की प्रेयसी ।

परिवाराध्य

कसा का प्रेमी ।

बिजबा—(बीपाल से) शिबतम मैं अपने धपराव के लिए जमा चाहती हूँ । (यसो से पुष्प-हार उतारकर बीपाल को पहनाकर) यह मेरे प्रेम का प्रथिम प्रमाण है । आज हमारा स्वयम्बर है । आज मालव-जाति की परम्परा के प्रति कुल एक पील कुपक-कुमार को मैं बरमाता पहुँचाती हूँ । मैं तुम्हारी हूँ—
तुम्हारी रूईमी—तुम्हारे साथ रूईमी ।

बीपाल—मेरे हाव बँधे हुए हैं, बिजबा ! मैं तुम्हें कुछ प्रतिपाद नहीं दे सकता ।

बिजबा—प्रेम प्रतिपाल नहीं चाहता । तुम्हारे चरणों की रज मुझे मिल सकती है मेरे लिए यही धर्म्य निधि है ।

[बिजबा बीपाल के चरण छूती है]

[अन्त]

घर या होटल ?

पात्र-सूची

सुरेन्द्र

एक बनी युवक ।

कला

सुरेन्द्र की पत्नी ।

कुमुद

सुरेन्द्र की प्रेयसी ।

अश्विनात्म

कला का प्रेमी ।

पहला दृश्य

[समय—रात के १२ बजे गुरेन्द्र अपने कमरे के द्वार बन्द किए कुर्ती बर धकेला बैठा है। उसके कमरे में एक कोठे में एक वर्जन बिछा है बीच में एक डेबिस के चारों घोर कुछ कुत्तियाँ रची हैं। डेबिस पर कुछ पुस्तकें अस्त-व्यस्त पड़ी हैं। एक झालमारी है जिसका दरवाजा खुला हुआ है जिसमें धनेक बीजों में एक चाराब की बोतल, एक छोटे की बोतल और सीधे का मिनास गजर आता है। गुरेन्द्र छठकर झालमारी खोलकर चाराब और छोटे की बोतल तथा धीरे का मिनास लाकर डेबिस पर रखता है तथा हातकर पीता है। फिर एक कोठे में चड़े हुए हारमीनिथन को उठा लाता है और खाता है।]

गुरेन्द्र—

पी ले पी ले

धक-धककर मधु पी ले ।

उपवन में कलियाँ मुलकाती,

धलियाँ को हैं पात बुलाती

मद से मरे पात्र दिखलाती

लाल मुलाही पीते पीते ।

पी ले पी ले,

धक-धककर मधु पी ले ।

जग में दाल-दाल कुञ्ज विरामे,

पी तू मिरब नए मधु-धाले,

मीनल का धामन्द उठा ले

बी ले मलबाला डन बी ले

पी ले, पी ले

धक-धककर मधु पी ले ।

[बाहर से बरबाबा अटबटाने को आवाज आती है । सुरेन्द्र उठता है और बरबाबा आंखता है । बरबाबा के खुलते ही एक १९ १७ बर की सुन्दर लड़की कमरे में प्रवेश करती है ।]

सुरेन्द्र—तुम कुमुद ।

[हाथ पकड़कर अपने पात एक कुर्सी पर बैठता है]

सुरेन्द्र—(व्याला कुमुद की ओर बढ़ाकर) तो तुम भी पिया ।

कुमुद—क्या मिन पाव तक पी है जो आज पिईकी । मैं तो तुमसे भी कहती हूँ—यह मूँह आपने गोप्य नहीं है ।

सुरेन्द्र—लेकिन जो मूँह सजाने गोप्य है वे तो कमो हमसे धीरे भी नहीं मिलाते—फिर इन क्या करें । तुम्हारे इस सुरेन्द्र को इसीलिए यह साल परी प्यारी है । प्राणी में पहुँचकर जिह समय वह गावती है—इन्द्र की धम्मराएँ मेरी धीरों के धावे ली-ठी धर्मचल देती हुई नजर आती हूँ ।

कुमुद—सुरेन्द्र तुम्हें अपने जीवन का मोल समझना चाहिए । उसे पारव के समय में गर्क कर देने का तुम्हें अधिकार नहीं है ।

सुरेन्द्र—मोह, तुम क्यूँ धिक्का देने पाई हो देखि । इस समय रात्रि के बाह्य बने हैं । इस समय मनुष्य की मनुष्यता सो रखी है—मच्छुता बाव रखी है । बिना देना हो तो बाह्य मुहूर्त में धाना ।

कुमुद—मैं धाव तुमसे बहुत गम्भीर बर्षा करते पाई हूँ ।

सुरेन्द्र—गम्भीर बर्षा ! मुझसे । कैसी दुरासा है ! इसके लिए मैं पैदा ही नहीं हुआ कुमुद । दिन के प्रकाश में—मनुष्यों की उदम-कृद बेचकर कुछ दिन रहना भी मेठा है—लेकिन रात्रि को जब यह वेन-तमाणा बन्द हो जाता है—मुझे प्रकृति की निस्तम्बता बावत करने लगती है । इसीलिए मुझे इस ज्ञान पानी की ओर तुम्हारे-बिना एक साकी की बकरत है कुमुद ।

[अपनी धँगुलियों से कुमुद की जोड़ी धरा ऊँची करता है]

कुमुद—लेकिन सुरेन्द्र संसार से भागने में धावनी सफल नहीं हो सकता । यह स्वाभाविक जीवन नहीं है ।

सुरेन्द्र—स्वाभाविक जीवन तो है मृत्यु, कुमुद । मेरी धमक में नहीं घाता

कि यह कर्म का फल क्यों फैलाना गया है। डेर-के-डे़र मनुष्य पैदा कर दिए गए हैं—धीरे उनके मस्तिष्कों को ऐसे संसार के कारखाने बना जाता है कि वे इस सृष्टि के भीतर अपनी सृष्टिवादी करते रहते हैं। विधाता ने जो फल उन्हें दिया है—वे उससे सम्पुष्ट नहीं हैं।

कुमुद—तुम धड़क पीकर बार्डनिक बन जाते हो सुरेन्द्र !

सुरेन्द्र—हाँ कुमुद ऐसा बात पड़ता है—बैचे मेरी अपनी शक्ति मर चुकी है। इस संसार में एक कदम चलने के लिए भी मुझे सहारा चाहिए। मुझमें अपने जीवन का बोझ नहीं सँभाला जाता।

कुमुद—ऐसा क्यों है ? तुम्हारे नाम मृतक है—तुम्हारे पास ज्ञान है। कर्म करने की शक्ति है। तुम तो दुखी का भी बोझ उठा सकते हो—ऐसा क्यों करते हो कि तुम्हीं अपना ही बोझ भारी पड़ रहा है।

सुरेन्द्र—मैं अपनी धमिलानापाओं का स्वामी नहीं हूँ। इनारे परिवार की प्रतिष्ठा और मर्जीवाएँ जैसे मुझे खेप सवार से काटकर धरम किए रहती हैं।

कुमुद—तुम अपना संसार स्वयं नहीं बना सकते क्या ? तुम पुरुष हो तुमसे पुरातन के सम्बन्ध पर तुमका का महत्त्व बनाने की शक्ति होनी चाहिए।

सुरेन्द्र—नहीं रामी ! मैं जग की बीव में पसा हूँ। मेरे मर्जी सुख के बारे साधन बिना मर किए जाते हैं। मुझमें संघर्ष करने का साहस नहीं है।

कुमुद—किन्तु सुरेन्द्र मुझे तुम पर अपने जीवन का बोझ डालना आनन्दक हो गया है।

सुरेन्द्र—ऐसा बोझ तो मैं बहुत उठा सकता हूँ।

[हँसता है]

कुमुद—हँसो मत सुरेन्द्र ! मैं इसी घर में तुम्हारे साथ रहना चाहती हूँ।

सुरेन्द्र—क्यों ? तुम्हारा मकान छोटा है ? छोटा हो तो मैं दूधिया बिलवा सकता हूँ। उसका किचनाना देने की शक्ति मुझमें है।

कुमुद—मैं बड़े-बड़े मकान में भी माँ-बाप के साथ नहीं रह सकती।

सुरेन्द्र—क्यों ?

कुमुद—इसलिए कि स्त्री को विवाह के पहले माँ बनने का अधिकार

नहीं है।

सुरेन्द्र—कौन कहता है

कुमुद—माँ-बाप कहते हैं।

सुरेन्द्र—उन्होंने पहले क्यों नहीं कहा ?

कुमुद—उन्हें बन की आवश्यकता थी।

सुरेन्द्र—घर ?

कुमुद—समाज का घर है।

सुरेन्द्र—तब फिर ?

कुमुद—मुझे इस घर में स्थान देना हीमा।

सुरेन्द्र—सेकिन मैं यहाँ अध्ययन करने आया हूँ। घर बनाने नहीं। मुझे माँ-बाप से पूछना होगा।

कुमुद—पहले क्यों नहीं पूछा ?

सुरेन्द्र—तुम्हारे सौन्दर्य ने नहीं पूछने दिया।

[कुमुद उठकर जाने लगती है]

सुरेन्द्र—(हाथ पकड़कर) बंदो नी। तुम नाराज हो गईं कुमुद। मुझे थोड़ा सोचने का री।

कुमुद—मैंने अपना निश्चय कर लिया है—तुम्हें कुछ भी सोचने की आवश्यकता नहीं।

सुरेन्द्र—क्या निश्चय किया ?

कुमुद—यही कि तुम मेरे हो। मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकती।

सुरेन्द्र—सेकिन

कुमुद—इस मठ में तुम्हें तुम्हारे बंध की मर्यादा के नीचे नहीं उतारूँगी। मैं जाती हूँ।

सुरेन्द्र—मुझे छोड़कर ?

कुमुद—(दरवाजे के पास पहुँचकर) नहीं तुम्हें अपने साथ लेकर।

[दरवाजे के बाहर जाती जाती है]

सुरेन्द्र—सुनो कुमुद ! सुनो कुमुद !

[कुमुद के पीछे दरवाजे के बाहर जाता है]

[पद-परिवर्तन]

दूसरा दृश्य

[स्वल्प—सुरेन्द्र के बँगल के सामने का बगीचा । समय—रात्रि के ६ बजे । सुरेन्द्र एक पत्ते पेड़ की छाया में कुपथाप बैठा है । सामने से माती आता है ।]

माती—बाबू जी ।

सुरेन्द्र—कहो भोला ।

भोला—दादू अबिक हो बसी है ! बर नहीं आइया ।

सुरेन्द्र—बर ! इतना बड़ा बर ! मेरे लिए बहुत बड़ा है भोला । दिल्ली से बपी मैं मेरी सारी दुनिया बरस गई । माँ की प्यार भरी बौर प्रीर पिताजी का आशीर्वाद भरा हाथ सब-कुछ मुझसे छिन गया । भोला मुझे यह बर फाटने को बौड़ता है ।

भोला—मासिक । माँ-बाप किसको माव नहीं फाटे ! लेकिन वो फाटा है यह बाटा है । समय के मतहम से सबके पाव धण्डे हो जाते हैं । मैं तो घापका बीषार बीकर हूँ—घापको सील देता मुझे नहीं बुझाता—लेकिन मासिक घाप जब (हाथों से बताने हुए) इतने से ये तक से मैं घापकी टहक कर रहा हूँ । इसलिए कृष्ण कहने की इच्छा हो ही जाती है ।

सुरेन्द्र—कहो न क्या कहना चाहते हो ?

भोला—उबर देलिये, यह पीचा मुरम्य बना है ।

सुरेन्द्र—किसलिए ?

भोला—दो बिल से बने जसे पानी नहीं बिया इसलिए !

सुरेन्द्र—तो तुम्हें पानी देना चाहिए ?

नीला—वह तो मैं दूँगा ही लेकिन मासिक घापकी जर्मीदारी का पीपा भी देख-देख माँबठा है। पुरताघों की यह क्यमाई

सुरेन्द्र—समाप्त ही जाए तो अच्छा है भोला।

नीला—क्यों मासिक ?

सुरेन्द्र—इसने मेरे हृदय को पानी नहीं देना दिया ? इसने मेरे हृदय के सुमन को सुखा दिया है। आज मेरे जीवन का पीपा मुरझा जाता है, भोला ! मैं अपनी ही खबर नहीं रख सकता कारोबार को क्या देखूँ ! मेरे बपीचे का मामी मुझे नहीं देखता।

[सुरेन्द्र की पत्नी कलावती का प्रवेश। उसके साथ एक पुस्तक है]

सुरेन्द्र—कला !

कला—जी ! (साथ के पुस्तक से) घाप जमें। मैं घाटी हूँ। (पुस्तक खला घाटा है। कला सुरेन्द्र के पास घाती है। मामी वहाँ से हट जाता है।)

कला—कहिए क्या हुआ है।

सुरेन्द्र—मैं पूछता था इस समय कहाँ जाना हो रहा है ?

कला—कुछ नहीं बरा रीबल होटल तक जा रही हूँ।

सुरेन्द्र—क्यों ?

कला—ये परिनास बाबू मेरे क्लास-फेलो हैं। आज कई बरों बाद इनके मिलना हुआ है तो क्या हो पड़ी इनसे बात भी न करूँ ?

सुरेन्द्र—अच्छा अब तक घाना होमा ?

कला—घर के बाहर-साड़े बाहर भी जा सकते हैं—शायद इनके साथ दूसरे जो मैं सिनेमा जसी जाऊँ।

सुरेन्द्र—लेकिन—

कला—लेकिन क्या ? एक रुप से पूरा घर के बाहर अकेला झुमता रहा है। नारी ने कभी नहीं पूछा—कहाँ जा रहे हो—कब आओगे—बाहर क्या काम है ? घापको मेरा विश्वास

सुरेन्द्र—आज की नारी पर-पर विश्वास की बात क्यों कहते लगी ? ?]

कता ! नारी को रोकने का पुत्र को अधिकार नहीं है वही तो तुम कहती हो ! वही तो धातु की सिखा ने तुम्हें सिखाया है ।

कता—तो नए पुत्र का प्रकाश धातुको बुरा लगता है । धातुने बड़ी पुत्र को जो मुक्त-बैसी स्वच्छन्द प्रकृति की स्त्री को धातुने घर की बहारहीनारी में बन्द करने का मत्त किया ।

सुरेन्द्र—तुम बाधो कता ! मैंने कभी तुम्हें रोकने का प्रयत्न नहीं किया जिस व्यक्ति का धातुने ऊपर ही अधिकार नहीं है—जैसे दूसरे पर धातुन कर का किये हो सकता है । इस भरे-पूरे संसार में केवल तुनापन मेरा है और इ संसार का केवल यह सुरेन्द्र तुम्हारा नहीं है—सब सब-कुछ तुम्हारा है, तुम्हारे स्नेह का अधिकारी है ! तुम बाधो तुम्हें रोक ही होती होनी ।

कता—किन्तु,

सुरेन्द्र—किन्तु, कुछ नहीं ! तुम मेरे जीवन की सात्त्विका नहीं बन सकती । मेरा जीवन धातु धातुनी स्वामाधिकार बाध से कटकर सुखा या रखा है तो तुम्हें कोई अधिकार नहीं कि तुम्हें भी धातुने साथ सुखा बाम् !

कता—इस पुत्र में इतनी मानुष्यता । इतनी धिया प्राप्त करके भी धातु हृदय के धातुनों पर धातुन करना न सीख सके । बड़े भास्वर्य की बात है !

सुरेन्द्र—सिला—हाँ—इसे हम धिया ही कह सकते हैं—जो बुद्धि धीर मस्तिष्क की स्वतन्त्रता के नाम पर हमारी बासनाओं को प्रज्वलित कर रही है । धातु का पुत्र मानुष्यता का धातु है—जस मानुष्यता का जिसने स्नेह का एक तुनहटा संसार बनाया था जिसने धातुर्ष के प्रति धातु को काम किया था ! इसी धिया ने तुम्हें एक दिन किसिप्त कर दिया था । इसी धिया ने तुम्हें किसिप्त कर दिया है—कता ! बाधो कता तुम धातु से पूर्व स्वतन्त्र हो ।

कता—यह धातु नाश होकर कह रहे हैं ?

सुरेन्द्र—नहीं कुली होकर ! मैंने तोया था—यह कूल को धातु से दूट गया था—तुम्हारे स्नेह से सिंचकर कुछ बड़ियाँ धीर धातु की इँटी इँट लेया ।

किन्तु तुम स्वयं ऐसे धातुध में उड़ रही हो—वहाँ कोई धातु नहीं है । मैं किये तुम्हें धातुना धातुन बना सकता हूँ ।

कला—किन्तु किसी मनुष्य को आहार चाहिए ही क्यों ? सबका स्वतन्त्र व्यक्तित्व है । किसी से स्नेह पाने और किसी को स्नेह देने की साम्प्रदायिकता उसे क्यों होनी चाहिए ?

सुरेश—तुम यही तो कहती हो कला—कि हमें गृहस्त्री भी बरकत नहीं है—वहाँ परिवार का प्रत्येक प्राणी एक दूसरे से अभिन्नेय है । स्नेह और ममता के मूत्र से एक है । तुम चाहती हो भारतीय गृहस्त्री—होटल का रूप धारण करे—वहाँ प्रत्येक कमरे का अधिवासी दूसरे कमरे वाली से कोई सम्बन्ध नहीं रखता । वहाँ प्रत्येक व्यक्ति का कार्य ही जाता है—किन्तु करने वाला व्यापार ममत्कर करता है—उसमें स्नेह की स्मिम्बता नहीं है—व्यापार की नीत्यता है ।

कला—यदि बुद्धि से देखा जाए तो मैं समझती हूँ—ऐसे जीवन में कोई ह्यति नहीं है ।

सुरेश—ठीक है । तो तुम बापो ! देखो यह मुझ तुम्हें लेन इतर ही था रहा है । बापो—इस घर कमी होटल का बरजावा तुम्हारे लिए सदा सुता हुआ है । यदि यह घर होता तो पापक इसके दरवाजे बन्द किए जा सकते ।

[सुरेश भला जाता है और दूसरे घोर से अधिनाश भ्रष्टा है]

अधिनाश—तुमने तो बड़ी बेर सपा की कला ! बली न ।

[हाप पकड़ता है]

कला—(हाप छुड़ाती है) नहीं मिस्टर अधिनाश ! मैं धार नहीं जा सकती । मुझे सपा करो ।

अधिनाश—क्यों—क्या पठिबेव की भाजा नहीं है ?

कला—नहीं यदि वे भाजा देना जानते तो पापक मैं उसका उस्तंभन करना भी सीख जाती ।

अधिनाश—फिर क्यों नहीं जतती ?

कला—प्रत्येक बाठ का उतर नहीं दिया जा सकता अधिनाश ! मैं समझती हूँ ह्याप जीवन बहुत सत्वावाकिक रूप में बह रहा है—हमें उसे रोकना चाहिए ।

सुरेन्द्र—तुम्हें क्या पसन्दा है ?

कुमुद—क्यों नहीं यहाँ मनुष्यों की सेवा करने का व्यवहार मिलता है । ऐसी सेवा जिसमें बासना का आवेग नहीं है । जिसमें चिर-शान्ति है । गारी स्नेह भीर सेवा किए बिना भी नहीं सकती—इसीलिए जब तुमने मेरा भार स्वीकार करते से इन्कार कर दिया तब मैंने मन की शान्ति के लिए यह रास्ता पकड़ा ।

सुरेन्द्र—तुमने मुझे व्यवहार ही नहीं दिया कुमुद ।

कुमुद—मैं तुम्हारे साथ कठोरता करना तो चाहती थी लेकिन जब मुझे ज्ञात हुआ कि तुम विवाहित हो मैंने तुम्हारे गृह-मन्दिर में अपनी अष्ट प्रतिमा को स्थापित करना उचित नहीं समझा ।

सुरेन्द्र—धोह ! तुमने मेरी प्रतीक्षा भी नहीं की । मैं तुम्हें अपने घर की रानी बनाता । मैं तुम्हें मेरे तुम्हारे घर बना तो ज्ञात हुआ तुम न जाने कहाँ चली गई हो ?

कुमुद—हाँ जैसे जाने के सिवा मेरे पास चारा ही क्या था ? मेरी माँ ने कहा—अपना नाम राज के दम्पकार में चुपचाप नहीं मैं प्रवाहित कर दो ।

सुरेन्द्र—तो फिर (उस बैठता है ।)

कुमुद—लेकिन जिसका मैं मेरे मातृत्व को मार नहीं दिया था । मैं यही थी—किन्तु, माँ बनने की अधिकारिणी नहीं थी । तनाव मुझे माँ के रूप में स्वीकार करने को प्रस्तुत नहीं था । जब समाज से विरोध करना चाहती तो उसके लिए एक ही रास्ता था ।

सुरेन्द्र—क्या ?

कुमुद—वही कि मैं बाजार में बैठकर रूप का व्यापार करती । निरसंजता की मोड़नी मोड़कर समाज के कर्मचारों को अपने रूप से बापस करती । किन्तु मुझे यह जीवन पसन्द न था । मैंने तुम्हें अपना घटीर देकर अपनापन किया था किन्तु उस पाप को पुनः बनाने की मुझे शक्ती थी । जिस दिन यह घाघा टूट गई—मुझे अपना जीवन अपरिचय के दम्पकार में जिसाना आवश्यक

हो गया ।

सुरेन्द्र—लेकिन तुम अपने ही घर क्यों नहीं रही । समाज से क्यों बरौं । समाज के सामने मुख्य समस्या को उपस्थित करने में क्यों हिचकी ?

कुमुद—इसलिए कि समाज का आधार गरीब का धर्म-समर्पण और अन्ध ब्रह्म है । जिस दिन मैं सत्य को प्रकाशित करती हूँ तब तुम और तुम्हारा सम्पूर्ण परिवार समाज के ज्ञेय की छाँटी में उड़ जाता या तुम बग क बल से उड़का बेज धड़ भी लेते तब भी परिवार की प्राथमिक धार्मिक सेवा के लिए समान हो ही जाती । जिस कार्य में समाज का प्राचीनत्व नहीं है वह धार्मिक प्रवृत्ति ही नहीं सफ़टा ।

सुरेन्द्र—फिर, समाज का प्रत्येक नियम व्यक्ति को मान्य ही होगा चाहिए क्या ?

कुमुद—नहीं ! समाज की कठोरता मानव की गति को रोकती है । मैं कहती हूँ समाज से मुक्त होकर विद्रोह करने का साहस करो—खिरकर पाप करने की कामना से हम समाज को भीत नहीं सकेंगे ।

सुरेन्द्र—बहु विवेक तुमसे कहाँ पाया ?

कुमुद—यह तो भारतीय गरीब के प्राणों में समा हुआ है । वह नहीं रोसनी की कसबाबों की जिनमें मुझे एक लक्ष के लिए घुलाकर तुम्हारे पशुत्व का सिकार बन जाने दिया ।

सुरेन्द्र—इस पशु से तुम क्या करती हो ?

कुमुद—क्या ! यदि मैं गरीब हूँ—तो जिसे एक बार भूल से भी प्रस्ताव बनाया है—उसे जीवन भर भूलना सम्भव है । तुम्हारा पाप ही मेरे लिए सब से बड़ा बदबान है । तुम्हारी स्नेह-कथा या मृत्यु की खबर से वो ही भीतें हैं जो मुझे घायल है सफ़टी हैं ।

सुरेन्द्र—लेकिन क्या तुम मुझे घायल नहीं है सफ़टी ?

कुमुद—एक दिन मैंने तुमसे घायल भैया का ।

सुरेन्द्र—घीर मैंने इन्कार किया था क्या इसका बदला भोजी ? मुझे फिर उठी रात दिन कतलते रहने वाले जीवन की कठोर योद्ध में फँक देना चाहनी हो ।

कुमुद—मेरा बच होता तो मैं धार्मिक बन तुम्हारी सेवा करती। बामना मे मुझे तुम्हारे पास पहुँचाया। विवेक ने दूर कर दिया। अब क्या फिर बामना के प्यासे पीने होमे ?

सुरेन्द्र—नहीं कुमुद ! समय की धार ने मेरे बामना के पशु की मार डाला है। मैं तो तुम्हें अपने गृह-मन्दिर की देवी बनाकर से बलना चाहता हूँ या तुम्हारे बाम परीची के कण्ड सहकर अपने जीवन को सार्थक करना चाहता हूँ। मुझ से वह कुत्रिम धीर सूखा जीवन नहीं बिताते बनता। धार मेरे पर में मेरा कोई नहीं है। मैं गर्व—भार मए। मेरे माता-पिता ने जिस उष्ण कुन की पिछिता मइकी से मेरा विवाह किया है—वह विवाह को केवल एक व्यापार समझती है। इन व्यापार में मुझे कोई रत नहीं पाता।

कुमुद—मैं अपनी एक बहन का अधिकार कैसे छिन सकता हूँ।

सुरेन्द्र—उष्ण मुझ पर उरा यी मोह नहीं है कुमुद ! इस विस्तृत संसार में उड़ने के लिए बड़े बहुत जनह है। उसे केवल बन चाहिए वह मैं उसे दे सकता हूँ—इससे अधिक वह दुख नहीं चाहती।

कुमुद—सौंकिन जब उबानी का वेब कम होमा—तब उसे किसी चीज की बकरत पड़ेयी सुरेन्द्र बाबू। उस समय उसे धार नहीं मिले तो दुख होना। उसे धाकाय में स्वच्छन्द उड़ने वाली तितली न बनने दो। पुरुष की कमी-कमी नारी पर शासन करना आवश्यक है। इसी तरह नारी को पुरुष पर अधिकार स्थापित करना ही। धार जो पुरुष नारी-स्वायत्त की धारान उठा रहे हैं वह केवल इसलिए कि दूसर की नारियों के दिलने में उन्हें मुक्ति हो। यह उनकी मनुष्यता की नहीं पशुता की भावान है। तुम पुरुष बनो और दुष्ट की कठीरता पहल करो।

सुरेन्द्र—किन्तु, वह मेरी नहीं है। वह किसी और को

कुमुद—तुम अपने स्नेह से उसके पाप को धो दो। उसका इतिहास भूल जाओ। अपना इतिहास भी भूल जाओ। मनुष्य से भूलें होती हैं—उसे ऊपर उठने का अधिकार दितना चाहिए।

सुरेन्द्र—इतना बमबान मैं नहीं हूँ। मैं उसकी इनकी स्वाधीनता नहीं चाह

लका—मेरी दुर्बलता मुझे यहाँ खींच साईं—मेरी गिरावट मुझे बाजार के क्या समय में ले जाती । सराब की मात्रा दिन-दिन बढ़ जाती । उस दिन जब मेरी मोटर पेड़ से टकरा गई थी—मैंने बुरी तरह पी रक्खी थी । मेरे पास बीटी हुई 'सरोश' जाती बत्त रही थी—'उड़ रहा पंखी' डिब्बर तू मीड़ तेरा बल रहा है । उस पीत की पहली पक्ति मेरे कलेजे से का टकराई, घीर मोटर भी पेड़ से का निङ्गी घीर उस दुर्बलता ने मुझे यहाँ पहुँचा दिया ।

कुमुद—कभी-कभी बुराई से भी बलाई निकल जाती है ।

सुरेन्द्र—गिरावट ही । यहाँ आकर मेरे हृदय का बाब भी मानो बरने लगा । जब तुम्हें यहाँ से मेरे साथ चलना होना । ताकि छिड़ ऐसी दुर्बलता न हो । मेरी धर्मिय का जम्माव केवल तुम्हारा आसन सह सकता है ।

[कुमुद का हाथ बकड़कर अपनी घीर खींचता है । इतने में कला कानरे में प्रवेश करती है ।]

कला—टीक । दुर्बलताएँ करके इलाक के बहाने अपनी बाबना का आचार धोखता भी धामर दुख की बुद्धि का बमलकार है ।

सुरेन्द्र—कला । तुम भा गई हो । घीर तुमने मेरा सबसे बड़ा पुष्प मरा पाप देव भी मिया है यह बकड़ ही हुया ।

कला—घीर जब इनमें समझीया हो सकता है । मेरी भूलें भी तुम मूल झकटे हो । वो दुर्बल हृदय मिलाकर बलवान बन सकते हैं । टीक दो बर्ष हो गए हैं—मैं रीक ही तुम्हारी राह देखती रही हूँ । मेरे पंख आसमान की आचार हीनता में उड़-उड़कर बक गए हैं—मुझे सहाय चाहिए, स्वादी !

[एक बौब बर्ष का बालक आता है ।]

बालक—माँ ।

सुरेन्द्र—घो बालक, इकर आमो !

[बालक आकर सुरेन्द्र की बोद में का बँटना है ।]

कला—बह कीन है ?

सुरेन्द्र—यह मेरा पुत्र है—घीर यह बर्ष इतकी माँ ।

घर या होटल ?

कला—(कुमुद से) भाब से यह मेरा है। पीर (सुरेन्द्र बाबू की पीर इधारा करके) ये भाब से तुम्हारे। (कुमुद का हाथ अपने हाथ में लेकर) तुम्हें हमारे साथ चलना पड़ेगा। तुम हमारे गृह-मन्दिर की देखी बसकर रहना। यह हमारे घर का बन्दूया होना।

[अलम्ब का मुँह घूमती है]

[अदासेप]

प्रेस अन्धा है

पात्र-सूची

प्रीरंपबेब

मुपत-सभाद् ।

मुराब

प्रीरंपबेब का छोटा भाई ।

बासंती

मुपत की प्रेयसी ।

रोयल

मुपत राजमहल की दासी ।

पहला दृश्य

[स्थान—घोरपञ्च का तंबू । समय—रात के बत बजे । तंबू में कुत-
चिन्तित पर्यक बिछा हुआ है तथा बिलास-सामग्रीयाँ सजी हुई हैं । घोरपञ्च
प्रकृता विचार-मग्न ब्रूम रहा है ।]

घोरपञ्च—दाउर पुत्रा घोर मुराह । मेरी मुराहों के पस्ते के तीन रोड़े ।
बारा का विस टूट गया मुत्रा बहारेत के बतलों में बिम्बरी की बाबिरी
साँसे से रहा है । यह गया मुत्तद । यह बोला है—बहर मेरा पासा सोया पड़ा
तो थाप ही यह काँटा रास्ते के समय हो बाएया ।

[रोशन अराब की मुत्तरी घोर व्यातिपाँ लेकर आती है और परजन के
पास ही रुक बेती है ।]

घोरपञ्च—रोशन ।

रोशन—माजीबाह ।

घोरपञ्च—घाब तुम पर बहुत बड़ी बिम्बेबारी है । नहीं समझी । घाब
तुम्हारे हुल का इम्तहान है । इन बड़ी-बड़ी बाँधों और लम्बे-लम्बे बालों की
लाफ्त देखनी है ।

रोशन—गुस्ताबी भाफ हो तो मैं जाफते पूछ सपटी हूँ कि बड़ी बाँधों
और लम्बे बालों की लाफ्त के घाब कम से कायम हुए । (मुस्कराती है ।)

घोरपञ्च—रोशन घोरपञ्च के पास तुम्हारे सबाब का बबाब देने के
बिना और भी बहुत से काम हैं । हुल की बंजीरें बेकारों को बिरपतार करती
हैं । (लम्बी चीख लेता है ।)

रोशन—बेकिन बिरपतार होते की बाह तो घाबद बड़ापनाह के विस में
भी है ।

घोरपञ्च—घोह । (कराह-सा बड़ता है ।)

रोसन—क्या हुआ सरकार !

धीरेपजेब—जीसे किसी ने एक बूझी हुई चविनी छेड़ ली । दिन में लीर सा जुमा दिया । एक दिन धीरेपजेब भी मचल उठा था—लेकिन उन दिनों की मार करने से फ़ायदा क्या ? मुझे हिन्दुस्तान का बन्धा बदलना है । बरानी की मददसे मस्जिदों का पत्ता धौंटना ही पड़ेगा । रोसन तुम यहाँ उठो । मैं जाती जाता हूँ ।

[धीरेपजेब का प्रस्थान]

रोसन—मैं भाव क्या करने जा रही हूँ । किसलिए करने जा रही हूँ ? वे दिन मुझे अब भी याद आते हैं जब मैं के साथ एक झोंपड़ी में रहती थी । उस समय मेरा नाम प्रकाशवती था । मैं पठीब थी धीर में सुन्दर । बचानक इस बग-कुसुम पर बालची सीरे की लहर पड़ गई । पटीलों की न कोई हल्का होती है न उनका कोई धमिकार होता है । मुझे राक्षसहून में भ्रान्त पड़ा । अब मेरा नाम रोसन है । मुरार प्रारम्भ से ही रैपिती लबीयत का धारमी है उसकी धमिलताया पर मुझे अपना सर्वस्व समर्पित करना पड़ा—लेकिन मनु के दो घूंट पीकर भ्रमर बड़ गया । धीर अब वह तिरस्कृत रूप अपने कर्मक को बरबार से मिलने वाले बेभन के धारण में जिताकर मुसकराने का पल करता है ।

[बादलों का प्रवेश]

बादली—वे यहाँ नहीं हैं ?

रोसन—वे कौन चाहवादा मुरार !

बादली—हाँ वहन वे ही मेरे दिन के राधा । न बाले क्यों मेरा जी उखाट हो रहा है । मैं उन्हें देखना चाहती हूँ ।

रोसन—बीवानी हो बादली तुम । पुस्य की वाचना की धिकार मत बनो किसी के बाहु-पाय की बंदिनी मत बनो बल्कि बसे अपने कप-वास में बाँधो । धिकार को धमकरा करके दूर जाती रहो, उसकी छटपटाते हुए देखो धीर मुसकराया । देखो कि वह तुम्हारे लिए बैचन है । तुम उसके लिए क्यों जैबन होती हो ?

बासती—मैं क्यों बेचैन होती हूँ, यह मैं स्वयं नहीं जानती। मुरार ने मुझ पर अन्याय किया है लेकिन उस अन्याय को उन्होंने अपने धनमय स्नेह से जो दिया है। पाब मेरा मेरे माँ-बाप के पास हिन्दू-समाज में और मनुष्य-समाज में कोई स्थान नहीं है। मेरा एक-मात्र अवलम्ब है मुरार। यह हिन्दू नहीं है तो क्या पशु है तो क्या, वह मेरा है—मैं उसकी हूँ। वह यहाँ नहीं है—बाहें—उन्हे खोजूँ।

[बासती का प्रस्थान]

रोशन—क्या मैं बासती से कम सुन्दर हूँ। फिर मुरार बासती का क्यों है ? क्या नारी का सौन्दर्य एक निर्बीज खिलौना है—उसमें कोई शक्ति नहीं। मुरार तुम कितने बहादुर हो कितने साहसी हो कितने मोसे हो, कितने कालची हो—और कितने अस्थिर हो। पाब तुम से बचना बने का अवसर था पहुँचा है।

[श्रीरंगरेव का प्रवेश]

श्रीरंगरेव—तो पाब का खेल खेलने के लिए तुम तैयार हो ? अगर भीत नहीं तो मालामाल कर लूँगा तुम्हें।

रोशन—मालदार होने से क्या बहुत मुझ गिनवा है साहजान साहब।

श्रीरंगरेव—रोशन मासवार होने में मुझ है मा मुझ इसे समझ पाता मुश्किल है—लेकिन खेलने में यह भाटा है कि माल की स्वाहिष्ठा सभी को है। (घाँसों से इम्ति करता हुआ) इस वक़्त तुम बाधो। मैं अब जाता बाहें—उस धारा।

[रोशन का प्रस्थान दूसरी ओर से मुरार का प्रवेश]

श्रीरंगरेव—मेरे बहादुर भाई ! (मुरार को पले लपेटा है)

मुरार—(बैठते हुए) पाह ! बहुत बक पया हूँ। पाब विकार खेलते-खेलते बहुत दूर जाता पया।

श्रीरंगरेव—यही तो तुम में ऐब है भाई ! तुम बिच काम में लपटे हो उसमें बड़ते ही जले जाते हो—न रिल देखते हो न राठ न धापा न पीछा।

मुरार—मेरे पास वक़्त बहुत थोड़ा है—श्रीरंगरेव ! मैं अपनी टारीफ

नहीं मुनता चाहता । मतलब की बात करो । जब बारा घीर भुजा दोतों की तारवें बरम हो चुकी हैं । जब तुम्हें अपना बारा पूरा करना चाहिए ।

घीरपखेब—घीरपखेब ने कुरान खरीफ की कसम खाकर जो बाबे किए हैं वे सब पूरे होंगे—तुम इस्लामत के बाबेबाह बनोगे घीर घीरपखेब इस्लाम की शिरमत करने वाला कभीर । तुम बक पाए हो—घाब राल वही घाराम करो । मैं रोघन को भेजता हूँ ।

[घीरपखेब का प्रस्ताव]

मुराब—रोघन ! जैसे एक सोया हुआ अपना नाम रहा है । एक नामुम फूल को मीने बाम से ठोककर फेंक दिया । रोघन कमी मुराब की यहूबा भी घाब घीरपखेब की शती है ।

[रोघन का प्रवेध]

रोघन—भारत के भाबी सभाद को रोघन सत्ताम करती है । (कोनिश करती है ।)

मुराब—तुम हो रोघन ?

रोघन—मैं हूँ । घलपोस कि मैं हूँ—भीती बापती । मैं मर नहीं सकी—क्योंकि बिल बिल मे एक बिम्बाबिल घाबमी की बाब बिम्बा है उसकी बड़कमें मैं बन्द नहीं करना चाहती । राघन बिम्बा है—सेकिन प्रकाश मर गई । रोघन बिम्बा है ।

मुराब—सेकिन मुराब भी ता प्रकाश के साथ ही मर गया ।

रोघन—मैं उसे बिम्बा कहेगी ।

मुराब—घीर प्रकाश को भी ।

रोघन—हाँ प्रकाश को भी—जबत तुम बाहरे हो ता । तुम बक पाए हो—रात कापी हो चुकी है । लाइए, मापके बदन से हबिबार लोन हूँ—ताकि घाब घाराम कर सकें । (रोघन मुराब के सब हबिबार बतारकर अलम रख देती है । हाथ पकड़कर मुराब को फलेंच पर छमन करा देती है ।)

मुराब—घाब मानो मुझे नहीं बिम्बायी भिस रही है ।

[रोझन धराब का प्याला भरकर बेती है मुराब बैठकर प्याला नेता है ।]

रोझन—धरर घाप पुनर्बन्ध पर बिश्वास करटे तो मैं कहूँती—घाब नास्तब में घापको नया बन्ध मिल रहा है । धरर घापको घसहा न जान पड़े तो मैं पास बैठकर मार्ड ?

मुराब—(धराब का प्याला पीकर रक देता है और सेट जाता है ।)
बकर ! मैं घाब ऐसी मीद सो सकंगा जसी कमी नहीं घोया ।

रोझन—(बालो है और मुराब के पेर बबाली है ।)

अम की छाया में मन लो जा ।

कटे तैरे लिए बिझाप ।

बिप भरकर प्याले में लाए ।

बे तेरा सिर लेने घाप ।

तु तो बर्क नखे में हो जा ।

अम की छाया में मन लो जा ।

मुराब—क्या कहा ! बिप भरकर प्याले में लाए ।

रोझन—जी मैं मन से कह रही हूँ । यह मन बहुत बचल है । कमी कमी बसे बहर पिनाकर मार बासना पकटा है ।

मुराब—मैं भी मन की तरह बचल हूँ । मुझे मारण के लिए भी पिनायो । सो और सो ।

[रोझन धराब डालकर बेती है ।]

मुराब—(बैठकर धराब पीता है) ऐसा बात पकटा है रोझन कि घाब मेरी बबाली की घाकिरी राठ है । तुम्हारे हुस्न की बबाली ने बहादुर मुराब की नस-नस को बकड़ दिया है । (धराब का प्याला बाली करके रोझन को देता है, रोझन प्याला सुराही के पास रखती है । मुराब फिर सेट जाता है । और रोझन फिर पेर बबाली बबाली है ।)

मुराब—तुमने भीठ घबूरा ही क्यों छोड़ दिया रोझन ! तुम्हारे संवीड में धररब से भी बबाला नया है । जैसे हरिण भीणा की घाम पर, जैसे घोप भीन

की आवाज पर पागल हो जाता है बैठा ही मैं तुम्हारे बीच बर पागल हो रहा हूँ। रोशन, तुम माफी।

रोशन—(घबरी है)

तुम-तुम शोभो मूठे लपके,
 बही न धपके भी हूँ धपके
 डमकत पाती नहीं धपके,
 लकड़त के हरिया बैँकी का।

मम जन की छाया में तो जा।

मुरार—बासंती—नहीं-नहीं रोशन पास पाओ।

रोशन—(मुरार के पास धाकर फिर बसाती है।) धबी फिटका नाम बिया ना भापने। धापके बिक में तो बासंती है। रोशन के लिए नहीं स्वान कही ?

मुरार—तुमने बासंती को तो बेका है न ?

रोशन—क्यों नहीं ?

मुरार—मेरी धींधी से बेका है ?

रोशन—नहीं धपकी धींधी से ?

मुरार—बह कैती है ?

रोशन—मीठ है भी क्यादा सुन्दर !

मुरार—नवा बह मुझे प्यार करती है ?

रोशन—मीठ है भी क्यादा पावेन से। बह इत बुनिया की नहीं पापती की बुनिया की रहने वाली है।

मुरार—(रोशन का हाव अपने हाव में लेता है) रोशन तुम्हारा इत बुताव के फूल से भी क्यादा कोमल है। (मुरार रोशन को हँसती अपने कपाल पर रख लेता है। रोशन धीरे-धीरे डसता कपाल बासती है। कुछ कलों परकत मुरार को नींद धा बसती है। रोशन मुरार को बाहर उड़ा देती है।)

[लहता बासंती का प्रवेश]

रोशन—तुम नहीं फिर भा गई ? एक छत भी मुरार का बियोग नहीं बह

सकती । जीवन बहुत मन्त्रा है और अगर साथी हूँ जाए तब तो यह मन्त्राई
मसह्य हो जाती है । तुम बियोग की ज्वाला सहना सीखो । प्रागे काम प्राणी ।

बासंती—यह जीवन सो रहा है ? मुराब है ? मेरी जंजीरों से छूटकर वह
तुम्हारे पास प्राया । मही मैं तुम दोनों का जूग कर दूंगी ।

[सहसा सिपाहियों के साथ औरंगजेब का प्रवेश]

औरंगजेब—(सिपाहियों से) बेर लो काफिर को ।

[सिपाही मुराब को छोटे हुए घेर लेते हैं । बासंती धौड़कर मुराब से
निपट जाती है । मुराब जाग पड़ता है । अपने-प्रापको सिपाहियों से घिरा
पाकर भौंलका हो जाता है ।)

मुराब—जीन औरंगजेब । रोशन ! औरंगजेब तुमने मुझ पर भी हाथ
साध किया और रोशन तमने भी बबसा लिया ।

बासंती—मेरे जीते जी कोई तुम्हारा नाम बाँका न कर सकेगा मुराब ।

औरंगजेब—तुम्हें इज्जत के साथ आसियर के किले में रखा जाएगा ।
छूटकारे की कोशिस बेकार है । तुम बादशाहत करने के लिए नहीं पैदा हुए ।
जो हुस्न की जंजीरों में कमा हुआ है उसके हाथ में सत्तजत की बागबोर नहीं
ही जा सकती ।

मुराब—बाप तुम सड़ाई के मैदान में होते ।

औरंगजेब—तुम्हारी यह ज्वालिष पूरी न हो सकेगी । बोला, तुम आसियर
के किले में रहते को सेवार हो ?

मुराब—फफखोस मुझे यह मानना ही पड़ेगा ।

औरंगजेब—तुम बाप और बुजा से ज्वाला समझदार हो । तुम्हें जो जीव
उबसे ज्वाला प्यारी हो उसे मी साब ले जा सकते । बोला तुम क्या चाहते हो ?

मुराब—सिर्फ बासंती ।

रोशन—सिर्फ बासंती !!

बासंती—सिर्फ बासंती !! (मुराब के पैरों पर फिर पड़ती है । मुराब
उसे उठा लेता है ।)

मुराब—उठो बासंती ! मेरे भासनाम में सिर्फ एक जीव जमकेगा और

इसे देखते रहने के ठिगान थिकोर के पास कुछ काम न होना ।

घौरंपबेब—तो छिटर म्वासिमर जाने के लिए तैयार रहो । बत्ती ।

[लक का प्रस्थान]

[बह-परिचर्चन]

दूसरा दृश्य

[स्वाम—म्वासिमर के किन्ने में सूर्य-गुच्छ का किनारा । लक—प्रमत्त ।
भारतों न्वासिमर के बहनात् सूर्य की घोर भूह करक जाड़ी है और बाल सुता रही
है । उसके प्रक-प्रम से जीवन और स्फूर्ति का मय भर रहा है ।]

भारतों—(पान)

मैं रवि बनकर दिन में जाती ।

निधि में शशि बनकर मुसकती ।

मिरे केश बटाएँ काली ।

मेरी धाँसें सब की प्वाली ।

मैं धरणी छवि पर मस्तबाली ।

बुनिया को महमस्त बनानी

मैं रवि बनकर दिन में जाती ।

निधि में शशि बनकर मुसकती ।

बुध पर बुनिया प्रथम बहानी,

भरतों पर जीवन रक्त जाती

मैं बसुपा को टैल लिनाली,

लकको भी-कर नाथ मचानी ।

मैं रवि बनकर दिन में जाती ।

निधि में शशि बनकर मुसकती ।

घाह घात्र मुझे अपने जीवन का वह सुयोधय याद आता है जब इसी भाँति मैं अपनी अम्ममूमि मुजरात के एक पाँच में नर्मदा के तट पर महाने के बार बाल मुखा रही थी। पहली बार मुराद मे मुझे यही बेला था। उसने मुझे अपने जीवन का मूर्त समझा और मैंने । क्या बतमाई ! सुनकर तो वह मुझे लब भी जान पड़ा था और घात्र था जान पड़ता है। लेकिन क्या मैं उसे प्यार करने लगी थी वह मैं नहीं जानती। वह मुसलमान है और मैं हिन्दू। दिस मिहने पर भी स्वभाव तो नहीं मिल सकते। फिर था प्राण बेचन ठा हा ही उठे। दिस तो जानि-याँति नहीं मानता। मुयाद भारत-मन्नाद् का पूव था। उसकी निदाह बिस फून पर पड़ गई वह उसके बिलास-मजन में न पहुँचे यह जैसे सम्भव था। मुझे आना पड़ा अम-संस्कार माठा पिठा का स्नह अम्म-मूमि की ममता और मन का बिद्रोह सभी बख्त बहाकर मुझे उसक बागना-कँब में आना ही पड़ा ! १० दिन बाद ही मैं सम्-गने लगी कि प्रेम स्वाय अम संस्कार और धायक अर्थ की बारखाएँ हैं। बासता की अन्त मरते में बहते रहगा जीवन की अरम सार्बकता है। मुयाद बीर है अन्तर है बलिष्ठ है और उचार है वह नीम्ब्य के अरणों पर छिर झुझना जानता है—इससे अधिक मैं क्या पा सकता थी। घात्र मैं मुराद के एकमात्र जीवन की एक-मात्र महबते हूँ और वह मेरे साक्षित बादन का ऐ-बर्ष।

[एक बाती का प्रवेश]

बाती—वेम साहिबा क्या घात्र यही बोपहर काटन का बिचार है ? दरवाजे पर भिन्नारियों की चीड़ लय गई है।

बायती—मिन्नारियों की चीड़ ! मरता संसार में इतना बेगम्य क्यों है ? मनुष्य को पेट भरने के लिए इतना परिश्रम क्यों करना पड़ता है ? मनुष्य का हँसत-वाले प्यार करते जीवन बिठान का दरकाय क्यों नहीं मिलता।

सरला—बगम्य से ही संसार है ? आप चाहनाका मुराद की बेगम है और मैं आपकी दाँती। यह अजन-अपन कर्मों का फल है। यह सब सोचने से क्या साम।

बासती—मुराद दीरंगबेब की क्या पर निर्भर है मैं मुयाद के सहारे पर

छड़ी हैं। मेरे बरनामे पर भी भिजायीं लड़े हैं। इस तरह ममुष्य बवा के नाम पर अपना बड़पन प्रकट करता है। क्या कभी ऐसा दिन नहीं या शकता क्या सब समान हो सकें ?

सरला—बैयम्प ही तो शीखरं है।

भारती—सर्वात् गुनाह होते घोर कटि न होते तो गुनाह गुम्बर न जान पड़ते ?

सरला—गुनाह की कोमलता अभी जान पड़ती है जब कटा चुमवा है। शीखरं न होता तो बाह्यही घोर बाघ की उदारता की भाव क्यों घाती ? मात्र पचपि साहजादा मुघल इस किसे में नजरबन्द हैं फिर भी स्यातिमर में बस्कि सारे देश में इनके समर्थको का समाज नहीं। फौज के ठिपाही—जिन्होंने इनके साथ रखकर लड़ाई में तलवार चलाई थी घोर मनमाने इनाम पाए थे जिनके साथ इन्होंने जमसत किए थे—घाब भी इनके लिए जान देने को तैयार हैं। साहजादा मुघल घाब बन्धी है और शीखरं बरघाह। यह केवल विधि विवम्बना है। एक बार भी यदि वह स्यातिमर के इस ममानक किसे से बाहर जा पाते ता इनकी लमकार से दिल्ली का सिद्धसन काप उठता। शीखरं का विष रहन उठता।

भारती—लेकिन सरला बाघघाह बनने में क्या तुल है ? सारे देश की भिन्ना पड़पत्नी का भय। अपना कोई पतिस्त्व नहीं। कि बाघघाह ! क्या रका है बाघघाह में ? यहाँ हम है, घाब है, मृत्यु घोर जान की तरबें हैं। दिन गुजर जाते हैं, रातें बट जाती हैं। हमें घोर क्या चाहिए ? संतार के रस शंभ में पहुँचकर मैं अपने मुघल से बंचित नहीं होना चाहती। मन्दा घब हम बसें।

[एक घोर से दोनों का प्रस्थान—दूसरी घोर से दो कबीरों का प्रवेश भी वास्तव में संनिक है—एक का नाम है मोहम्मद दूसरे का इसन ।]

हसन—भारती मोहम्मद ! कुछ भी कहो, बाघघाह बनने के वाकिल तो साहजादा मुघल ही है। वह ठिपाहियों को अपने अपने भारी की तरह मानते रहे। इनके बचन में शीखरं भी—लड़ाई के बाद गुन नाच-माना होना था—गुन

इलाम बंटते थे—कैफ़ियत और ख़ुशबू ! यह तो क्यामत की तस्वीर है । सिपाहियों की तो बात छोड़ो उसके सामने तो निपाहतामारों की भी कोई हस्ती नहीं ।

मोहम्मद—तुम ठीक कहते हो इलाम । शाहजादा मुयय्यद न सिर्फ़ ख़ुशबू है बल्कि बहादुरी में भी कोई उसका सामी नहीं । सप्तशतक इलाहा से लोहा लेना उसके भी और ख़ुशबू के काहू की बात न थी । और ख़ुशबू ने मोस्ता बैकर मुराब को मिरपतार न किया होता तो हम शीघ्र देख लेते कि और ख़ुशबू कैसे बाहरगाह बनता है ।

इलाम—मुझे तो अभी उम्मीद है कि हम अभी पाब पाबाब कर लेंगे । फ़कीर के देश में हम बहूँ पाते रहे हैं क्या यह बैकर आया ? यहाँ के सारे देशों को हम जान चुके हैं । और ख़ुशबू जब मुनलों को भी नहीं लुहाता तो हिन्दुओं को तो जाने ही क्यों जमा ? उसके भीलों से तो हमेशा चिनवारियाँ बरसती हैं । यह न जाने किस साबिब में उठ-बिन जमा रहता है । कम किस घर उसके चित्तम की ललकार उठेगी इसका कस पता नहीं । रोक उठकर हँस कर देखना पड़ता है कि वह बड़ पर मौजूब है या नहीं ।

मोहम्मद—मुयय्यद को जो ख़र्च थाही उमाने से निकला है उसका हीन भीवारि हिस्सा यह हम-जबे मुग़ल सरबारों को परवरिख और मरीखों की मरब में ख़र्च कर देता है । ऐसे पाबमी को हम जान देकर भी आबाद करेंगे ।

इलाम—बेघर ।

[मैपथ में जाने की आबाब सुनाई देती है]

मैपथ में जान—

ऐ निर्भर क्यों बँबकर रहता ?

तू तो भा कुदरत का फरना

क्यों माया बन्धन में रहता ।

पाप गुनाही के हुत तनुबा ।

तुम्हें पवन नित्य है कइता ।

ऐ निर्भर क्यों बँबकर रहता ?

मोहम्मद—नासूय होगा है रोपन भा मरि है । यह भी मरब की भील

है। इसकी मदद न होती तो हमारे कई काम सबूरे पड़े रहते। यतों सब हम क्यों।

[एक घोर से धीमों का प्रस्थान हुआ घोर से रोषण का पाले हुए प्रवेश]

रोषण—(पाल)

दे निर्भर क्यों बँधकर रहता ?

(पाला बाग करके सूर्य-कुण्ड के किनारे पर बँध जाती है) घायी तैयारी हो चुकी सिर्फ मुराद को तैयार करना है। उस दिन मैंने क्यों धीरमज्द के बहकाने में धाकर मुराद को बग्यन में उलझाया ? यह कता मर्बकर प्रतिघोष था। बासन्ती तो मान भी उसके हृदय पर राख करती है—रोषण—प्रकाश प्रकाश—यह भी धलज्वाला में पल रही है। बासन्ती को परावित करने के लिए मैंने मुण्ड को बिरपठार कठपा घोर बासन्ती फिर भी बीती। एक बार फिर होऊ नहीं है। इस बार बासन्ती के रूप जान से मुक्त करने के लिए इतना कठरा भेजकर मुण्ड को किने के बाहर से जाने का पश्मन कर रही हूँ। बेडो क्या होठा है। (फिर पाले लपता है)

दे निर्भर क्यों बँधकर रहता ?

[मल्ले-मल्ले प्रस्थान]

[बट-परिवर्तन]

तीसरा दृश्य

[स्वान—महाजिबद के द्विने में मुराद का प्रवेश। बासन्ती धराव की प्याली हाथ में लिए लड़ी है। मुराद बँठा है।]

मुराद—(हाथ में प्याली लिये हुए) बँठो बासन्ती ! मेरे लिए माटी दुनिया पुरानी हो गई, सिकिन तुम अभी तक नई हो। तुम लदाबहार पून हो

बासंती ! तुमने मेरे सुने बिना कौ बस्ती को भर रखा है । तुम्हारे लिए मैं क्या करूँ क्या करूँ क्या कर सकता हूँ ? सोना वा तुम्हें हिन्दुस्तान की भलिखा बनाता लेकिन मैं क्या करूँ ? मैंने तुम्हें बर्बाद कर दिया । जमान में बहबहाने वाली बुलबुल को कफ़ल में डाल दिया ।

[प्यालो पीकर रज बेता है]

बासंती—तुम व्यर्थ व्यर्थ होते हो । तुम ही मेरे जमान हो प्रियतम । तुम्हीं मेरी बुनिया हो हृदयेश्वर । तुम्हीं मेरे बर्म हो सर्वस्व । मैं यह नहीं जानती कि सुख क्या है ? मैं स्वर्ग को नहीं जानती । मैं सिर्फ़ इतना जानती हूँ कि मैं तुम्हारे बिना एक बकी भी नहीं सकती । तुम मुझे एक बकी के लिए मी दूर होने का मसल न करो मुराद ।

मुराद—तुमसे दूर होने की कोशिश । नहीं बासंती मैंने तुम्हें हिन्दुस्तान की सस्तनत के एबज में पाया है । मौत ही मुझे तुमसे पुरा करेगी ।

बासंती—मौत ! हाँ मौत को जाने दो । हम दोनों ही उसकी गोद में बैठ जाएँगे । बुनिया के घाकात में हमारी स्मृति युप-युम तक बो नसर्गों की तरह बमकंपी । मैं सोचती हूँ—मुराद बुनिया में तुम होते पीर मैं होती—पीर कोई न होता । ब फ़ूल न होते—ये ठारे न होते । बुनिया के बन्ने न होते सूर्य में हम-युम दोनों होते । समुद्र में वो बुद-बुवों की तरह चले पीर पाद धाकर एक होकर मिट जाते । तुम नहीं जानते मुराद कि मेरे बिना मैं न जाने क्यों एक भाव-सी बसती रहती हूँ—धत्वि की घाग ।

मुराद—क्यों क्या तुम्हें मैं प्याग नहीं करता ?

बासंती—क्यों नहीं ? इतना कपटे हो जितना घाहजहाँ ने मुमघाब को नहीं किया ।

मुराद—बुनिया घाहजहाँ के मोहम्बत-भरे बिना की तस्वीर ताममहल की बरज में छदियों तक देखती रहेगी । पीर मुराद का मोहम्बत अघ दिन आतिमर के किने के पत्थरों में बसा रहेगा । उसे कौम याद करेया बासंती ।

बासंती—न करेया न छही । किसी के याद करने न करने से हमारा क्या बनता-बिपकता है । पाद तुम कुछ उवास जान पकठ हो मुराद । क्या

बात है ?

मुराद—कुछ नहीं बांछती ! एक नीव मुनाघो !

बासती—मुनो—

मेरे नाँव निकट या बाघो !

घाब तरंगों उठती मन में

ज्वार पक रहा है जीवन में

पापलपन छप्या जीवन में

उसकी घाबर प्यस्त मुनाघो !

मेरे नाँव निकट या बाघो !

किरबे तो घाती रहती हैं,

ब्रेम-कचा बिल भी बहती हैं

जहरों में मिलकर बहती हैं,

तुम भी या मुझमें मिल जाओ !

घाघो, नाँव निकट या बाघो !

मुराद—तुम्हें अभी तक डूरी नजर घाती है, बांछती !

[वैपथ्य में बाल]

रे निर्भर क्यों बेंबकर रहता ?

मुराद—बांछती ! डूसरे कमरे से मेरी तलवार के घाघो !

बांछती—अभी प्यार, अभी तलवार ! यह क्या बात है ?

मुराद—कुछ नहीं तुम तुल्य तलवार के माघो ! मेरी दुस्मन रोघन !

वह यहाँ भी या बई है ! तुम बाघो मेरा काम करो !

[बांछती का बलवान डूसरी घोर से रोघन का प्रवेश]

मुराद—तुम यहाँ भी या बई हो ?

रोघन—हाँ मैं एक बार पहले घाई की तुम्हें कँद में बालने घाब घाई
हैं घाबाव करने ।

मुराद—कित लिय ! क्या तुम्हें मेरे कँदबाले का कुछ नहीं सुझाता ?

रोघन—मैंने बहुत बड़ा मुताह किया या पाहुनावा सलामत ? घाब ठीक

साल हो गए मैं रात-दिन उठी बिन की बात को याद करती हूँ अब मैंने तुम्हें बोला दिया था। उस वक़्त मैं इम्तान नहीं रही थी हवात हो गई थी। तुम हुस्न पर जान बैठे हो मुराद। और हुस्न तुम्हारी जान सेना है। बोला देने वाला हुस्न खुद एक बोला है मुराद। मे जवानी की महर्ने को दिन में खत्म हो जायेगी। बासे फूलों की तरह बासंती और रोशन सड़क पर पड़ी होंगी मुराद। तुम मर्द हो। जानो! जिन्होंने तुम्हें जंग के मैदान में देखा है वे प्राय भी तुम्हारे लिए फिर देने को तैयार हैं। किले के बाहर भाड़े तैयार हैं। तुम्हें उतारने के लिए सीढ़ियाँ लगा दी हैं। जसो डेर न करो। धमी जानो!

मुराद—ठहरो बासंती से बिदा से मूं।

रोशन—इस वक़्त भी बासंती। औरंगजेब की जंजीरों ने नहीं तुम्हें हुस्न की जंजीरों ने रुक रखा है। मुझे तुम पर तरस घाटा है, मुराद।

मुराद—तुम जग बाहर ठहरो! मैं एक जड़ी में प्राया।

[रोशन का प्रस्थान]

मुराद—सहसा! मैं धाबाद हो जाऊँगा। शीब प्राय भी मुझ पर जान बेठी है। औरंगजेब देखेगा कि मुदाब मुर्दा नहीं है।

[बासंती का तलवार लेकर प्रवेश]

मुराद—(बासंती से तलवार लेकर) बासंती मैं जाता हूँ। तुम्हें हिन्दुस्तान की मजका बनाये जाता हूँ।

बासंती—मुझे छोड़कर जा रहे हो?

मुराद—तुम्हें और पास जाने के लिए दूर जा रहा हूँ। मुझे हँसकर बिदा से बासंती।

बासंती—हँसकर बिदा से मुराद! मैं क्या सिर्फ़ खिलौना हूँ? क्या मैं केवल तुम्हारे मूने मन की मरने का साधन हूँ? मुझे छूने मन के धन्धकार में छोड़कर तुम न जा सकीये मुराद। तुम्हें प्राय फिर बारखाहूत का जोन हुआ है। मर्दा तुम्हें कौन-गा कुछ है मुराद। तुम और मैं। इसके प्रतिरिक्त दुनिया में कुछ और भी है।

[रोशन का प्रवेश]

रोशन—ता घन्ती तब तुम हुस्न की जंजीरों में बंधे हुए हो। बेबहुत बुराव ! बसो !

मुराव—धन्धा ! (बसने लगता है। बासंतो मारम रोक लेती है।)

बासंतो—तुम नहीं जा सकोगे। रोशन तुम इन्हीं नहीं ले जा सकोगी।

रोशन—दूट जाओ बासंतो ! पहरेदार बाध पड़ेगे ! घन्ती मत बतों ! जो तुम्हें इतना प्यार करता है उसके लिए मौत का खाना बना म करो। मुराव की धांधली में सारे हिन्दुस्तान की धांधली है।

बासंतो—मैं हिन्दुस्तान को नहीं जानती मैं बादशाहत को नहीं चाहती मैं सिर्फ मुचर को चाहती हूँ। तुम जनी जाओ रोशन !

रोशन—(मुराव से) तुम मर जाओ। तुम्हें एक घोरत के पास में खींचकर धपना फर्क नहीं भुलना चाहिए, बसो !

[मुराव बासंतो को बचका देकर जाता है। बासंतो फिर पड़ती है उसके लिए से चुन बहने लगता है।]

बासंतो—(तिरपट हाथ लगाकर) धन्धा वह मुझे बचका देकर जा सकता है ! मुराव जा सकता है ! जिसने मुझे मेरी बसभूति छुड़ाई, मेरे माँ-बाप छुड़ाए, मेरा सतीत्व लूट किया—वह बादशाहत के लोग म मुझे ठुकरा सकता है ! यह असम्भव है ! मैं ऐसा नहीं होने दूँगी !

पहरेदार-पहरेदार !

[पहरेदार का प्रवेश]

बासंतो—बीड़ो मुचर माया जा रहा है।

[पहरेदार तुच्छी बजाता है, घनेक सैनिक बीड़ते हुए आते हैं]

एक पहरेदार—मुचर भाप रहा है उसे पकड़ो !

[सब सैनिकों का प्रस्थान]

बासंतो—यह मैंने क्या किया ? मैं घन्ती हूँ ! दीवानो हूँ ! मैं मुराव से बसत होकर जी नहीं सकती। जिसके लिए मैंने सब-कुछ छोड़ा वह मुझे छोड़ जाए मैं यह बरबाद नहीं कर सकती। मैं अपने बाँधिए धीर धपमाहित जीवन को लेकर जीना नहीं चाहती। मैं मरूँगी लेकिन अपने प्रेमी के बरसों में ही

प्राण्य विसर्जित करेगी ।

[पहरेदार मुराब को पकड़ लाते हैं]

बासंतो—तुम या बए न ? मैंने तुम्हें बुझाया है, मुराब । आज मेरे जीवन की धाखिरी रात है । मेरा प्रेम धम्मा है मुराब । न मैं तुम्हारा मविष्य देखती हूँ न अपना । मैं घाटों पहर तुम्हें अपनी धाँसों के सामने रखना चाहती हूँ । इतना ही नहीं मैं तुम्हें टुकड़े-टुकड़े करके धाँसों में भर देना चाहती हूँ—टुकड़े टुकड़े होकर तुम्हारे दिल में कुछ जाना चाहती हूँ । और तुम मुझसे बिदा माँगते हो । पहले मुझे बिदा दो मुराब । (हाथ की हौरों को धँपूठी की कमी रूँह में बाँधती है । और मुराब के चरखों पर लोट जाती है ।)

मुराब—यह तुमने क्या क्रिया बासंतो ! तमने बहर सा लिया । मुझे भी तो वो दिल पीछे धुनिया से बिदा लेनी है । मेरी आज की करतूत के बाद क्या धौरबधेव मुझे बिम्बा रहने देगा । वो दिल तो धौर अपने हुस्न की धाँसियों में मुझे फसकर रखती, बासंतो ।

[बासंतो का तिर अपनी धाँसों पर रख लेता है । झुककर उसका मुँह घुमता है ।]

[पदमसेप]

वाणी-मन्दिर

पात्र-सूची

कुमार

एक कवि ।

बन्धुप्रकाश बर्मा

पात्रसूची' पत्रिका का सम्पादक ।

सरला

कुमार की पत्नी ।

मासती

बन्धुप्रकाश बर्मा की पत्नी ।

धनस्याम

सरला का बहनोई ।

बन्धिका

एक बनी मुकठी ।

डॉक्टर धारि

पहला दृश्य

['प्रातः' मासिक पत्रिका के सम्पादक भीयूत पत्रप्रकाश वर्मा का मकान । वर्माजी की पत्नी मासतीदेवी बेंठक के कमरे में एक कोच पर बैठी हुई पुस्तक पढ़ने में लीन है । उसके बेंठके के डब में प्रसङ्गता है, गिर पर से झाड़ी बिछक गई है, बाल बिछरे हुए हैं । अम्पर इस डब का बना हुआ है कि यौवन का उमार मसूकरों का मन कभारे ।]

मासती—(पढ़ते-पढ़ते पुस्तक डेबल पर रखकर, छाड़ने के सामने खड़ी होकर बाल सेंबारी हुई) यह कमार कवि भी एक रहस्य है । इसकी कविता में कितना आकर्षण है । इसकी कविता पढ़ते-पढ़ते हृदय उसके बीजक में एकस्य हो जाना चाहता है । इसकी पंक्ति-पंक्ति बेदना-धिनु है । इसकी बेदना प्राणों में पाले यह व्यक्ति संसार में कैसे रहता है । इसके भासुधों को मैंने कबल कविताओं में देखा है । मरि भाषों में देखती तो अपने क्माम को उससे पवित्र करती ।

[वर्माजी का प्रवेश]

वर्माजी—मासती !

मासती—घाब तो घाप बन्धी लौट घाप । घाब घापके मिर्षों ने इतन ? बन्धी खोद कैसे बिया । घाब घापके मुँह से खिस्की की सुपानि क्यों नहीं आ रही देखता ।

वर्माजी—तुम मेरा मवाक उड़ाती हो मासती ! सबा रोनी सुरत बनाए बैठे रहता संसार के प्रातः-उत्सव से बधित रहता क्या इन्वामिष्ठ है ? तुम्हारे कुमार कवि की तरह भाषों की भरतक पीकर बेहोष हो जाने वाले तो मेरे प्रास नहीं हैं ।

मासती—मेरे कुमार कवि । यह घाप क्या कहते हैं ?

वर्माजी—वह मैं कुछ नहीं कहता । इसे मैं कुरा नहीं कहता । बह-अम्प

सम्झ लपटा है, तो इतने मेरा दुःख नहीं बिकड़ता। उत व्यक्ति में इतन साहस नहीं है कि वह अपनी सीमाएँ पार करे। वह तो केवल स्मृति खोजता है। तुम उसकी स्मृति बन सका तो संघार का क्याख ही करोगी।

मासती—तुम बड़े नीच हो।

बर्माजी—संसार में नीच-ऊँच कुछ नहीं मासती। यह केवल क्या है जो मनुष्य को नीच-ऊँच बनाता है। तुम्हारा कुमार कवि विकास में राजा रईसों मन्त्रियों और ऊँचे पदाधिकारियों के साथ सहयोगों में नहीं बैठ सकता और तुम्हारा यह नीच बड़ा ऊँचा-ऊँचा घासण पा सकता है। मैं तुम्हारे कुमार कवि की तरह ऊँचा बनकर रहूँ ता बटापो जैसे ता तुम्हारे यह छट चर्ने और जैसे मैं ऐस करूँ।

मासती—माता को काना करने से

बर्माजी—पगली धात्मा कभी कानी नहीं होती। हम निर्विकार भाव से सब करते हैं। इन राजा-रईसों से हमारी जीविका चलती है। तानी 'धान्य' पत्रिका के मरोसे बैठे रहूँ तो बस फाके ही करते पड़ें। ये लोग सटव पीते हैं सबके साथ बैठने योग्य बनने के लिए मुझे खी पीनी पड़ती है। ये लोग बेस्वार्थों से भी बहलाते हैं मझे भी ऐसा करना आवश्यक है। ऐसा न करूँ तो मैं मुझे पूछें ही क्यों ?

मासती—घाप भूत और निर्मज्ज ।

बर्माजी—यह तो स्वापार है मासती ! इसमें निर्मज्जता की क्या बात ! सब छोड़ो इन बातों को। तैबार ही जाघो दिनेमा चलना है। धाव बहादुरपुर के बीजान साहब से मुझे और तुम्हें दिनेमा के लिए निमन्त्रित किया है।

मासती—मैं नहीं जाऊँगी।

बर्माजी—मैं नहीं जाऊँगी। यह तेरे बाप का घर नहीं है। यह 'धान्य' सम्पादक श्रीमान् चन्द्रकाश बर्मा का मकान है। क्या तम्हें मुझे और अपने-घापको बरीप बनाए रखने में सुख मिलना है ?

मासती—घावो तो मैं नहीं रोवती !

बर्माजी—मेरे जाने से क्या होना। तुम्हारे गए बिना कुछन बनेगा। दिनेमा

हाउस में बो-लीन बच्चे बीगना ही तो है । इममें तुम्हाण क्या बिमडता है ?

मालती—मुझे वह धारणी बहुत बेहूदा जान पड़ता है । उस दिन जब हम लोप होटल में जाब पी रह्ये तो वह ऐसे बैस रहा या जैसे मुझे भी या जाना चाहता है ।

बर्माजी—लेकिन वह पी तो नहीं गया । ऐसे मोयो को उम्नू बनाकर रियासत के खजाने का कुछ कामा हमारे बेब में हम भर सकें ता इममें क्या बुराई है ।

मालती—तुम निकम्मे हो ? मैं नहीं जानेंगी !

बर्माजी—(जूटी पर से हँडर उठाकर) तुम घुम पाई कि इस हँटर में एक दिन तुम्हाणो काम उभड़ बो पी जान पड़ता है तुम पर सब कुमार का पानू जमा है ?

[कुमार का प्रवेश]

कुमार—यह क्या बर्माजी !

बर्माजी—कुछ नही यह पति-पत्नी को हँसी-गिबनमा है । इसमें मैं कह रहा हूँ ।

मालती—नहीं-नहीं इनमें बाप कुछ न कहें मैं तैयार होती हूँ ।

बर्माजी—हाँ, अब तम धनी सड़का वनी ! यह बम्पर कीक है । इसके पास की साड़ी पहन लो धोर जसो । अभी धरया गियरेट में घाड़ें ।

[बर्मा का प्रस्थान । मालती घलमारी में से साड़ी निकालती है ।]

कुमार—(बाजे हुए) मैं जाऊँ । धानको कपडे बदलने हूँ ।

मालती—नहीं-नहीं मुझे निकट माड़ी बदलनी है, वह धानके सामने भी बरध सकती हूँ । मेरा शरीर पापकी दृष्टि की धनेखा पबिष मही है ।

[मालती पहनी हुई साड़ी उतार बेनी है धीर दूसरी पहनने सफती है । उसकी घोषों में धीसू धलधला धले है ।]

कुमार—तुम रो रही हो माधवी ! तुम्हें क्या धनाब है ? रोना ता हम जैसे धनाबों के लिए है ।

मालती—(साड़ी पहनकर) संसार में कौन धनाबमा है इधे उधधने की

बुद्धि थोड़े लीपों में है। मेरा जीवन किछ नरक की पर्यवसा में बन रहा है। पाप नहीं जानते कुमार! मेरा भी करता है मैं बाहर साकर मर जाऊँ (धड़-धड़कर रोने लगती है।)

कुमार—(पास आकर मासती के धीसू पोंछता हुआ) मासती मैं अधिकतर प्रपत्ता भी बान्ध नहीं संभाव सकता फिर तुम्हारे लिए कुछ करना मेरे लिए कितने सम्भव हो सकता है। मैंने तुम्हें अनेक बार हाट-बाजार, बेस-तमाशों और छैर-सपाटों में डूँडते-मुसकराते उल्लासते-कूदते देखा है। मैंने लोगों के मूँह से तुम्हारे विषय में विचित्र बातें सुनी हैं। मैंने तुम्हें उल्लास के आकाशमें उड़ने वाली चिड़िया ही समझ था। घाब सात हुआ कि तुम्हारी आँखों में पानी भी है तुम्हारे हृदय में धाम भी है। बैठ जाओ मासती! अपने हृदय की व्यापक मुझ से कहो।

[दोनों पास-पास कोच पर बैठ जाते हैं]

मासती—कुमार! माह! मैं वह सब-कुछ नहीं कर सकती। कई बार मेरा भी करता है मैं भाग जाऊँ। लेकिन मैं उन्हें बहुत प्यार करती हूँ। वे धाएँ बिना मुझे डूँडते से मारते हैं फिर भी मैं उन्हें नहीं छोड़ सकती। वे मेरे दुकड़े-दुकड़े कर वाले फिर भी मैं उन्हें नहीं छोड़ सकती। लेकिन उन्हें मुझसे रती मर भी प्रेम नहीं है। वे मेरा मूल्य-

[बर्माबी का प्रवेश]

बर्माबी—धन्या तुम तैयार हो गईं। तो चलो। माई कुमार तुम भी चलो न। सुमते हैं बड़ी धन्यी तस्वीर है।

कुमार—नहीं मैं घर जाऊँगा।

मासती—नहीं कुमार तुम्हें चलना पड़ेगा। मेरी खातिर।

बर्माबी—यदि उन्हें काम हो तो जबरदस्ती न करो।

मासती—काम! काम क्या हो सकता है। तुम्हें चलना ही पड़ेगा। राजतों के बीच में एक तो देखा हो। (कुमार का हाथ बकड़ लेती है)

कुमार—धन्य चलाता हूँ।

[तीनों का प्रस्थान]

दूसरा दृश्य

[कुमार का घर । कुमार की पत्नी सरला अत्यन्त माँहें कपड़े धुने हुए अपने ही बँटी है । कमरे में सुबह के बिन्दू ली हैं, लेकिन परीची का अविद्यार हाक नबर था रहा है । सरला कड़कर पुस्तकों की धातमारी हाक करने लगती है ।]

सरला—माँह से धनी तक नहीं पाए । भाई, मेरा भी बड़का है । संसार का ध्युन देने के लिए वे बिय के बूट पीते हैं । वे बरि हैं संसार उन्हें धाहर की दृष्टि से देखना है इस नीरव में मुझे दिवनी बार प्रकृतिगत किया है ।

[एक २ बय की बालिका का प्रवेश]

बालिका—माँ मुँह मनी है ।

सरला—बेटी बाइकी की धावे दो ।

[बालिका का प्रस्थान]

घर में धाव एक शाना भी नहीं है । पाम में एक पैसा भी नहीं है । दूध धावे में दूध बन्द कर दिया है । बन्नी भी ऐसी (धुर्बतमायों की धन्यस्त हो गई है । कँडी पुनःधाय बसी गई । भयधानु तुम किन्हीं अधिका धार करते हो उन पर इनकी धानधियाँ क्यों बामते ही । (धानों में धानु भर धाते हैं । बाहर से 'मिस्टर कुमार, मिस्टर कुमार' की धाधान धाती है ।)

सरला—धानर धा धाए ।

[सरला के बड़ोई बमस्थान का प्रवेश]

धनध्याय—(एक कसीं घर बँडकर) बकी कठिनाई से धकधर दिया ।

सरला—कन धाए ?

धनध्याय—धरलों ही धामा है । धक इसी धाहर में मुँह रूना है । धेरी यहाँ बयली हो गई है ।

सरला—बकी बूकी की धाठ है ।

[बालिका का धिरप्रवेश]

बालिका—बाबूजी घाय मा नहीं ! मुझे बूझ समी है ।
 सरला—नहीं बेटी समी नहीं घाय ।

[बालिका फिर बली जाती है]

जनश्याम—कुमार बाबू समी तक नहीं घाय । देने घाय उन्हें बेला तो
 या । एक स्त्री का हाथ पकड़े हुए कहीं जा रहे थे । वे मुझे नहीं देख पाए घोर
 मैंने उन्हें पुकारना प्रकृत न समझ ।
 सरला—कैसी स्त्री थी वह !

जनश्याम—बहुत समर ! घप्तरा ! मेरा भी जी करता है, इसी तरह मैं भी
 उसका हाथ पकड़कर चल यक । छोड़ी इन बातों को । यह बताओ तुमने यह
 पति क्या कुछ नहीं करते । पर से भीतर झकते ही मेरा बिल काँप उठा । तुम्हारे
 सरला—बीबा भी घाय मेरा प्रपमान करने घाय है ।

जनश्याम—तुम्हारा प्रपमान । यह क्या करती हो सरला ! मेरे हृदय
 में तुम्हारे लिए जो स्थान है उसे क्या तुम नहीं जानती । तुम्हारी बड़ी बहुत तो
 मिट्टी की पुजारी है न क्या है न मुख । घोर तुम
 सरला—मुझम बप भी है घोर तुम भी यही तो घाय बहना चाहते है ।
 इस रूप-मुख की प्रशंसा मैं घायके मूँह से प्रक बार सम चुकी हूँ । घायका
 भावय क्या है ?

जनश्याम—मैं कहता हूँ तुम यह परीबी का बाम्ब घाय घिर पर क्यों
 सादे हुए हो । मैं साफ देख रहा हूँ कि घाय तुम्हारे पास बच्ची को पिलाने के
 लिए दूध भी नहीं है । ऐसे कष्ट तुम क्यों सहती हो ?
 सरला—बारा ही क्या है ? क्या तुम मेरे लिए पराई हो । मेरा घर
 जनश्याम—बारा ही क्या है ? क्या तुम मेरे लिए पराई हो । मेरा घर
 तुम्हारा ही है ।

सरला—लेकिन इस रूप का बरसा तो घाय न चाहिये ?

जनश्याम—बदला क्या ! तुम मेरी घाँवों के घाये होयी यह क्या
 है ?

सरला—समझी बीबा बी ! धाव पाँसों की प्यास बुझाने के लिए घाय
 छुनी कृपा करने बसे हैं कल हृदय की घाग—

बनस्पति—तुम तो कवि के साथ खूब कविता करने लगी हो । कुमार
 बानू तुम्हारी कद नहीं करते इससे मेरा दिल दुखता है । तुम तो बन्दर के गले
 में योनिजों की माता की तरह हो ।

सरला—घाय मेरे प्रतिबिम्ब हैं, तिस पर मेरी बहून के पति हैं धारके साथ
 दुर्भावहार नहीं कर सकती । नहीं तो घाय-जैसे सम्पत्तों की मैं पर के बन्दर
 हों बुझने देती ।

बनस्पति—सरला तुम नादान हो । बचपन से नादान हो । जब तुम्हारे
 पिता ने तुम्हारे सामने मित्र श्रीर कुमार दोनों का नाम उपस्थित किया था तब
 तो तुमने एक बनी राय बहादुर के पुत्र को ठुकराकर एक मिथ्या कवि को
 चुना था तब मैंने समझ था जीवन की वास्तविकता तुम्हें अपनी भूल समझ
 देनी । मैं कहता हूँ, तब तुम नादान थीं घाय घायल हो । बाल-बुझकर नरक
 लम्बा में बल रही हो । तुम इससे घामापी से पार हो सकती हो । कवि के
 सिर पर बोझ बनकर उड़की कला का स्वर खूब कर रही हो क्या इससे उनका
 कुछ लाभ है ? उन्हें स्फूर्ति सहर की सम्य कुमारियों की ससनाओं में मिल
 जाती है । तुम तो उनके सिर पर एक बोझ ही हो ।

सरला—तुम ठीक कहते हो बीबा बी ! मैं उनके सिर पर बोझ ही हूँ ।
 मुझे कुछ है कि मैंने घायकी कृपा की घबहसता की । इस समय घाय जाएँ, कल
 ही समय पाएँ और घाय में बीबा बहुर की मेठे पाएँ । मैं बहुत हस्की बन
 कर घायकी सेवा में उपस्थित हो जाऊँगी । वो मुझे बोझ समझता है, वह
 स्वयं भी मेरे ऊपर बोझ है । मैं सब तरह के बोझ-उतारकर घायके पाठ
 उपस्थित हूँगी । घाय घाय जाएँ ।

बनस्पति—घबह नमस्ते !

[बनस्पति का प्रस्ताव]

सरला—सरला ! बरीबी भी समिहाण है । परीब स्त्री को बचाने कल
 बनों देता है । मैंने सहा पति के पस को ही अपने जीवन की बखता समझ

है। मुझे पेट छो जाने पर भी कभी अपने माप्य को नहीं कीता। उनकी फोवार्ड
 खपाने के लिए अपना एक-एक जेवर बेच दिया है। उनकी कसा बिसके
 बरखों पर सवार सिर झुकाता है क्या साधारण वस्तु है। वह रायबहादुर का
 बैटा बिप्टी कमिशनर कुछ खपयो से मेरा शरीर खरीदना चाहता है। परीबी
 पू मनुष्य की कीमत इतनी कम कर देती है। घोर खपया पू मनुष्य को रासस
 बना देता है।

[दरवाजे बर किली के हुंतेने खिलखिलाने को धाबाज प्राली है]
 तो वे घा पय। साब में कोई स्त्री जान पड़ती है। कैसी हुंस-हुंसकर बल
 हो रही है। देखू तो ?

[प्रत्यान]
 [पठ-परि]

तीसरा दृश्य

[कुमारी खग्निका देवी का मकान। खग्निका के पिता प्रहर के एक बनी
 रहैत थे। उनकी क मास पहले प्रवानक मृत्यु हु ।]। खग्निका देवी के
 प्रतिरिक्त उनकी कोई ललात न थी। खग्निका देव व्यवहारकाल प्रिजिता
 लड़की है। बहु उत बरातल बर रहती है जहाँ लज्जु बने का बातना को
 लहूत नहीं होता। न जाने कितने हूबयो में उसके धन, पुत्र घोर खप ने तीन
 जापत क्या किन्तु किली को अपना प्रार्थना-पत्र उनके बप्टलों तक ले खपे
 का लहस नहीं हुआ। बहु अपने प्रथमयन में बसत रहती है। खग्निका यी
 मासतो का प्रवेष्ट। बीनों बल-य स कोष पर बंध जाती है।]
 खग्निका—मुझे अपने जीवन में एक साथी चाहिए।
 मासतो—तो साथियों की क्या कमी है। ऐता कीन पुत्रक हूबय दीगा को
 मुम्हें पाकर अपने-आपको बन्ध न समये। पुत्र बल-बबर की पुत्री हो अपने

स्वर्गीय पिता की सम्पूर्ण सम्पत्ति की मासकिन हो ।

बन्धिका—मैं पुरुषों से बूना करती हूँ मासती । पुरुष है पशु । वह स्त्री को सिखाना समझता है । मैं किसी के हाथ का बिलोना नहीं बनना चाहती ।

मासती—सेकिंग को जरणों का दास बनना चाहे ।

बन्धिका—वह पुरुष ही न होया । पुरुष अपना स्वभाव नहीं छोड़ सकता । वह परबत है, कभी-कभी उसका हृदय द्रबित हो जाता है, सेकिंग फिर भी कठोरता ही उसका धर्म है । मैं उस कठोरता को अपने गले का हार नहीं बनाना चाहती ।

मासती—फिर क्या चाहती हो ?

बन्धिका—मैं क्या चाहती हूँ यह मैं स्वयं नहीं जान पाती । मेरे प्राणों की पुकार मुझे ही सुनाई नहीं देती । बहन पुरुष भी तो भकसे जीवन बिता देते हैं, वे पुरुषों में हंस-खेसकर भी अपना भी बहमा भेठे हैं । ऐसा क्या हम स्त्रियाँ नहीं कर सकती । मैं तुम्हें अपनी साधिन बनाना चाहती हूँ ।

मासती—क्यों ?

बन्धिका—इसलिए कि तुम सुन्दर हो । और तुम्हारे साथ रहने में मुझे किसी प्रकार का भय नहीं है ।

मासती—कृष्ण पुरुष भी ऐसे होते हैं जो मारियों से कोमल होते हैं । उनके हृदय की प्राण संसार के लिए धीठल प्रलेप होती है ।

बन्धिका—ऐसे पुरुष को तुमने कभी देखा है ।

मासती—हाँ हमारे शहर के प्रसिद्ध कवि कुमार ।

बन्धिका—हाँ हाँ उनकी पुस्तकें मैंने पढ़ी हैं । सब उनकी वैसे कविताएँ मैंने कभी नहीं पढ़ीं । वह हमारे हिन्दी-साहित्य का गौरव है । तुम बहुत अच्छा गात्री हो । मैं उनकी 'वेदना' पुस्तक बेची हूँ । जरा याद कर उनका एक गीत सुनाओ ।

[चठकर झालमारी में से एक पुस्तक निकालकर मासती को देती है]

मासती—(बसती है)

बेहना मेरी न छीनी
 बेहना में प्राण मेरे ।
 तारिकाओं की हूँगी मैं
 तुम भरों आकाश छपना ।
 अक्षराओं के मधुर स्वर
 से भरों अपिवास्त छपना ।
 फूल-से फूलों बनूँ मैं
 तुम भरों उत्साह छपना ।
 धीत के पाकुल हूँ मैं
 अपमपत्नी पान मेरे ।
 बेहना मेरी न छीनी
 बेहना में प्राण मेरे ।
 क्षुम धबने शीपकों में
 तैल-सा भरकर हुमारा ।
 तुम प्रकाशित खूब कर लो
 स्वर्ण का मन्दिर तुम्हारा ।
 देख ले सपने सुखों के
 नींद में संसार सारा ।
 कब किसी को देख पाए
 पान के पी बालु मेरे ।
 बेहना मेरी न छीनी
 बेहना में प्राण मेरे ।
 अस्तिवयी लेकर हुमायी
 जानता संसार होती ।
 कौन समझेया किसी के
 नम्र उर की मूक बोली ।

हम हुए नीरब ब्यथा से
 कर रहे हो तुम ठडोती ।
 कौन ढोड़े सिर बगत् से
 बह नितुर पापाए हूँ रे ।
 बेरना मेरी न धीनो
 बेरना में प्राण मेरे ।

[मासती की धीनों में धीसु घा जाते हैं]

बन्बिका—तुम रोने लगीं । मेरा भी हृदय नीरब से टुकड़े-टुकड़े हो रहा है । जिस ब्यक्ति को इतनी बेरना मिलती है वह जिन्दा कैसे रहता है ।

मासती—यह जिन्दा नहीं रहता दूसरों को जिसाने के लिए स्वयं मर जाता है । मैं एक दिन कुमार के घर गई थी । वह बारिषप का बन्बिबास । उस घमाब के ब्बिड़ावार में रहकर वे तीन प्राणी किस तरह अपने स्वामिमान की सन्तत करके बसते हैं यह देखकर मैं तो बंन रह गई ।

बन्बिका—सीत कौन ?

मासती—कबि सतकी पत्नी घौर उसकी बन्बी । पत्नी कितनी सुन्दर है हमारे बनीबी को निस जाए तो येबकर अपना घर घर से । बानिका कीसी सुकुमार कि बनेती का पूत । कबि कौसा कोमस कि तुम्हें निस जाए तो बने का हार बना सी ।

बन्बिका—तुम अपने बिल की बात कहती हो ?

मासती—हृदय की बाह बया कभी पुरी हुमा करती है । मैं उस बिल गई थी—बन्बी मुस से ठकुर रही थी । घर में एक बाना भी न था—बून की । बूँद भी न थी । सरला राबि की तरह नीरब थी । कुमार सायर की तरह बन्ब था । मैं पापम हो उठी । यह है हमारे देश के साहित्य-साबकों के घन्तपुर की सस्तीर ।

[बन्बिका की धीनों में धीसु घा जाते हैं]

मासती—मां बहन तुम रोने लगीं । हमारे धीसघों से इन सपस्वियों की सभसा हल नहीं होपी । ये अपने घमाबों को संघार के घामने नहीं रखते ।

बसते रहते हैं दीपक की तरह नीरव रहकर घोर सघार को प्रकाश देते हैं।

अग्निष्वा—मासठी यदि इस परिवार की कोई सेवा कर सख्त तो मैं अपने पापको क्षम्य समझूँगी। तुम मुझे वहाँ से बसो। बसो अभी बसो।

[दोनों का प्रस्थान]

[पह-परिवर्तन]

चौथा दृश्य

[कुमार का घर। बारपाई पर सरला बैठी हुई है। सारा घरीर कासी बारर से ढका हुआ है। धनश्याम का प्रवेश।]

धनश्याम—घानर यह सरला ही सी रही है। सरला ! सरला !! बड़ी नीरव है। बोलती नहीं है। क्या झुझुझोरकर बसा हूँ। क्या मुझे इसे सुने का अधिकार है। क्यों नहीं कुछ लणों के बार बह मेरी हो जाएगी। (मुँह से बारर हटाता है) घाना कँठि वान्तों में से बाँर निकला हो। कितना आकर्षण है तुममें सरला।

[लहसा मासठी और अग्निष्वा का प्रवेश। वे कमरे में धनश्याम को देख कर चौंकते हैं।]

मासठी—घाप कौन ?

धनश्याम—मैं-मैं सरला का बहलोरि हूँ।

अग्निष्वा—यहाँ घकेसे में घाप बसा कर रहे हैं ?

धनश्याम—कुछ नहीं-कुछ नहीं। मैं घपने कुमार बाबू से मिलने घापा बा। मैंने समझा वे सी रहे हैं। बारर उठाकर देखा तो सरला बी।

मासठी—तो इधमें इतने परेधान होने की बसा बात है ? ततपीठ रखिए।

धनश्याम—नहीं-नहीं धन जाता हूँ। घीरतों के बीच में घकेसे रहना घाप है। देघा कुमार ही कर लकने हैं। इग्जठघार घादमी को घपनी कीठि का

बयाल होता है ।

[घनश्याम का प्रस्थान]

मासती—(सरला को हिलाती है) उठो बहुत ! यह भी कँची नीर है ।
(हाथ पकड़कर उठाती है) धीरे यह तो पत्थर ही रही है ।

[चित्रिका भी पास जाती है । मासती लासलेन लेकर मुँह को गौर से देखती है ।]

चित्रिका—मुझे तो यह दूटने वाली न ब नहीँ मानस बेटी ।

मासती—हाँ घोट नीसे हो रहे हैं इसने बहर जामा है ।

चित्रिका—सुवार भी नहीं है । तुम यहीं रहो । मैं डॉक्टर को जाती हूँ ।

[चित्रिका का प्रस्थान, मासती सरला के तर्किए के नीचे तलाशी मीती है । दो बिट्टियाँ उसके हाथ जपती हैं ।]

मासती—ये बिट्टियाँ जान पड़ती हैं । पढ़ूँ । (एक बिट्टी प्यती है)

“सरला ! तुम पर सपवानु ने इतनी कारीगरी इसलिये कर्ष नहीं की कि तुम अपने स्व-जीवन को बरीबी की भाव में बसाती रहो । मैंने एक बीबी में तुम्हारी बाही हुई बीज सेजी है । तुम मार्य घाफ करके जीवन का वास्तविक सुख से सक्तो हो !” (बिट्टी को पटक बैठो है) पावे नहीं पड़ सक्तो । (दुःख पत्र खोलती है) “प्रियठम मैं जा रही हूँ । मैं कवि के जीवन का बोध हूँ । जो बायीं के मन्दिर का पुजायी है उस पर नृहस्वी का बोध लाटना निष्कुरता है । संसार कवि को पाकर सप्य होता है किन्तु, वह यह नहीं जानता कि उसके बीबी-बच्चे भी होते हैं । जो रात-दिन अपने प्राणों का खून पिनाकर संसार को जीवन देता । उसके जीवन की रक्षा करना भी प्रावश्यक है । मैं नहीं चाहती कि तुम कवि का जीवन छोड़कर दूसरा रास्ता पकड़ो इसलिये मैं तुम्हारे तिर से अपना बोध उठा रही । मेरे बधि का एक कारण थीर है कि मुझे मरीब की पत्नी जानकर संसार की लोभुप धाँसे भी मेरी घोर मूर्खने लगी हूँ । मैं कवि के गौरव को कम नहीं करवा चाहती । मैं जाती हूँ । पाकास के गखनों में तुम मुझे पामोने । मुग्गी की व्यवस्था कुछ-न-कुछ हो ही जाएगी इसका मुझे विश्वास

[मासती की आँखों से आँसू बह पड़ते हैं । कुमार का प्रवेश]

कुमार—कौन मासती ! तुम रो रही हो । क्या हुआ ?

[मासती चुपचाप हृष से बह बड़ा बेती है । कुमार पत्र लेकर पढ़ता है]

मासती—कुमार ! तुम कबि हो ! तुम हर तरह के आघात सह सकते हो । तुम्हारी कोमलता ही वह बल है जो तुम्हें अचेत प्रकाश्य प्रीर धर बनाती है ।

कुमार—सरला ! (सरला को बाधुओं में कत सेता है) तुम्हारे लाल-लाल धर बहूत प्यारे थे किन्तु, ये नीसे-नीसे धीठ उनसे भी अधिक प्यारे हैं । (कुमता है) कबि को भीषित रखने के लिए तुम मर रही हो धाम्य नहीं जानती कि मेरी स्फूर्ति तुम हो । मेरी प्रेरणा तुम हो । मेरी गरीबी तुमसे धन्य है । मेरी बेबला तुमसे धन्य है । तुम्हारी मुक सेवा तुम्हारा नीरव प्यार और तुम्हारी कठिन उपस्था ही तो मेरी बाणी के तार हैं । मैं बाणी के मन्दिर का पुजारी हूँ तुम तो साक्षात् बाणी हो । मेरे गीत में तुम्हारा ही स्वर है, सरला !

[अग्निका का डॉक्टर को लेकर प्रवेश]

अग्निका—डॉक्टर बीनर्ली ! यदि लाल स्वरा कर्ष करने पर भी सरला के जीवन की रक्षा हो तो मैं कर्ष करूँगी !

डॉक्टर—(सरला को छाती की बड़बड़ बोलकर) छीस घन्टी बाकी है । मैं प्रयत्न करूँगा मिश्र अग्निका देवी ।

अग्निका—डॉक्टर को छी स्पष्ट का नोट देतो हुई, लीबिए । यदि प्राप हस्त में सफल हुए तो मालामाल हो जाएँगे ।

[डॉक्टर सरला के इन्वेन्शन लपाने का सामान करता है]

कुमार—माप !

अग्निका—कुमार ! मुझे माप घपनी एक बहूत समझें । जो बाणी के मन्दिर का पुजारी है उसका ध्यकितत्व संसार की सम्पति है । केवल धारपतेव के बल पर संसार में बिया नहीं जा सकता । तुम्हारे बीजों ने तुम्हारे प्राणों की पुकार मेरे पास पहुँचा दी है । मैं धाई भी तुम्हारी कृष सेवा करने के लिए,

लेकिन यहाँ वो कृष्ण देखा उसकी मुझे कल्पना ही न थी। संसार किटना
निन्द्युत है ?

कुमार—संसार बहुत मधुर है, बहुत प्रेमपूर्ण है बहुत स्नेह-धीम है।

बोंक्टर—(जो ईर्ष्याग्रस्त लगा रहा था) मुझे मरिच के पन्धे होने की
प्राथा है।

[सब सरला के पास बैठते हैं]

[पटासेप]

रूप-शिखा

पात्र-सूची

कम्पनी

एक नृत्य-संघीत प्रवीणा राजपूत रमणी ।

बाबबहादुर

मातवा का मुखताम ।

प्रादमसान

सम्राट् अक्षर का एक सेनापति ।

वीरसिंह

बाबबहादुर की सेना का सेनापति ।

विजयसिंह

प्रादमसान के प्राचीन मुक्त सेना का एक सेनानायक ।

पहला दृश्य

[स्वल्प—मातङ्ग-प्रवेश का सारंगपुर नामक कस्बा । ताताव के निकट एक मन्दिर । मन्दिर की सीढ़ियों के निकट बाजबहादुर बिबल नग घास्त-घ्यास्त पर विसेप कर रहा है । बीरसिंह का प्रवेश ।]

बीरसिंह—(भुङ्ककर सौमिष करने के पश्चात्) बर्हापनाह बिबल का समय

बाजबहादुर—महीं बीरसिंह बाजबहादुर की बिन्दपी में धाराम घायद है नहीं । रानी दुर्गावती के हाथों सिद्धस्त घाने के बार से मानो में बीपाना ही पया हूँ । एक धीरत से हार गया । धिः कैसी धर्म की बात है । दुर्गावती की दोनों हाथों से तलवार कुमाठी हुई, मूरत घाँकों के घापे से हटती ही नहीं है ।

बीरसिंह—हार का बीत मतुप्य की बहादुरी की कसौटी नहीं है । सफ़सठा पाने के लिए पुस्याबे के साम प्रारम्भ भी चाहिए । पुस्य बह है जो कम करता है, हार का बीत से कुसी या प्रठन नहीं होता । मेरी घापसे बिबल प्राचना है कि घाप इस हार की कसक को मूझ बाइए ।

बाजबहादुर—हाँ मूल ही तो जाना बाइता हूँ धीर इसीलिए ज्यावा घराब पीने जपा हूँ । रोज नई घराब धीर रोज नई नाबनी । घराब धीर हुस्त के नडे में मैं बेइजबती के बरें को, हरकम चुम्बते रहने वाले कटि की कसक को मूल जाने की कोसिध कर रहा हूँ घाब की महीछिष का इतबाम किया तुमने ।

बीरसिंह—घापने सेबक को ऐसी कोई घाबा नहीं बी ।

बाजबहादुर—तो क्या मुझे रोज हुकम देना पड़ेगा । बीरसिंह, मूय रोज लपटी है धीर रोज जाना घायो बाठा है । मेरी हुसरतें भी मूची-घ्याघी हैं उनके लिए भी—

बीरसिंह—बिबल ही राना-पानी चाहिए । घण्डी बात है मबिप्य में घापको घाबा देने की घाबकसकता नहीं पड़ेगी । घाप बिबास-स्वान पर तो बनें उसके

परबाए

बाबबहादुर—नहीं पहले घाटमगाह में घाँवों को घाटम देने वाले कुब
सूरत बाँर को पहुँचाओ उसके बार मुझे बुझाओ ।

बीरसिंह—घौर तक तक भीमाद्

बाबबहादुर—तब तक हम ताबाब की लहरों के दिन बहुमाएँ । ऊपर
तक मबालब नरा हुआ बलबलाता ताबाब मालो बबानी के नबे में तबबोर
घौरत की बड़ी-बड़ी घाँवें । घौर ताबाब के पीछे वे बाणी छाड़ी की तरह
नहूएते हुए घेत घौर उनके पीछे घने हरे बंधम—घौरत के दिन की तरह कुब
सूरत सेकित राज के मरे हुए । बाँरनी में बमकती हुई माधबा की मह काली-
काली बनीम—घोछ की लटों की तरह काली । (बबालक बौककर) बीरसिंह,
तुम घनी तक नहीं घड़े हो ?

बीरसिंह—लमा कीबिए, घापके घापए में मुझे कबिता का घानब घा
रहा ना । मैं बपना कर्तब्य घूम बबा । घब बाठा हूँ ।

[बीरसिंह का प्रस्वान]

बाबबहादुर—बेबाए बीरसिंह, घौर की तरह बहादुर ! घेरी डाल बनकर
जंग के मेबाम में हूमेबा घाब रहने बाला । मैं ती घमभटा ना यह बलता
कियटा बट्टान का टुकड़ा है, बेकित बाल पड़ा कि हूमे भी कबिता में नजा
घाटा है । इधकी पघलियों के बीच एक बड़कने बाभा दिन है ।

[बपकती का हाव में पूजा-सामघी लिए प्रवेध । घूतरे हाव में बीला है ।
बाबबहादुर पर एक नजर डालकर लीङ्गियाँ बड़ती जाती है । प्रत्येक बरसेप
देला बाल पड़ता है मालो नृत्य कर रही है । कपकली मन्विर में प्रवेध करके
घोळन हो जाती है ।]

बाबबहादुर—बिन्धी के घूने घातमान में मापूरी की काली घटाघों के
बीच वह लीन बिजली की तरह कीपी घौर बली गई । घौर के रंवीन पंखों
की तरह रंवीन घोङ्गी में कुम्भन की तरह बमकने वाले बिन्धी को तबाए ऐमी
के किन्नी ठे ना रही घी मालो बुनिया में उसके सिबा कोई है ही नहीं । एक-
एक बरप हठ तरह रख रही घी मालो नाच घुल करने जाती है । दिन तो

माली नाच ही रहा था ।

[अन्दर में कपमती बीछा बजाती है और गाती भी है । बाजबहादुर संक्र-मुग्ध की तरह सुनता है ।]

केपय्य में—(गीत)।

क्यों बिल का धाराम बँवाता ?

कोयल पाती लुख का गाना

कलिका पर मकुडर खोबाना

मुल-गुल रत के यन्त्रे पाता ।

क्यों बिल का धाराम बँवाता ।

[पाता प्राप्त होता है लेकिन बीछा बजाती रहती है]

बाजबहादुर—'क्यों बिल का धाराम बँवाता ?' माली मुग्ध ही पूछ रही है ।

[नील प्रागे बढ़ता है]

केपय्य में—(गीत)

धर-धर भरना बहुत जाता

प्रपने बिल की बहुत जाता

क्यों न हृदय तेरा बहु पाता ?

क्यों बिल का धाराम बँवाता ?

[नील बढ़ता है किन्तु बीछा बजाती ही रहती है]

बाजबहादुर—'क्यों न हृदय तेरा बहु पाता ?' बहूने की क्या बात प्राग की बाफ मा रही है । मुग्धन पठ रहा है ।

[नील प्रागे बढ़ता है]

केपय्य में—(गीत)

डाल-डाल पर कलियाँ भूनी

भूल-भूलकर कलियाँ फूली

तू क्यों मत्ता नहीं बनाता ?

क्यों बिल का धाराम बँवाता ?

[गीत खस्ता है किन्तु बीया बनती रहती है]

बाबबहादुर—मासा तो बाबबहादुर ने बनाई—लेकिन एक भी फूल ऐसा नहीं मिला जिसके फोनों पर हमेला मुसकान रह सके हो ।

निरख्य में—(गीत)

जब तक बीया हँसकर बीना,
घन्त मृत्यु की मंदिरा पीना,
जो जन में घाता, यह जाता ।
क्यों बिल का धाराम पँबस्ता ?

[गीत समाप्त होता है और नाबबे से मुञ्चरित होने वाले पायलों के स्वर सुनाई देते हैं ।]

बाबबहादुर—जिस्वी के परदे के पीछे जम्मीय के पापस बन रहे हैं । टारीकी को बीरकर गई फिरनें मेरे बिल में रोझनी करने को बड़ती बनी धा रही हैं । ऐसा रूप मेरी माँओं ने पहले नहीं देखा ऐसी मस्तानी बीया की तान बूँबस्यों की ऐसी सुरीली घाबाब पहले नहीं सुनी ।

[नाब बग्न होता है]

बाबबहादुर—जामोस हो गए हैं वे स्वर—लेकिन मेरे बिल की पड़कनें बड़ गई हैं । जो स्वरों की टानी तुम परदे के पीछे ही रहकर बजाती रही अपने सुरों को धीरे में उन्हें सुनता ही रहूँ । टारी जिन्बी एक रात की तरह धरम हो जाए ।

[कपमती मन्दिर से बाहर निकलकर जाती है । लीडिया उतरती है । बाबबहादुर कपमती पसके सामने धा कड़ा होता है । कपमती भीक पड़ती है । उसके हाथ से बाल छूट जाता है । बीया भी फिर बड़ती है ।]

बाबबहादुर—मैं मुसलमान हूँ धीरे सेंट-मुजा की बीयें हैं नहीं तो

कपमती—माप ब्रह्म देते ! साहब तो खूब है । माप यहाँ से

बाबबहादुर—बने बाहए !' नहीं तो पाप कहना चाहनी हैं । किस्मत ! किती ने तो इत कपबबउ से कहा होता 'बाहए' । सभी कहते हैं 'बाहए' । सभी सूटना-बीरी करना मेरी धारत हो गई है । ऐ हुस्त के बरिया गया बूँब बर

पानी भी मैं तुमसे नहीं पा चहुँना ।

क्यमती—मैं गरीब हूँ— क्या इसलिए भाप ऐसा दुस्ताहूष कर रहे हैं ? मैं क्यूँ हूँ हठो रास्ता छोड़ो ।

बाबबहादुर—भातना का सुसतान बाबबहादुर रास्ता छोड़ना नहीं जानता । बिच बापीके के बिच फूल पर मेरी नजर पड़ी है उसे मेरे गम का द्वार बनना पड़ा है । तुम रास्ता छोड़ने का हुजम किसके बरोसे पर देती हो ?

[बाबबहादुर घाने बड़्या है । बपपती कजर के बेंबी कुपी निकालती है । बाबबहादुर रक जाता है ।]

क्यमती—इसके बरोसे पर । गरीब टबपूतानिर्मा भी बपनी इजबट बचाना जानती हैं, तुमदान सभामय । बह फ्टार किसी भी घत्याचारी के कमेबे का खून पीने के लिए प्रस्तुत है और भाबबपकता पकने पर मेरे हृदय के रक्त में स्नान करने में भी संकोच नहीं करेयी । सोलो रास्ते से हटते हा या नहीं ?

बाबबहादुर—मैं तुम्हारे रास्ते का रोड़ा नहीं काँटा नहीं फूल भी नहीं छिफें फूल बनकर पड़ा हुमा हूँ । तुम मेरी इस्ती को मुचलती हुई बनी बाघो । (क्यमती के पैरों में धिर कुकता है) मेरे धिर को ठुकरती हुई तुम का लकठी हो । मैं भूल गया हूँ कि मैं गामबे का सुसतान हूँ । मैं तो तुम्हारे बरबाबे पर बड़ा हुमा मिबारी हूँ । (उठकर) बाघो मैं रास्ता नहीं रोखूँवा । मैंने घाब तक धीरज को बरब का खिलौना समझ है । घाब तक किसी धीरज की इजबट-घाबक का बपाल नहीं किया मैंने बपनी ब्वाहिष पर उग्रे के-रुमी से मसल जाता है, लेकिन घाब तुमसे द्वार मानता हूँ । तुम बाघो ।

[क्यमती पुकर की बीबें कठप्री है । बाबबहादुर बरर जाता है ।]

क्यमती—मुना का सुसतान घत्यग्न निर्दय है । जतने धनिक हिन्दू धीर मुसममान कुमारियों के बीबम ब्रष्ट किए हैं । घाब बह मेरे भाबे से भाब क्यों पया ? बह सुसतान है बह पुनम करे तो उसे रोकने बाबा कीन है ? घाब उसने बपनी बक्ति का प्रयोग क्यों नहीं किया ? क्या मैं इतनी दुख हूँ कि उसके हृदय में एक हस्की-सी प्याष बपाकर रह गई । बह पापम क्यों नहीं हो पठा । लेकिन—लेकिन मैं घाब बह क्यों सोच रही हूँ । घाह, घाब मुझे क्या

हुमा है—जैसे पहली बार मैंने पुस्तक को देखा है। चन्द्र को देखकर जैसे समुद्र में ज्वार उठता है उसी तरह भाव मेरे हृदय में तुफान उठ रहा है। यह क्या पिछा एकाग्रता में अब बल रही की उसकी धीरे उड़ता हुमा एक सख्त भावा—
भावा तो बापस क्यों जाता पया ?

[विचार-मग्न-सी बेटी यह जाती है, इस बीच बाबबहादुर फिर प्रवेश करता है।]

बाबबहादुर—आह तुम अभी तक यही हो ? मैं कहता हूँ, तुम नहीं जाओ। मेरी माँओं के भाये से बली जाओ। मैं इस हस्त की रस्ती को बरस्त नहीं कर सकता। तुम-बैठी पाक-शामल और मासूम लकड़ी को धू भी नहीं सकता। तुम राजपूत की लकड़ी हो न रानी बुर्जानवी भी तो राजपूत की बेटी है। मैं तुम्हारी इज्जत करना चाहता हूँ। तुम बहुत खूबसूरत हो और मुझे अपने ऊपर बनेवा नहीं है मुझे पानी बनने का मौका न दो। तुम जाओ। बिना सीढ़ियों पर तुमने कबल रबे हैं बगकी इजाजत करता हुमा मैं जिनकी के विल पूरे कर दूँगा। तुम जाओ।

क्यमती—बाऊँ ?

बाबबहादुर—हाँ भावा !

[क्यमती जाती है]

बाबबहादुर—तो वह नहीं और मैंने नाम भी नहीं पूछा। सुनो तो मो राजपूत का बेटी मो हस्त की बिचबी।

[क्यमती का प्रवेश]

क्यमती—कहिए पुस्तकाल ?

बाबबहादुर—तुम्हारा नाम क्या है ?

क्यमती—मुझे क्यमती कहते हैं ?

बाबबहादुर—तुम्हारा घर ?

क्यमती—वह सायने जो भोंपड़ी नजर मा रही है। लेकिन राजमहलों के रहने वालों की भोंपड़ी पर नजर क्यों पड़ रही है ?

बाबबहादुर—भोंपड़ी ! काय ऐसी भोंपड़ी में मैं भी रह पाता !

[बाबबहादुर का प्रत्याग]

कपमती—कैसी उलझन है ? वह गए तो जाएँ—मेरा मन क्यों उबास हो ? भ्रोंपकी घोर महान का मेरा हो भी जाए तब भी क्या हिन्दू धोर मुसलमान का मेरा हो सकेगा ।

[कपमती का प्रत्याग]

[पढ़-परिचयन]

दूसरा दृश्य

[स्थान—सारंगपुर के तालाब की मेड़ । एक मुकती मेड़ पर बँटी है उसने पास खाली बड़ा रखा है । चार मुकतियाँ सिर पर खाली पड़े रक्ते हुए आती हैं ।]

आने वाली मुकतियों में से एक—क्यों री कंचन बँटी-बँटी किसकी राह देख रही है ?

कंचन—कपमती की ।

[तीन मुकतियाँ आती जाती हैं]

आने वाली—तब तो तुम्हें जीवन भर राह देखनी पड़ेगी ।

[आने वाली भी कंचन के पास बैठती है]

कंचन—यह क्या कहती है मासती !

मासती—यह ही तो कहती हैं । मासबा का सुलतान उस पर सट्ट हो गया धीरे धरे अपनी बेगम बना लिया । आकर भी तो माचने वाली ही—बेगम बनने में कौन उरुकी इज्जत पटती थी ।

कंचन—माचना मास तो कहाँ है, उनका सम्मान करने से क्या बात बरस जाती है । कपमती है तो राजपूतानी ।

मासती—है तो राजपूतानी—तबिन राजपूतानियाँ माच-माकर पैसा नहीं

कमाती। स्वमती तो नाच-याकर अपने माँ-बाप का पेट भरती रही है—
धीरे उसको समयान् ने रूप का भण्डार दिया है, वह भी तो उसके बन्धे की
पूत्री है।

बंजन—कैसी बातें करती है मासती। बचपन से ही स्वमती को जानती
है। नाचने-गाने की प्रतिभा उसे प्रकृति से मिली है। रूप भी प्रकृति ने दिया
है—लेकिन रूप का व्यापार करना तो उसने कभी नहीं चाहा। कितने मठ
बासे घेरे इस फूल के चारों तरफ बककर लगाकर बसे गए—लेकिन क्या किसी
को उसकी एक पंखुरी को खर्च करने का साहस हुआ ?

मासती—हाँ हाँ तो हमेशा पहरेदारी करती थी न ?

बंजन—पहरेदारी करती थी उसकी धरत ! एक पूछो तो वह माँ-बाप के
बन्धीकर में पिन्डरे में फँसे हुए पक्षी की तरह व्याकुल थीर उवास रहती थी।

मासती—तब किसी के साथ क्यों नहीं गई ?

बंजन—शासना क्या इज्जतदार मारी का काम है ?

मासती—नहीं घरीर बेचना इज्जत का काम है।

बंजन—स्वमती कुबेर का खजाना लेकर भी अपने उन का सीदा नहीं
कर सकती।

मासती—लेकिन क्या तुम्हें नहीं मालूम कि स्वमती के पिता ने स्वमती
के शरीर के तोम के बराबर मोटा लेकर उसे मासता के मुमठान की बेचन
बन्दने की अनुमति दी है।

बंजन—नब तो स्वमती के पिता ने सोचा होगा कि स्वमती बीन-बीन
में-छोटो-मोटी बुचिनी होती।

मासती—तब कोई पत्थरों के तोम में भी उसे न खरीदता। तौरा तो
'कबक धरि-सी कामिनी' का ही होता है।

बंजन—लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि स्वमती अचानक ऐसी पठिता
कैसे हो गई ! वह तो मुझसे कहती थी मेरा बी बाहुता है कि मैं भी उसबार
बाँधकर मूठ करने पाऊँ। औ पुरुष लसचाई मजदों से मेरी तरफ देखते हैं
उनकी धाँसे निकाल लें।

मालती—लेकिन कबन यह दिन बढ़ा समायाच है। क्या पता कर्मती के दिन ने ही उसके संयम के बाँध को तोड़ डाला हो। कब भी हो कर्मती अपने माँ की खोभा की। उसका चला जाना अच्छा नहीं हुआ।

कबन—यह कहती हो मुझे तो ऐसी बेरमा हो रही है जैसी मणि पैदा होने पर साँप को होती है।

मालती—तो तुम भी जती जाओ कर्मती के साथ ही। बाजबहादुर का अस्त-पूर तो किसी भी मुबती का स्वागत करने को प्रस्तुत रहता है।

कबन—मुझे संजूर है—अगर तुम मेरे साथ चलने को तैयार हो।

मालती—मुझे क्यों सारयपूर की छारी मुबतियों को मे चला न ?

कबन—लेकिन कर्मती को पाने के बाद क्या बाजबहादुर किसी और स्त्री की तरफ देखेगा। बाजबहादुर ने धन से कर्मती को मोल तो लिया है लेकिन बेका सेना वह इतना बदसा सेयी। वह उसे अपने सर्गात के स्वरों पर इस प्रकार नचाएपी जिस प्रकार संविष्ट नाय को नचाता है।

[तीनों मुबतियों लिर पर आस से भरे हुए पड़े रहे हुए प्रवेश करती हैं]

एक मुबती—क्या बड़ी बँटी खोमी या पानी भरकर घर भी पसोयी।

[कबन और मालती अपने पड़े बठकर उठती हैं और पानी भरने जाती हैं—दोप तीनों मुबतियों दूसरी तरफ चली जाती हैं।]

[पद-परिवर्तन]

तीसरा दृश्य

[स्पष्ट—पाँव के किसे में कर्मती का रायनामार। बाजबहादुर पलंग पर बैठा हुआ है। कर्मती मखिरा का पात्र जरकर बैठी है।]

बाजबहादुर—(मद-बाज प्रहृष्ट करते हुए) लामो कर्मती। मीठ का प्यासा पिना हो।

स्वमती—ऐसा क्यों कहते हैं घाप ?

बाबबहादुर—जो लडा धारमी को अपने पथ की मार मुका दे वह प्रीत ही तो है स्वमती ! देखती तो हो हमारे चारों तरफ घाय मयी हुई है लेकिन तुम्हारे घाव में पड़े हुए बाबबहादुर को मानो उसकी लपटें सू नहीं पा रही । हम तुम्हारी समुद्र में कमबोर-ती नाम पर बैठे हुए बहे जा रहे हैं । तुम्हारे रूप धोर धाराब ने असमियत पर परबा बान रखा है । स्वमती तुम राजपूतानी हो न ?

स्वमती—हाँ इस बात का मुझे क्या बर्ब रखा है ।

बाबबहादुर—राजपूत की बेटो अपने प्रेमी को निकम्मा नहीं बनाती तुमने मुझे क्यों बेकार कर दिया है । तथा ही प्रीत के प्यासे पीठे हुए तो जिन्दगी नहीं जी सकती । वह बेसो सूटी पर टैबी हुई तसबार में बर्ब लग गया है ।

स्वमती—सम मी जाने दीजिए । तसबार बसाने के लिए बीरखिहू है धीर भी हुआरों सैक है । बीरखिहू सच्चा राजपूत है वह अपने स्वामी से विश्वासपात नहीं कर सकता धीर उसके धारमीन सैकिक उसके ह्दारे पर बान देने को तथा प्रस्तुत रहेंगे ।

बाबबहादुर—तसबार से कामम की बई छात्रतत तपी तक टिक सकती है जब तक उसके मानिक के ह्दारे में तसबार है । तुम तो जानती हो हम पर बुबबब ने

स्वमती—मैं कुछ नहीं जानता बाबुता । मैं तिकं तुम्हें चाहती हूँ—घेप संसार को धारकों के सामने पाने मी नहीं देना चाहती । घाप राजमहल के रहने बासे है धीर मैं म्येपकी में रहती मी । घापका राजमहल धबर काल का बप्पड़ साकर फिर पड़ेबा तो म्येपकी तो हमारा स्वायत करेगी ही । मैं अपनी ह्दया के बिच्छ राजमहल की बन्दिगी मनी तो घाप मेरे प्रेम की खातिर म्येपकी में रहना स्वीकार करेने इसका मुझे मरोता है । क्या एक म्येपकी मी—संसार हमारे लिए बहीं छोड़ेबा ? महु घराब नहीं मिलेगी तो क्या बाबदिवों का पानी मी न मिलेगा ? ये तरह-तह्द के भोजन नहीं मिलेगे तो क्या बवार की रोटिवा मी नहीं मिलेगी ? मकमरी बाबनी राउं होंगी तुम होये मैं हूँगी । धाराब नहीं

होयी तो क्या है बीशा में क्या उमसे कम नसा है ?

बाबबहादुर—धीर तुम्हारे स्वर में क्या बीशा की झुंकार स कम जाहू है । खेड़ दो बीशा की टान के साब अपने पाग । बोर्गे में डोड़ होने दो । टान धीर मान की सहर्से में टक्कर होने से जो मँबर पीसा हो उसम मेरी हस्ती की गाब को डूब जाने दो । खेड़ो गागा ।

कममती—(बोला पठाकर जाती है धीर बजातो धीर जाती है)

तूझे धाक प्रलय की वाली !

बाबबहादुर—अह क्या गा उठी तुम ?

कममती—कभी-कभी सत्य बीबारो को तोड़कर प्रकट हो उठता है । कोई पहचान प्राणो में बैठकर मेरे स्वरो को ब्रह्म गया है । (बाग लपती है)

तूझे धाक प्रलय की वाली !

धीवी धाए, बाबल धाए,

बिबली भीपल कम दिसाए,

बहर गहर सब बरसे पानी

तूझे धाक प्रलय की वाली ।

सूर्य सिये जम्बा धिप जाए,

सम्बकार में जगत समाय

एक जाएँ ताँते बीबानी

तूझे धाक प्रलय की वाली ।

धुम-धुम से जो बीत सुनाती

पर न कभी पूरा कर पाती

गा ले उसको

[पीत समाप्त नहीं होता कि बीच में ही एक जाती जाती है धीर कोलिय करती है ।]

बाधी—सरकार, सेनापति धाए हैं ।

कममती—इतनी रात को ।

बाबबहादुर—मही तो बीबत धीर ताकत का बवंड करने वाले लबाबों

सुलताना राणा-महाराजबाधों और बाहशाहों की निम्नणी है क्या ! (बाती से) मेक बो उम्हें ।

[बाती का प्रस्नान]

क्यमती—तो धब प्रीति की महफिम समाप्त होती है और राजनीति का प्रसाड़ा प्रारम्भ होता है ।

[बीला को लिए हुए क्यमती प्रस्नान करती है]

बाजबहादुर—राजनीति के प्रसाड़े में हार धाकर मैं प्रीति की महफिम में धा बैठ या लेकिन राजनीति क्या मेरा पीछा छोड़ेगी । मैं देखता हूँ वह मेरी हस्ती को बूल में मिलाकर ही दम लेगी । धब सब-कुछ कत्म होने वाला है । मुझमें क्या नहीं का ? मेरी बहादुरी का सिक्का धारे हिलुस्तान में माना जाता था । प्रबालक दुर्गावती ने मेरी शोहरत के बाँध को बाबलों से डक दिया । उसके बाप क्यमती ने हुस्न की जंजीरों से मुझे कस लिया । यह ऐसी सिक्कस्थ है बी कमी महमुस नहीं होती यह वह जहर है जो बाल सेना हुआ बाल नहीं पड़ता । मैं धीरे-धीरे मौत के मुँह से बाबिल हो रहा हूँ । अकबर बाबसाह ने धारमबाल को मेककर मुझ पर बढाई कर-बी है । मेरी पीठ उससे मोहा से रही है और मैं धराब और हुस्न के बरिया से बह रहा हूँ ।

[धीरसिंह का प्रवेद्य]

धीरसिंह—(कोनिद्य करके) सरकार धारमबाल ने किस पर पूरे बल से धारमबाल कर दिया है और एक तरफ की बीबार टूट गी नहीं है ।

बाजबहादुर—दुबमन ने रात में ही हमला बोले दिया है ।

धीरसिंह—बी ही रात में ही । धब किला हमारी रधा नहीं कर सकता ।

बाजबहादुर—जब निमि की बीबार ने बबाल दे दिया है तब बचने का रास्ता ही क्या है ? अफसोस है कि हथियारों की अंकार में मजा लेने वाला बाजबहादुर धीरस के पापी की सजुन मुजुन में पंसा हुआ है । यह क्या हो रहा है ? मैं इस दुनिया में धाँपी की तरह धाया का और कुलकुले की तरह का रहा हूँ । धीरसिंह यह मानना देख बीबाला बना देने वाला है । यहाँ कामे-कामे

सेतों में धफीम पैदा होती है, यहाँ की हवा में धफीम है। यहाँ की गाबगियों की साँसों में धफीम है। मुझे भी इन्होंने धफीमची बना दिया है। मेरी तलवार लाधो। क्यमती को बुसाधो। उस सफेद नागिन का फन मैं काट दारूपा।

[नेपथ्य में तोप चलने की आवाज]

बाबबहादुर—सुना बीरसिंह ! धम दुरमम दूर नहीं है। मैं रुक नहीं सकता। दुरमनों से बचसा देने के लिए जिल्ला रज्जना है। मैं जाता हूँ—लेकिन आठे आठे इन बरती की दूरों को जिन्होंने सिपाही को धफीमची बना दिया है तलवार के घाट उतारे जाता हूँ। मैं पागल था कि एक के बाद एक मोती नासी कमी को धपनी बराहिसों की माय में झोंकता गया। मैं किसी का मुताम नहीं बना था लेकिन क्यमती ने मुझे दुनिया की सब चीजों से दूर करके धपने हुस्त के बावसों से डक लिया। मैं धपने-भापको मूल गया। मैं जाता लेकिन क्यमती भी धम जिन्दा नहीं रह सकती।

[तलवार की म्यान से निकालता हुआ प्रस्थान करता है।]

बीरसिंह—मूर्ख सुमठान ! राबपुत बासा के सतीत्व का मोल कम नहीं है—बाहे बह नरंकी ही क्यों न हो। क्यमती गरीब भाप की बेटी है तमी लो धम देकर सुमठान ने उसे करीबकर बेगम बना लिया। लेकिन उमने रूप की ज्वासा में इस पलके को मूल बासा। बह क्यमती की जान सेने को प्रस्तुत है लेकिन मैं उसे मरने नहीं दूँगा। बाढें उसे बचाढें।

[प्रस्थान]

[पर-परिवर्तन]

घोषा दृश्य

[स्थल—घाबमजान के डेरे के बाहर। बाबबहादुर बीर फलका एक लो साधी—दो राबपुत जान बड़ता है—दोनों डेरे के बावने इधर]

रहे हैं मानी किसी की प्रतीक्षा में हों । समय—रात ।]

प्राबमजान—इतनी प्राधानी से माँहू का किता हमारे हाथ या आया इसकी मुझे भी उम्मीद न थी बिजयसिंह !

बिजयसिंह—असंभव ही यह एक आश्चर्य की बात है । बाबबहादुर कायर नहीं है न जाने क्यों वह अपने पुरुषार्थ को अपनी शक्ति को भूल बैठा है ?

प्राबमजान—सुना है कमती की जबसूरती ने उसे मरहोश कर दिया है ।

बिजयसिंह—निस्संदेह, कमती के रूप-मुख की चर्चा घारे मामला में है । वह न केवल अभिन्न सुन्दरी है बल्कि एक अष्ट मायिका एवं निपुण नर्तकी भी है ।

प्राबमजान—बाबबहादुर पालिया का भी हुबम है कि मामला को फलतः करके कमती को उनके सामने हाजिर किया जाए ।

बिजयसिंह—(ताने के साथ) सम्राट् साहित्य और कला के प्रेमी को हैं । उनकी राज-सभा के एक रत्न तानयेन तो हैं ही कमती के पहुँच जाने से सोमा और भी बढ़ जाएगी लेकिन कमती को सम्राट् की राज-सभा की नर्तकी बना सकना संभव भी है इसमें मुझे सन्देह है ।

प्राबमजान—बाबबहादुर और साहूबाहू धक्कर दोनों में से एक को पसन्द करने को कहा जाए तो एक नाचने वाली—दीनत से पसन्द का सीरा करने वाली—नाचने वाली—क्या बाबबहादुर को पसन्द करेगी ?

बिजयसिंह—धीरठ—जाहे वह नाचने वाली हो—रिस का सीरा एक बार करती है ।

प्राबमजान—एक बार करती है—कमती की शिन्दनी में वह 'एक बार' अभी नहीं आया है ।

बिजयसिंह—नव वह बाबबहादुर के हरम में किसलिए और किस तरह या गई ?

प्राबमजान—उसके बालदेन का लालच धीरे उसकी बचनी बेलों ने बे रहुमी से उसे सा पटका माँहू के राजमहल में ।

बिजयसिंह—ऐसा सोचने का कारण ?

धारमज्जान—आ प्यार करना है वह अपने प्रमी को अपना पासगू पंजी नहीं बनाता। वह उसे रात-दिन धरम धौर संघीठ के लसे में मस्त रखकर उसके फजों की तरफ स ब-अबर नहीं कर देता। वह उसकी जिन्दगी को ठाकत बनकर पाठा है—बहोती नादानी धौर कमजोरी बनकर नहीं पाठा।

विजयसिंह—तो आप समझते हैं कि क्मपती बाजबहादुर की निष नहीं धनु है ?

धारमज्जान—बैरक दुखन है। दोस्त होते तो वह उसके साथ सिपाही की पोशाक में—बोड़े पर बैठकर ठलवार बसानी हुई मीराने रंग में कहर बनकर तड़पती हुई नजर धाली—न कि रजुल-मुजुल की हुन पर उस बाहरीसे साथ को नचाने में ही मद्यमूम रखती।

विजयसिंह—तो सम्राट् धरबर के दरबार में जाना वह पदम करेवी इसका भी क्या निरूप ?

धारमज्जान—इसमें मुझे जरा भी धक नहीं है। वह लम्बे मानी में धपने फन की इबाइठ करने वाली है। जिस्मानी स्वाहियों से नहीं ऊपर। ऐस रासु के लिए हिमुस्तान में सबसे बन्धी जयह है—बादशाह धरबर का दरबार को धानसेन की धान से नूबता रहता है। बादशाह अपने दरबार में हर फन की माहिर धम्मियत को इज्जत देना चाहते हैं।

विजयसिंह—धौर अपने धन्त-पुर में मारत भर की प्रत्यक धनिध सोन्धर्न पबी बुनती को अपने विधास का धामना मनाना चाहते हैं।

धारमज्जान—बामोच तुम बादशाह धामिमा की तीहीन करते हो।

विजयसिंह—सिपहमानार धारमज्जान ! रासपूठ सच बोलने में यम से भी नपनीठ नहीं होता। हमने बादशाह की तीहीन का प्रयत्न नहीं है—यह एक बन्दाई है। क्या सम्राट् ने अपने राजमहल में धनक राजधरानों की राज-कुमारियों को धरम बनाकर नहीं रखा ? मैं उन्हें देखता नहीं धममता—धारमी भी नहीं।

धारमज्जान—क्या समझते हो ?

विजयसिंह—जो धममता है उसे बवाल पर नहीं माना चाहता।

धारमज्ञान—बसोंकि जानते हो कि धारमज्ञान की तलवार बरान काट लेपी ।

विजयतिह—जब तक हाथ में तलवार है कोई मेरी बरान नहीं काट सकता । एक क्या इबार धारमज्ञान मेरी छाया को भी नहीं छु सकते ।

धारमज्ञान—बबतमीन राजपूत तुम्हे मीठ का चीर नही है ।

[विजयतिह तलवार निकालता है]

विजयतिह—बरान बन्द करो घीर तलवार निकालो ।

[इसी समय एक मुसलमान सैनिक धाकर धारमज्ञान को कोलिय करता है । फिर तलवार निकालकर कड़ा हाता है ।]

सैनिक—तमवार म्यान में कीविए ।

विजयतिह—राजपूत को तमवार एक बार म्यान के बाहर धाकर रक्त-यथा में स्नान किए बिना म्यान में नही जाती ।

धारमज्ञान—(तलवार निकालता हुआ) विजयतिह मेरी तलवार को तुम्हारी तमवार की खुमीती मखूर है लेकिन यह बबह तमवारों का करतब विधाने के लिए भीरु नही है । तुम राजपूत हो—घीर राजपूत नमक का कर्म धरा करता है । दुस्मन के भी पीठ में छरी नहीं खुमाता । सामने धाकर छापी पर नार करता है—या जेला है ; वही तुम कापछाइ धासिया के धापी को हेखिबत से धाए हो—बपी से स्वामी का नमक खाया है । धसे धरा करता है । हम धापस में लककर धाप खुदकुसी तो करने ही लेकिन दुस्मन को भी काववा पहुँचाये ।

[विजयतिह तलवार म्यान में करता है]

विजयतिह—बीवन में प्रथम बार वह तलवार बिना खून लिए अपने म्यान में जा रही है । इसलिये यह अपने म्यान में कैबीन खोपी ।

धारमज्ञान—इसकी कैबीनी बूर करने के बहुत मीके मिलेने विजयतिह । (आगत सैनिक से) तुम क्या खबर लाए हो ?

सैनिक—बाजबहादुर हाथ न धा सका—लेकिन कबमती मीहू के मखून में ही है ।

प्राधमज्जान—रूपमती माँडू के महल में ही है। वो अब बिड़िया उड़ने न पाए। इसका इन्तजाम रखो। साथ ही यह भी खयाल रखो कि उसे कोई ठकभोक न हो। रूपमती को बिरफ्तार करने के माने हैं बाबबहादुर को बिरफ्तार कर लेना।

बिजबसिंह—वो कैसे ?

प्राधमज्जान—मणि बाला साँप मछि की तमास करता हुआ उसके पास घा हो पहुँचना है। (सैनिक से) बाघो रूपमती के घायम का इन्तजाम करो और उनसे कहो कि प्राधमज्जान उनसे मिलना चाहता है।

सैनिक—बो हुनम !

[सनाम करके प्रस्थान]

प्राधमज्जान—(बिजबसिंह से) अब हम भी एक-दूसरे से खसत हैं। मुझे बेसता है रूपमती में कितना प्य है—कितनी राजपूती है और कितनी ख्यालियत है।

बिजबसिंह—हूँ ! वो आप बहरीभी नायिन के बिल में हाब बाभना चाहते हैं।

प्राधमज्जान—बेफक ! प्राधमज्जान पर साँपिन के काटे का बहुर नहीं चढ़ता।

[कहता हुआ चला जाता है]

बिजबसिंह—ममी ठक साँपिन से पाला ही नहीं पड़ा है, सिपहसासार। इतने दिब बाबबहादुर की बाहरबिवायी में बन्द रहकर भी रूपमती पालतू साँपिन नहीं बनी है बिलके बहुर के दाँठ टूट गए हों। यह बिभासी कुठा—क्या करेया—इस पर निमाह रखनी ही पड़ेगी।

[प्रस्थान]

[पद-परिवर्तन]

पाँचवाँ दृश्य

[मीनू के महल में कमली का कमरा । उस की सजावट सुबहि घोर कमल-पुष्प है । संगीत एवं नृत्य से सम्बन्ध रखने व नै प्रतापन भी रहे हुए हैं—किन्तु हैं कुछ तितर बितर से । समय—संध्या । कमली धायल प्रकृति में अम्या पर पड़ी हुई है । बीरसिंह पास हरे बैठे हैं ।]

बीरसिंह—आप क्या बुट्ट ।

कमली—बुट्ट ! किटना कठोर शब्द है यह बीरसिंह ! उनके प्रति ऐसे शब्द का प्रयोग न करो ! इस ठीर की गोक मेरे कलेजे में चुभती है ।

बीरसिंह—आपके कलेजे में ! क्या कह रही हैं आप ?

कमली—ठीक ही तो कह रही हूँ ।

बीरसिंह—उसने आपके प्राण रत्न का प्रयत्न किया था । वह आपको प्यार नहीं करता ।

कमली—उसकी तसवार का नाव मुझकुटाकर कह रहा है वह मुझे सचमुच प्यार करते थे—प्राणपथ से चाहते थे । प्राण भी चाहते हैं । जिन्होंने मेरे लिए राज्य-सम्पत्त गँबाया—सर्वस्व माघ करवाया किसके लिए, एक गायिका के लिए । एक गर्तकी के लिए ।

बीरसिंह—केवल गायिका—केवल गर्तकी ।

कमली—नहीं तो क्या क्षमिय बासा ! तुम क्षमिय हो और इसीलिए तुम्हारी नजर मेरे अविश्व पर जाती है—सचि तुम सोचते हो कि कमली ने क्षमिय-शुभ में आग मिया है—किन्तु बीरसिंह—केवल किसी शुभ में अम की लेने से ही उस कम के सम्पूर्ण गौरव और उत्तरदायित्व में उनका भाग नहीं हो जाता । मुझे सबकुछ वे कम दिया—सरीर में स्फूर्ति ही सही के प्रति हृदि प्रदान की—मेरे माता-पिता ने मेरी इस प्रकृति-शक्त प्रतिभा को परमा उठे सम्पन्न और सम्पन्न की सारा पर बढ़ाकर साफ किया और बाजार में बेच दिया । भरपूर कीमत पाई ।

बीरसिंह—आपके पिताजी ने अविश्वोचित कार्य नहीं किया ।

कवयत्री—अभियोचित चाहे न किया हो—मनुष्योचित तो किया ही । मैं नाचती थी—मैं गाती थी । यह संसार की चर्चा का विषय बन गया था । जिन्हें धरम ब्राह्मणत्व और क्षत्रियत्व पर धरिमान था उनकी भाँसों में उपेक्षा-धर हेतना एवं बुद्धा के धरर मैंने पढ़ है । मैं कला के लिए धरपन क्षत्रियत्व को विलासिन देने को तयार थी । मैं कला के लिए जीना चाहती थी—धीर कला के लिए ही मरना ।

धीरसिंह—धीर कला के लिए ही तुमने बाबरबहादुर को धरान्तसमर्पण किया ।

कवयत्री—मेरे लिए जीवन स बड़ी वस्तु है कला धीर कला से मैं बड़ी वस्तु है प्रेम । प्रेम पर मैं कला को भी न्योछाबर करते को प्रस्तुत थी धीर हूँ ।

धीरसिंह—बह प्रेम धरपने बाबरबहादुर न देखा ।

कवयत्री—हाँ देखा । प्रथम दर्रत में जिस तरह शीता न राम को सकुलता में दुष्यत को धरपना हृदय समर्पित कर दिया था उसा तरह मैंने भी बाबरबहादुर को कर दिया ।

धीरसिंह—बह मुसलमान है यह भी

कवयत्री—(बाठ काटकर) यह भी मैं पान गई थी—कलु प्रीत के समार न जानि धीर धरम के धरारे नहीं है । बहो मनुष्य जाति एक है । हम दोनों इन्ताम के हमने धरपने प्राण एक कर लिए । न बह मुसलमान रजा न मैं हिन्दू । मैंने धरपना जीवन उनके धररणों पर चड़ा दिया । प्राय बह मेरे जीवन को निरुपेय करमा चाहते थे तो उनही इन्का धरधिकार था ।

धीरसिंह—मैं एक धरम पूछूँ ?

कवयत्री—पूछो ।

धीरसिंह—प्राय बाबरबहादुर को प्यार करती थीं तो उससे उनकी बीछा पूँ क्यों छीन ली—क्यों उसे धरपने कन-बात का बन्धी बना किया ?

कवयत्री—इसलिए कि मुझे धरन पर प्रेम के साथ जीय भी था । उम्होंने मेरे धरम को समझ नहीं । मैं धरपना नवाधरपन बन-धीलत—बीजब-विभास भेकर मेरी म्मोंझा में पहुँके धीर मुझ लरीब जाए । यही क्या प्रेम करन का तरीका है । उम्होंने धरन से धरत धरीर धरीबा धीर मेरे प्रेम ने उनसे बरभा लिया,

मैं उन्हें प्यार भी करती हूँ—उनसे बूढ़ा भी करती हूँ। और प्यार करती हूँ इसलिए बूढ़ा करती हूँ। बाबबहादुर ने समझा कि मैं उनसे बरबा से रही हूँ। उन्हें मुझ पर क्रोध था और क्रोध इसलिए था कि वह मुझे प्यार करते हैं।

[बाबमखान का प्रवेश। साथ में दो सैनिक भी हैं]

बाबमखान—किधर है कमती ?

बीरतिह—(तलवार तानता हुआ) यही है बाबम !

[बाबमखान भी तलवार तानता है]

कमती—आप्त बीरतिह ! आप बाबमखान ! कमती जा रही है। उसके लिए रक्त-पात प्रतापक्षम है।

बाबमखान—कहाँ जा रही हो कमती ! तुमको तो रिस्ती का दरबार याद कर रहा है।

कमती—इसीलिए तो मैं अपनी प्राय में स्वयं बलकर भस्म हो जाना चाहती हूँ। चलने और चलाने का खेल मैंने एक बार खेल लिया—एक प्रायमी के साथ खेल लिया। इस खेल को मैं पेला नहीं बनाना चाहती।

बाबमखान—लेकिन शार्हसाह प्रकट बला के पारकी हैं—उन्होंने प्रायमी घोहरत मुनी है और वह चाहते हैं कि तानसन की तरह प्राय भी रिस्ती के दरबार में कला को पेस करें।

कमती—कमती और तानसेन में भगुर है—बाबमखान।

बाबमखान—बया ?

कमती—बही कि वह पुस्य है और मैं नापी।

बाबमखान—कला की बुनिया में बर्ष और औरत का फर्क नहीं।

कमती—नहीं होना चाहिए—लेकिन है। इच्छा उस ऊँचाई तक नहीं पहुँच पाता वहाँ स्त्री पुस्य का अस्तर समाप्त हो जाता है। सम्राट पुस्य है—श्रीशर्व के प्रति जनकी पावशित है। मैं जान-बूझकर तो जान में नहीं जँप सकती।

बाबमखान—लेकिन मुझे तो सम्राट की आज्ञा माननी है।

बीरसिंह—मेरे जैसे जी घाय इनको दिखनी नहीं से बा सकेंगे ।

घाबरमन्त्राण—मैं इनकी मर्जी के लिसाफ तो इन्हें नहीं से जाऊँगा । घाबर
नाम इस्माक है—बहु कमती घोर बाबरबहापुर के जयबान से बिलबाड़ नहीं
कोना घोर सभ्राद् भकबर तो इस्माक से भी ऊपर परिणत है । बहु बुद्धन की
भी बत्र करते हैं । बहु बाबरबहापुर को बिम्बा रचना बाहुत है—माँहू के नबाब
की हुमियन से सतकी इस्मत करता बाहुत है । बहु कही भी हों उन्हें खोब
साता होगा ।

रपकती—क्या कहा—घाय उन्हें सोजेंगे ।

घाबरमन्त्राण—बेधाक उन्हें खोबरकर घायका मास घायक हुवात कर दिया
पाएगा ।

कमती—तब कमती भी बिम्बा रहेगी । बिल घाबरवी के मेरे कमती म
धुपी योंकी है मैं उनके रास्ते के कति माक कहेगी । मैं बिडैगी । बीरसिंह, मैं
बिडैगी । घाबरमन्त्राण मुझे बचावो—मैं बिडैगी ।

घाबरमन्त्राण—घाय कर जिएँगी । मुझे तो पता ही नहीं बा कि तुम
घायन हो नहीं तो हुकीम का घाय ही याना । मर घब इन्जाम हा बाएगा ।
बीरसिंह—घाय इन्हें हुनर करने में घाबरम म बिटाइए—मैं इनके इन्जाम का
इन्जाम करता हूँ ।

[सेलिकों सहित बाला है]

बीरसिंह—(रपकती से) क्या घायने घाबरमन्त्राण का मरोमा कर दिया ?

कमती—कमती घोर के बर तक बाएगी ।

बीरसिंह—घोर नूट तो गई तो ।

कमती—कमती अघिय-बामा है ।

बीरसिंह—ता कभी-कभी तुममें आत्र-सत्र भी आमता है । मुझे यह तुम-
कर मन्तोप हुआ । फिर भां तुम घबया हा—गारन हो घोर यह यवन-ममुदाय
खूबार भेड़ियों से कम नहीं है । मुझ बिम्बा इानी है ।

कमती—तुमको भी मरो बिम्बा होनी है । क्यों ?

बीरसिंह—मरी में हुबने बाये घनरिचित के लिए भी कहां-कहां जाव

पढ़ती है, रूपमती !

रूपमती—अपरिचित के लिए । तब ठीक है । तब तुम मुझे सहारा दे सकते हो । मुझे तो बसो दूसरे कमरे में ।

[बीरसिंह सहारा देकर रूपमती को ले जाता है]

[पड़-परिवर्तन]

छठा दृश्य

[स्थान—मंडिरुप से कुछ दूर प्रातमकाल की छावनी के निकट मार्ग । रास्ते पर कोई बस-किरा नहीं रहा है । समय—संभ्रा । प्रातमकाल में बस-कुत्र साती है । एक तरफ से बिजयसिंह आता है दूसरी तरफ से बीरसिंह । दोनों एक-दूसरे को घूरकर देखते हैं ।]

बीरसिंह—इस तरह क्या देखा रहे हो ?

बिजयसिंह—मैं तो तुम्हें पहचानने का बल कर रहा हूँ लेकिन तुम मुझे क्यों घूर रहे हो ।

बीरसिंह—मैं भी तुम्हें पहचानना चाहता हूँ ।

बिजयसिंह—तब पहचाना मुझे !

बीरसिंह—तुमने मुझे पहचाना ?

बिजयसिंह—क्याचित् दोनों ने दोनों को नहीं पहचाना ।

बीरसिंह—लेकिन तुम्हारी पीछाक से पता पड़ता है कि तुम मुगल सेना के कोई अधिकारी हो ।

बिजयसिंह—धीर तुम मीठू की सेना के कोई ऊँचे अधिकारी जान सकते हो ।

बीरसिंह—ठीक ! मैं तेनादि हूँ ।

बिजयसिंह—हूँ !

बीरसिंह—हूँ क्या ?

बिजयसिंह—यही कि बाबरबहादुर है मुसलमान और उसका सेनापति है ?

बीरसिंह—हूँ ।

बिजयसिंह—हूँ क्या ?

बीरसिंह—मही कि दिल्ली का सम्राट है मुसलमान और उसके बनेक सेनापति और अधिकारी सेना है हिन्दू ।

बिजयसिंह—अभिय ।

बीरसिंह—स्वाधीनता और अपनी धान के लिए प्राण देने वाले ।

बिजयसिंह—अपने देश को अपने हाथों से बाँबीरों में कसने वाले ।

बीरसिंह—हूँ ।

बिजयसिंह—फिर हूँ ।

बीरसिंह—हूँ ।

बिजयसिंह—मह हूँ—बहुत भयंकर है ।

बीरसिंह—हूँ ।

बिजयसिंह—इस हूँ का बूँदट खोसना पड़ेगा ।

बीरसिंह—बूँदट खोसने का रिस्ता होगा तो बूँदट खुसेगा

बिजयसिंह—तो रिस्ता प्राय ही हो जाए ।

बीरसिंह—देखो तुम राजपूत हो ।

बिजयसिंह—क्यों नहीं ?

बीरसिंह—राजपूत बोला मही देता ।

बिजयसिंह—मगर वह मनुष्य है तो ।

बीरसिंह—तो तुम मनुष्य हो ?

बिजयसिंह—मनुष्य बनना चाहता हूँ ।

बीरसिंह—कैसे ?

बिजयसिंह—अपनी हज्ज का स्वामी बनकर ।

बीरसिंह—हूँ ।

बिजयसिंह—हूँ—मज इस हूँ का धर्म बढगाएए ।

जनसहिह—महाराणा ! छोटे से बूँदी बुर्य को विषय करने के लिए इतनी बड़ी प्रतिज्ञा करने की क्या आवश्यकता है ? बूँदी को छसकी बृष्टता के लिए बम्ब लो दिया ही जाएगा लेकिन डाढ़ा लोग कितने धीर हैं चौहानों का इति-हास उनके प्राणों को उत्तेजित करता रहता है, युद्ध करने में वन से भी वे नहीं डरते । वे यद्यपि संख्या में कम हैं किन्तु अपने पहाड़ी प्रदेश में ब्रूव सुरक्षित हैं । इसमें सन्देह नहीं कि अन्तिम विषय हमारी होयी, किन्तु यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि इसमें कितने दिन लय चार्पे। इसलिए ऐसी सीपख प्रतिज्ञा धाप न करें । सम्पूर्ण मेवाड़ धापके इसारे पर मरने-जीने के लिए प्रस्तुत है । धापके प्राणों का मुख्य उसे स्वर्ग-सिंहासन से भी अधिक है । कुवेर के वन से भी ज्यादा है । धापकी इस प्रतिज्ञा की बात सुनकर सब बपह धसान्ति के वाकल जा चार्पे धीर से राजपूत बंधों में जो भयंकर बैमनस्य की ज्यादा बस उठेयी वह कुन्दाए न कुम्भेयी धीर उबकन नाम उठार्पे विवेची लोक धाण्डीय सम्पदा के धानु । इसलिए धापसे मेरा बन्न विवेकन है कि धाप मेवाड़ पर दसा करके बहुसौड-बंस पर लख जाकर, राजपूत जाति के हित-साधन के लिए धीर भारतीय स्वतन्त्रता की संकल-कामना के लिए, अपनी इस कठोर प्रतिज्ञा को धापस ले र्छे ।

महाराणा—धाप यह क्या कहते हैं, सितापति, क्या कमी धापने सुना है के सूर्यबंस में पैदा होने वाले पुत्र्य में अपनी प्रतिज्ञा को धापस दिया है ? यहारजा बधरण का उवाहरण हम लोगों के सामने है 'मरण जातें, पर बचन । जाईं यह हमारे जीवन का मुख मन्त्र है । जो तीर तरकस से निकलकर, ज्मान पर बड़कर सूँ मया उसे बीच से ही नहीं सौटाया जा सकता । मेरी प्रतिज्ञा कठिनाई से पूरी होयी यह मैं जानता हूँ धीर इस बात की हाल के युद्ध । पुष्टि भी हो चुकी है कि हाड़ा जाति बीछ्या में हम लोगों की बनेवा किठी कार हीन नहीं है फिर भी महाराणा साबा की प्रतिज्ञा वास्तव में प्रतिज्ञा है ह पूर्ण होनी चाहिए ।

[नेपथ्य में धान]

तोड़ मोतियों की मत्त माला ।

ये सागर से रत्न निकाले
 युग-युग से हैं मए सँभाले ।
 हमसे बुनियाद में ढलियाला ।
 तोड़ मोतियों की मत्त माला ।

ये धाती में खेद कराकर
 एक टुप है हृदय मिलाकर,
 इनमें व्यर्थ खेद क्यों बाला ?
 तोड़ मोतियों की मत्त माला ।

माँ का नाम इसी माला से ।
 बच रे हृदय डेय-बाला से ।
 कर से पान प्रेम का प्याला ।
 तोड़ मोतियों की मत्त माला ।

इनमें कोई नहीं बड़ा है ।
 किमि ने इनको स्वयं पड़ा है ।
 तू क्यों बलता है मत्तमाला ?
 तोड़ मोतियों की मत्त माला ।

[बाले-माले चारखी का प्रवेश]

महारखा—तुम गा रही थीं चारखी ? तुम सम्पूर्ण राजस्थान को एकता की श्रृंखला में बाँधकर देश की स्वाधीनता के लिए कुर्बान करने का प्रारंभ दे रही थीं किन्तु मैं तो सब श्रृंखला को तोड़ने आ रहा हूँ । वो धान बासी जातियों में जमी बुझानी पैदा करने आ रहा हूँ ।

चारखी—यह पाप क्या कहते हैं महाराजा ? अपनी विवेकशीलता पर सबको विश्वास है । जिस दिन सेनापति घमण्डिह बूँदी के महाराज के पास मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करने का संदेश लेकर पहुँचे थे उसी दिन मैंने उन्हें संवेत किया था । उसके बाद जब मेवाड़ सेना पराजित होकर सीट घाई तो मैंने समझ लिया कि मेवाड़ और बूँदी दोनों ही देशों पर विपत्ति के

बादल मँडरा रहे हैं। घाब भी मैं घापसे घन्तिम घमुरोम करने घाई हूँ कि महाराणा घमम के फेर से यद्यपि घाब हाका सन्धि घौर घाबनों में मेवाड़ के सलत राज्य से छोटे हैं। फिर भी मे बीर हूँ। मेवाड़ को उसके विपत्ति के दिनों में सहायता देते रहे हूँ। यदि उनसे कोई बुष्टता बन पड़ी हो तो महाराणा उसे भूस बाएँ घौर राबपुत सक्तियों में स्नेह का सम्बन्ध बना रहने दें।

महाराणा—बारली। तुम बहुत देर से घाई।

घमपत्तिहू—बारली। महाराणा ने प्रतिज्ञा की है कि जब तक भूषी के बड़ को भीत न लेवे वह घल-बल ग्रहण न करे।

बारली—भुमाँय। (बुद्ध सौभकर) महाराणा में ऐसा नहीं होने भूँगी। देव का कोई भी भुमभित्तक इस विद्येय की घाम को फँसने देना पसन्द नहीं कर सकता।

घमपत्तिहू—किन्तु। महाराणा की प्रतिज्ञा तो पूरी होनी ही चाहिए।

बारली—उसका एक ही उपाय है। वह यह कि मही पर एक मिट्टी का भूँषी का नकली दुर्ग बनाया जाए। महाराणा उसका विघ्नस करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर लें—महाराणा क्या घापकी मेरा प्रस्ताव स्वीकार है ?

महाराणा—पच्छ घधी तो मैं नकली दुर्ग बनवाकर उसका विघ्नस करके अपने ब्रत का पालन करूँगा। किन्तु हाकाघों को उनकी उद्बुद्धता का पच्छ किए बिना मेरे मन को सन्तोष न होना, घैनापति। नकली दुर्ग बनवाने का प्रबन्ध करो।

[सबका प्रस्थान]

[पद-परिचर्चन]

तीसरा दृश्य

[बिताई के निकट एक अँपली प्रदेश में नकली दुर्ग का मुख्य दरवाजा।

महाराजा साक्षात् और सेनापति समर्पितह का प्रवेश ।]

समर्पितह—सापने दुर्ग का निरीक्षण कर लिया । ठीक बन गया है न ?

महाराजा—क्यों न बनता ! निस्सन्देह यह ठीक बूंदी-दुर्ग की है-बहुत मजबूत है । मच्छा अब इस पर चढ़ाई करने का बेत खोजा जाए । इस मिट्टी के दुर्ग को मिट्टी में मिलाते से मेरी प्रारम्भ को सम्भव तो नहीं होगा । सेनापति धनमान की बेरुमी में बर्ष की तरंग में प्रतिहिंसा के प्रारम्भ में जो विवेक-हीन प्रतिज्ञा मने कर जाती थी उससे छटकारा तो मिन ही आया उसके बाद फिर ठीके दिमान से सोचना होगा कि बूंदी को मेवाड़ की प्रचीनता स्वीकार करने के लिए किस तरह बाध्य किया जाए । प्रायः तक ऐसा नहीं हुआ कि मेवाड़ के महाराजाओं की मनोकामनाएँ पूरी हुए बिना रह गई हों ।

समर्पितह—निश्चय ही महाराज ! शीघ्र ही बूंदी के पठारों पर सीढ़ी-दिया का सिंहासक होगा । मच्छा अब हम लोग साथ के रख की तैयारी करें ।

महाराजा—किन्तु यह रख होगा किससे ? इस दुर्ग में कोई तो इमारत पक्क-प्रतिरोध करने वाला होना चाहिए ।

समर्पितह—हाँ बेत में भी कुछ तो वास्तविकता बानी चाहिए । मने सोचा है दुर्ग के भीतर अपने ही कुछ सैनिक रख दिए जाएँगे जो बन्दूकों से हम लोगों पर घुंसे बार करके । कुछ मच्छों ऐसा ही खेत होया और फिर यह मिट्टी का दुर्ग मिट्टी में मिला दिया जाएगा । मच्छा अब हम चलें ।

[दोनों का प्रस्थान और बीरसिंह का कुछ साथियों के साथ प्रवेश]

बीरसिंह—मेरे महानुर साथियों तुम बेत रहे हो कि हमारे सामने यह कौन-सी इमारत बनाई गई है ?

बहना साथी—हाँ, सरदार यह हमारी बग्नसूत्रि बूंदी का दुर्ग है ।

बीरसिंह—धीरे तुम जानते हो कि महाराजा प्रायः इस पद को जीतकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करना चाहते हैं । किन्तु क्या हम लोग अपनी बग्नसूत्रि का धनमान होने देंगे ? यह हमारे बंध के मान का समिद्ध है । क्या हम इसे मिट्टी में मिलाते देंगे ?

दूसरा साथी—किन्तु यह तो मकली बूंदी है ।

बीरसिंह—बिककार है तुम्हें ? मकली बूंदी भी इमें प्रायों से अधिक मिय है । महाराणा ने सोचा होया यहाँ से बूंदी काठ कोस दूर है । बूंदी के एक को उनक इस अपमान का पता भी नहीं लग पाएगा । छीसीधिया ऐनिक जिसीने की तरह इस मिट्टी के गह को मिट्टी में मिला देंगे । किन्तु जिस बरह एक भी हाड़ा है वहाँ बूंदी नर अपमान प्रासाली से नहीं किया जा सकता । धाय महाराणा भाषण के साथ देखेंगे कि यह खेल केवल खेल ही नहीं रहेगा । यहाँ की चप्पा चप्पा भूमि छीसीधिया और हाड़ाओं के खून से माल हो जाएगी ।

तीसरा साथी—लेकिन सरदार हम लोग महाराणा के पीकर हैं । क्या महाराणा क बिकर तलवार उठाना इमारे लिए उचिन है ? हमारा हाड़-मांस महाराणा के लक से बना है । हमें उनकी इच्छा में व्याघात क्यों पहुँचाना चाहिए ।

बीरसिंह—घोर जिस जग्मभूमि की धूम में खेलकर हम बड़े हुए हैं उसका अपमान भी कैसे सहन किया जा सकता है । हम महाराणा के पीकर हैं तो क्या हमने अपनी आत्मा भी उन्हें बच दी है ? जब कभी मेवाड़ की स्वतन्त्रता पर आक्रमण हुआ है हमारी तलवार ने उनके लक का बरना दिया है । घोर जब तक हम हाथो न तलवार पकड़ने की शक्ति रहेगी वह मेवाड़ की मान-रेखा के लिए प्रयत्नशील रहेगे लेकिन जब मेवाड़ घोर बूंदी के मात का प्रस प्राप्त हुआ हम चुपचाप मेवाड़ की बी हुई तलवारों महाराणा के चरणों पर रखकर बिना से लेंगे घोर बूंदी की घोर से अपने प्राणों की बलि देंगे । धाय ऐसा हाँ धबसर धा पड़ा है ।

पहला साथी—निश्चय ही जहाँ पर बूंदी है वहाँ पर हाड़ा है घोर वहाँ पर हाड़ा है वहाँ पर बूंदी है । कोई मकली बूंदी का भी अपमान नहीं कर सकता । जग्मभूमि इमें प्रायों से भी अधिक मिय है । हाड़ाबंध फोतार से बना है । धाय महाराणा को इन मिट्टी की बीवारों का सामना नहीं करना पड़ेगा बल्कि हाड़ाओं की बख-बेह का सामना करना पड़ेगा ।

बीरसिंह—निश्चय ही । हम लोग संजग में बहुत थोड़े हैं घोर हमारे पास मुकाबला करने के लिए उपयुक्त साधन भी नहीं हैं । हमारे पास केवल अपने

प्राण हैं और उन प्राणों की जन्मभूमि की मात-रक्षा के लिए बड़ा बेने की मदद चाह है। संसार देखेगा कि हम धर्म की सन्तानें अपने प्राणों में कितनी धाम लिए हुए हैं। हम झुम्ठे हुए बीपक की तरह मनककर धर्मकार में मिल जाएँगे। हम विजयी की तरह कड़ककर जगककर, आकाश का हृदय भीरते हुए पृथ्वी के अन्तस्तल में अपनी स्मृति की बरार को छोड़कर अन्तर्गत हो जाएँगे। अन्ध ! अब अपनी जन्मभूमि की प्रणाम करो।

[सब दुर्ग के द्वार पर अस्तक झुकते हैं]

बीरतिह—मेरे भीरो तुम धर्म-कुल के धंमारे हो। अपने बल की धामा को भीण न होने देना। प्रतिष्ठा करो कि प्राणों के रहते हम इस नकली दुर्ग पर मेबाड़ की राज्य-मठाका को स्थापित न होने देंगे।

लब लोय—हम प्रतिष्ठा करते हैं कि प्राणों के रहते इस दुर्ग पर मेबाड़ का धबा न फहराने देंगे।

बीरतिह—मुझे धाप लोनों पर अधिमान है और बूँदी धाप-जैसे दुर्गों को पाकर फूली नहीं समाठी। यह नकली बूँदी भी हमारे भारी बसिबान को नल्पना की धाँसी स देखकर मुचकरा रही है और बिच बूँदी में ऐसे मात के बनी पैदा होते हैं जय पर संघार प्राणीभाव के फूम बरसा रहा है। जमो हम दुर्ग रक्षा की तैयारी करें।

[सबका प्रस्वान]

[पद-परिवर्तन]

धीया हृदय

[स्वान—नकली बूँदी-दुर्ग का बन्ध द्वार। म्हारमला लामा और धनय-सिद्ध का प्रवेश]

म्हारमला—सूर्य बुझने की धापा। नकली दुर्ग के धास-धास की भूमि बीची

ही लाल हो उठी है जैसे कि साकाश का परिचय जोर ही रहा है। यह कैसी बरबाद की बात है कि हमारी सेना मकनी बूंदी के दुर्ग पर अपना भयानक स्थापित करने में सफलता प्राप्त नहीं कर सकी ! बीरसिंह और उसके मुठ्ठी-भर साथी अभी तक बीरतापूर्वक लड़ रहे हैं।

अमरसिंह—हाँ महाराजा हम तो समझते थे कि बड़ी-बड़ी में यह खेल खरम हो जाएगा लेकिन हमें बाघ के बिल्कल बूँदों जैसी बारों का मुकाबला करने के बखाम हाड़ाओं के अचूक निशानों का सामना करना पड़ा। यद्यपि मैं लोग यिलठी में बड़े हैं किन्तु इन्होंने बीबारों की आड़ में उपयुक्त स्थान बना कर हम पर गोमी धीरे धीरे बरसाना प्रारम्भ कर दिया। हमारी सेना इस अवांशित अचिन्तित धीरे साकस्मिक प्रहारों से भौंभकी हो गई। अब दुर्ग के भीतर के हाड़ाओं की कुछ-नामची समाप्त हो गई। आपकी प्रतिष्ठा पूरी होने में कुछ ही क्षणों का बिलम्ब है। दुर्ग की बीबारों में जहाँ-तहाँ धेर हो गए हैं और वे बराबारी होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

महाराजा—यह भी अच्छा ही हुआ कि हमारे इस खेल में भी कुछ वास्तविकता था गई। यदि हमें बिना कुछ पराक्रम दिखाए ही दुर्ग पर अपना भयानक पहराने का अवसर मिल जाता तो मुझे बरा भी समझोप न होता और सब कुछ तो मुझे बीरसिंह की बीरता देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं चाहता था ऐसे धीरे के प्राणों की किसी प्रकार रक्षा हो सकती।

अमरसिंह—यदि भी अब दुर्ग से अग्नि-बर्षा होते देखी तब मुझे कुछ आश्चर्य हुआ था और कुछ क्षणों के लिए सकेद भयानक पहराने का रोक दिया था। उसके पश्चात् मैं स्वर्ग दुर्ग में गया और बीरसिंह की उसके लक्ष्य के लिए प्रार्थना की। साथ ही उससे अनुरोध किया कि तुम इस अर्थ प्रयास में अपने प्राण न खोओ। तुम महाराजा के नीकर ही तुम्हें अपने बिल्कल इन्धियार न उठाना चाहिए। किन्तु उसने उत्तर दिया कि महाराजा ने हाड़ाओं की कुलीनी ही है। हम उस कुलीनी का उत्तर देने को मजबूर हैं। या तो बगम भूमि धीरे कुल के मान की रक्षा में प्राणों की बलि हमें दे देनी होगी या महाराजा को इस बिनेकहीन प्रतिष्ठा से विमुक्त होना पड़ेगा। अब तीसरा कोई

उस्ता नहीं महाराजा यदि हमारे प्राण लेना चाहते हैं तो खुशी से ले लें। लेकिन हम इतने कामर निर्भय और निष्प्राण नहीं हैं कि अपनी आँखों से बूँदी का सम्मान होते हुए देखें। मेवाड़ में अब तक एक भी हाड़ा है मकली बूँदी पर भी बूँदी की ही पटाका फहराएगी।

महाराजा—निश्चय ही इन शीरों का जन्म-भूमि के प्रति भावमान सहनीय है। यह मैं जानता हूँ कि इन लोपों के प्राणों की रक्षा करने का कोई उपाय नहीं। इतने बहुमुख्य प्राण लेकर भी मुझे अपनी प्रतिष्ठा पूरी करनी पड़ेगी। यह देखो पुर्व की उस दर में बड़ा हुमा बीरसिंह कितनी पूर्वी से बाण-बर्षा कर रहा है। परेसा ही हमारे संकड़ों से निकलें की टोली को प्राये बड़ने से रोके हुए है। बन्ध है ऐसे बीर ! बन्ध है वह माँ जिसने बीर पुत्र को जन्म दिया। बन्ध है वह भूमि जहाँ पर ऐसे सिंह पैदा होते हैं।

[वैपय्य में पाग]

यह देखो नम मुसकता है।

जले गए माँ के बीजाने
स्वर्ण-सीक में राज्य जमाने
जय माता है उसके जले—

जो निज शीघ्र बढ़ाता है,
यह देखो नम मुसकता है।

जिहवी छलधारों का पानी—
सिखता है उम्मत कहानी
उसकी होती समर जवानी—

जो माँ पर मिट जाता है,
यह देखो नम मुसकता है।

जले गए जिनको या जाना
सपा हुमा है जाला-जाला,
पर जाला भी समर जगजग,

बिरला ही दिखता है
वह देखो नम मुसफता है ।

[और का बनाका और प्रकाश होता है]

महाराजा—वह देखो धर्मसिंह पीले के बार से बीरसिंह के प्रास-पकेस
उड़ गए । बूंदी के मतवासे सिपाही सवा के लिए सो गए । अब हम बिजय-भी
प्राप्त कर सके । बाघो बुर्य पर मेवाड़ की पताका फहराओ और बीरसिंह के
सन को धार के साथ यहाँ पहुँचाया ।

[धर्मसिंह का प्रस्ताव]

महाराजा—आज इस दिवस में मेरी सबसे बड़ी पराजय सिपी हुई है
स्पर्ध के रत्न में प्रास किये ही निर्दोष प्राणों की बलि में ली ।

[पाले-पाले बारली का प्रवेश]

बारली—

वह देखो नम मुसफता है ।

महाराजा । अब तो आपकी धारना को धाम्ति मिल गई होगी । अब तो
आपने अपने धिर से कलक का टीका सो लिया । वह देखो बूंदी के बुर्य पर
मेवाड़ के सेनापति बिजय-पताका फहरा रहे हैं । वह सुनिए मेवाड़ की सेना में
बिजय-कुमुमि बज रही है ।

महाराजा—बारली ! क्यों इस पदचालाप से विकस प्राणों को तुम और
बुझी करती हो । न जाने किस बुरी साहस में मैंने बूंदी को अपने अधीन करने
का निश्चय किया था और अपने उस निश्चय को बही क्यों न समाप्त कर
दिया जहाँ पर कि मेवाड़ी सेना बूंदी की सेना से पराजित होकर आपस लौट
घाई ली । बीरसिंह की बीरता ने मेरे हृदय के द्वार कोष दिए हैं मेरी धाँकों का
पर्दा हटा दिया है । मैं देखता हूँ ऐसी बीर जाति को धाम्ति करने की धमि
साया करना पापमपन है । बीसा ही पापमपन बीसा कि धलाउहीन लिमबी
का मेवाड़ियों को अपना बुनाम बनाने की सामना में बा ।

बारली—सो क्या महाराजा इस नरसी बुर्य की धारधर्मजनक धमूठबुर्य
सखें-बटना के बाद भी मेवाड़ और बूंदी के हृदय मिलाने का कोई रास्ता नहीं

निकल सकता ?

[बीरसिंह के शव के घायल शत्रुसिंह का प्रवेश । शव को रखकर सब उठाने जाते जाते जाते हैं ।]

महाराजा—बादली ? इस शहीद के परछों के पास बैठकर (शव के पास बैठते हैं) मैं अपने शत्रुसिंह के लिए क्षमा माँगता हूँ किन्तु क्या बूंदी के शव तथा हाका बंध का प्रत्येक राजपूत आज की इस दुर्घटना को भूल सकेगा ?

[राव हेमू का प्रवेश]

राव हेमू—बयों नहीं महाराजा ? हम युग-युग से एक हैं और एक रहेंगे । आपको यह जानने की आवश्यकता थी कि राजपूतों में न कोई राजा है, न कोई महाराजा है । सब देश जाति और बंध की मान-रजा के लिए प्रास्य देने वाले सैनिक हैं । हमारी ससवार अपने ही स्वयं पर न चढ़नी चाहिए । बूंदी के हाका मुक्त और दुःख में सदा से चिन्ती के सीसीदियों के घायल रहे हैं और रहेंगे । हम सब राजपूत भूमि के पुत्र हैं हम सबके हृदय में एक ही उदात्त बात रही है । हम जैसे एक-दूसरे से प्यार हा सकते हैं ! बीरसिंह के बलिदान ने हमें जगम भूमि का मान करना सिखाया है ।

महाराजा—निरख्य ही महाराज ! हम सम्पूर्ण राजपूत जाति की ओर से हम शत्रु आत्मा के आगे अपना मस्तर झुकाएँ ।

[सब बैठकर बीरसिंह के शव के आगे प्रणत हैं]

[पटालोप]

यह मेरी जन्मभूमि है

पात्र-सूची

- कर्नल होम्स
एक अंग्रेज सैनिक बफर ।
मिस्त्र होम्स
कर्नल होम्स की पुत्री ।
रायसाहब सीताराम
एक अंग्रेज-मण्ड बेघ-श्रीही रस ।
गुलाम मुहम्मद
एक अंग्रेज मकत बेघ-श्रीही मुस्लिम ।
मनीहरनाथ
रायसाहब सीताराम का पुत्र ।
बली मुहम्मद
गुलाम मुहम्मद का पुत्र ।
बुधूत की मीढ़, सैनिक बल धारि ।

पहला दृश्य

[स्नान—कर्नल होम्स का कमरा । समय—शेपहर के दो बजे । कर्नल होम्स अपनी खोबो पोशाक पहन रहे हैं । कमरे की छत में लगा हुआ बिजली का पंखा तीव्र गति से घूम रहा है । कासेज से लौटकर बिजली-सी गति से कर्नल होम्स की २० बर्तिय लड़की मिस होम्स कमरे में प्रवेश करती है । कुछ बेचैन-सी भाव बहती है । बड़ी भूमताहट के साथ पुस्तकें घलमारी में फेंक देती है और एक धाराम-कुर्सी पर बस से पड़ पड़ती है ।]

मिस होम्स—ओह किंगी गरमी है ! मेरा तो सिर बकल गया !!

कर्नल होम्स—यही तो हम मुस्क में सराबी है । यहाँ की धाबोइया धारमी की काम करने की ठाकठ चीज लेती है । ऐसी परमी में भी हमें काम करना पड़ता है । तुम तो बेटी पसीने-पसीने हो गई हो । तुमसे कितनी बार कहा बेटी तुम कार में बैठकर कासेज जाया करो लेकिन तुम पैरस ही जाती हो !

मिस होम्स—पापा कार में बैठते हुए धर्म माहूम होती है । इस कड़ी परमी में कितने ही धारमी सड़कों पर पिटी बूटने नजर आते हैं कितने ही ऐसे लोय मिलते हैं जिनके बदन पर कपड़े नहीं हैं । सिर पर टोप तो क्या एक टोपी भी नहीं है । कितने ही ऐसे भिसारी बच्चे मिलते हैं जो एक पीसे के लिए एक-एक फर्नाब ठायों के पीछे बीड़ते बसे जाते हैं, पापा ऐसे लोयों के बीच में मोटर में बैठकर कैसे जाते ?

कर्नल होम्स—तुम्ह पर गांधी या लेनिन की छाया पड़ गई है । हाँ, यह तो तुने नहीं बताया कि घान कासेज से बकरी क्यों सीट घाई ?

मिस होम्स—कासेज के कटीब-करीब सर्मी स्टूडेण्ट्स की मर्जी की कि घान बमूठ में धामिस हुआ जाए । इस-बीस सड़कों ने कासेज में बैठना पसन्द किया बाकी बसे जाए । मैं भी जमी घाई ।

कर्नल होम्स—क्यों ?

मिस होम्स—इसलिए कि मैं अपने हिन्दुस्तानी भाइयों का दिल दुखाना नहीं चाहती थी। आप इस परमी में फीकी ब्रेस पहनकर कहीं जान की तैयारी कर रहे हैं ?

कर्नल होम्स—बूटों पर। आज कांग्रेस ने मिस्टर गांधी की विरसतारी के विरोध में जो पुसूस निकालना तय किया है कलक्टर साहबने उसे म निकालने का हुक्म दिया है और कांग्रेस ने हुक्म न मानने पर कमर कसी है।

मिस होम्स—तो इसमें आप क्या करने ?

कर्नल होम्स—दुबियायों के नीचे पर सरकारी हुक्म की पाबन्दी कराऊँगा। अगर सरकारी हुक्मों की बेइज्जती यह ली गई तो संघर्षों का राज्य यहाँ जैसे कायम रह सकता है ? अभी पुसूस निकलेया आम को बतसा होया जिसमें संघर्षी राज्य को सबाइ फेंकने के लिए लोगों की बहुकामा बाएया।

मिस होम्स—तो इसमें कानून के खिलाफ कौन-सी बात है। हिन्दुस्तानी लोग अपना हक चाहते हैं। वे प्राजादी माँते हैं।

[कर्नल साहब पूरी पौराणिक पहन चुके हैं और कमरे में बहल-कबमो करने जाते हैं।]

कर्नल होम्स—हक चाहते हैं। प्राजादी माँते हैं ॥ इस प्राजादी का मतलब क्या है ? तुम जानती हो ? बेटी हम अपने नहीं इन हिन्दुस्तानियों के अपने के लिए ही पाए हैं। हमारा पत्र इस देश में समन और कानून की हिकमत बत करने के लिए है। तुमने हिन्दी पढ़ी है। तुम जानती हो हमारे पाने के पहले यहाँ का क्या हाल था ? मुसलमान मराठे राजपूत ठग पिण्डारी बनैर ने लड़ाई, ठगी डकैती से मुस्क बरबाद कर रखा था। हमने उन्हें समन से रहना सिखाया है।

मिस होम्स—हमने उनकी शिम्ली घीन ली है। उन्हें दरपोक और नामर्द बना दिया है। समन और कानून की हिम्मत के नाम पर, तहरीब और तात्मीम के बहाने उनकी ननों म मोल का पानी बर दिया है। हमने धीरे-धीरे पहर दे-देकर उन्हें मोल के पाट पर पहुँचाया है।

कर्नल होम्स—तुम भी देना कइती हो बेटी।

मिस्स होम्स—हाँ मैं भी ऐसा कहती हूँ पापा ! धरमों के बनाए हुए इतिहासों को पढ़कर नहीं जानेज में जो नीजवान पढ़ते हैं उनके बेहूनों को उनके रज़न-सहन की देखकर कहती हूँ । वे बिदेसी कपड़ों में साहूबी अट में घबरे हुए टेमू अपने-आपको मानो खुवा समझते हैं लेकिन बिल्कुल अपने मुस्क की वीरत नहीं वे क्या इस्लाम हैं ? हमने इस देश के बन्दे जीन लिए तालीम ने लोगों की पन्बे करने की धारत पुझा बी वे नौकरियों के लिए दर-दर घूमने लगे सब हम उन्हें भी चाहे जैसे माफ़ गचाते हैं । मुगलों ने इस देश को चिर्फ़ फटाह किया वा मारत नहीं वा हमने इसे फटाह नहीं किया बल्कि मार डाला ।

कर्नल होम्स—तुम्हारी बातें मैं नहीं समझ पाता बेटो !

मिस्स होम्स—आप फौजी धारदयी हैं । आपने अपने दिमाग को धाबाद होकर सोचने देने की तकलीफ़ नहीं की लेकिन मैं भी महसूस करती हूँ साफ़-साफ़ कहती हूँ । मैं धरम सझकी हूँ उस धरम कीम की बिलने धाबादी के लिए अपने बाबसाह के सिर को कलम कर देने में पाप नहीं माना । हमें कबर करनी चाहिए उन लोगों की जो अपने मुस्क को धाबाद करना चाहते हैं बी दुनिया में इस्लाम बनकर रहना चाहते हैं । हमें मुगलों के इतिहास से कुछ सीखना चाहिए, वे यहाँ हिन्दुस्तानी बनकर रहे, यहाँ की बीतत को उठकर तुर्किस्तान नहीं वे गए, उहाँने यहाँ के बाधियों को अपने बराबर दरबा दिया । वे यहाँ एक जान हो गए । पापा क्या हम ऐसा नहीं कर सकते ? क्या हम हिन्दुस्तान की बरीबी दूर नहीं कर सकते ?

कर्नल होम्स—तुम्हारी तरह सभी धरम सोचने लगे तो कर्नल होम्स इंग्लैण्ड के किसी गाँव में मुर्खी पासते नगर आएँ । लंकासायर की फ़ैन्ट्रीज पर ठाने पड़ जाएँ । कल्पन के धासमान को छूने वाले मकानात मिट्टी में मिल जाएँ । अपने घर को बरबाद करके बुरतों के घर को-

मिस्स होम्स—धाबाद कैसे किया जाए ? यही तो धाप कहना चाहते हैं । हमें इतना नामच क्यों हो कि उसके लिए हमें ५ करोड़ लोगों को बाने-बाने के लिए मोहताज बनाया पड़े ?

कर्नल होम्स—गुम तो ठीक हिन्दुस्तानियों की तरह बाब करती हो ।

मिस होम्स—हिन्दुस्तानियों की तरह । मैं हिन्दुस्तानी नहीं तो क्या हूँ ?
 धर्म के बेटी हूँ लेकिन मैं अन्य हिन्दुस्तान में हूँ । यह मेरी सम्मति है ।

[राम साहब सीताराम का प्रवेश । सीताराम भी धाम ५० से ऊपर है ।
 धाम सहर के बनी-माने रहस्य हैं । हिन्दु-द्विती के लिए प्राण देने की निरन्तर
 घोषणा करते रहने वालों में हैं । सरकारी लोगों ने उनका प्रवेश और
 निषेध है ।]

कर्नल होम्स—आइए राम साहब सीताराम ।

[लोगों हाथ मिलाते हैं पास-पास कुर्तियों पर बैठते हैं । राम साहब
 कर्नल से क्या कहना पड़ेगा पोंछते हैं ।]

कर्नल होम्स—कहिए सहर की क्या हवा है ? कुसुम क्या निकलेगा ?

राम साहब—कुसुम तो निकलेगा ? लेकिन

कर्नल होम्स—लेकिन क्या

राम साहब—वही जो मैं प्रायः कह चुका हूँ । हम लोग धर्म के हुकूमत के
 बन्धन में हैं । ऐसी बात बने कि काप्रेसी विन्दनी भर कुसुम निकालने
 का नाम न लें । सब बात तो यह है कर्नल साहब कि मैं तो दिन से हिन्दुस्तान
 में धर्म के हुकूमत चाहता हूँ । जो लोग धर्म के हुकूमत से छुटकारा चाहते हैं वे
 कुसुम करने पर धामाशा हैं । पहर सब हार जापान एक धाम एक
 धर्म । उनके धामे धर्म की धर्मिता कैसे बनेगी ? मैं तो हिन्दुस्तान की
 मलाई के लिए ही धर्म का धाम चाहता हूँ । प्रथम धर्म में जाता हूँ क्योंकि
 धाम जानते ही हैं, मुझे धर्म बहुत-कुछ करना है ।

[सीताराम ऊठे होते हैं । कर्नल होम्स भी ऊठे होकर हाथ बिलते हैं ।
 राम साहब का प्रस्थान ।]

कर्नल होम्स—बेका बेटी इन्हीं लोगों की तुम बकासत करती हो ? इनकी
 धामा-

मिस होम्स—बड़े हमने भार जाता है । हमने इनकी इन्तानिबत को धर्म
 करनी के पहाड़ के नीचे बना दिया है ।

[एक ६० वर्षीय बुद्धलवान मत्ता का लखेर लम्बी बानी पर हाथ खेते

हुए प्रवेश ।]

कर्नल होम्स—माइए, हाजी गुलाम मुहम्मद साहब !

[दोनों पास बैठते हैं ।]

कर्नल होम्स—अमी-अमी राम साहब सीताराम महीं से गए हैं ।

गुलाम मुहम्मद—जी हाँ उनसे मुझकाठ हुई थी ।

कर्नल होम्स—क्या मुसलमान भी कुतूब में शामिल हो रहे हैं ?

गुलाम मुहम्मद—कुछ पढ़े लिखे बेबकूफ जिन्होंने कुछ स्त्री किताबें पढ़ ली हैं या कुछ बेकार और परीब लोग । अमीर मुसलमानों में से कोई भी काब्रेश का साथ नहीं देगा । मैं भी तो मैंने सोच रखा है कि इस बार काब्रेश को ऐसा सबक पढ़ाया जाए कि कुतूब की रुसम साब कोसिच करने पर भी फिर कभी मुसलमान उसके साथ न जाएँ ।

कर्नल होम्स—सुक्रिया । अब हम लोग चलें ।

[कर्नल होम्स और हाजी गुलाम मुहम्मद का प्रस्थान]

मिंस होम्स—(सहसा खड़ी होकर) कौसी बतरनाक साबिच है ! हिन्दू और मुसलमान अपने ही मुसक अपने ही नेखन के खिलाफ बैरियानी क्यों करते बसे हैं ? कुछ ठगवों कुछ खिलाशों और बैरियानी से कमारें हुई जायबाशों को कायम रखने के लिए । इस्लामिमत का सबसे ठेका खयाल है आबाशी सबसे पहली स्वाहिह है आबाशी सबसे प्यारी नीब भी है आबाशी; उसे बन्द दिक्को की खातिर ये बेच देना चाहते हैं । मैंने भी हिन्दुस्तान का भग्न खयाल है, क्या मेरा उसके लिए कोई फर्क नहीं । बाऊँ, धायर कुछ कर सकूँ ।

[फुर्ती से प्रस्थान]

[पट-परिवर्तन]

भूसरा दृश्य

[राम साहब के मकान का सामने वाला हिस्सा । स्वयं-सेविकाओं का एक बल जम्मा लिए पाता हुआ बड़ा रहा है । उनका पुत्र मनोहरनाथ बिस्मय-विभूषण-सा बहु दुःख देख रहा है ।]

स्वयं-सेविकाओं का बल—(तन्मिलित स्वर से)

हम भंडे का मान रखेंगी ।

बबल हिमालय की बौड़ी पर,
इसकी फहरावें की फर-फर,
इससे भूषित होया पर-भर,
पूजेगा धाजारी का स्वर,

हम प्राणों से प्राण भरेंगी ।

हम भंडे का मान रखेंगी ।

हमें रोऊँगे बाले प्राणें
बोली-पोले भी बरसावें,
हम ज्वाला को पले लबावें,
हँस-हँस मैं पर प्राण बड़ावें,

हम जननी की प्राण रखेंगी ।

हम भंडे का मान रखेंगी ।

धाजारी के गली पावै,
जमी बैरा को प्राण जपाने
प्राणें जननी का सन्तानें,
धाजारी के बल परवाने,

मन-मन में दुःखान भरेंगी ।

हम भंडे का मान रखेंगी ।

[पावै-गले बल का प्रबान]

मनोहर—नैसा प्यारा घीर पावन दृश्य है यह । मेरे छोए हुए प्राण भी

नामो करकेट बरतने लगे हैं। पाँचों के घाये भारत का बीरबभय घटीत नाचने लबा है। कहीं गया हमार पिरव-भ्यापी साभार्य ? घाब हमने घपने कन्नों पर पुसामी का कुपा तार रखा है।

[मोटर-डाइबर का प्रवेश]

मोटर-डाइबर—बाबू साहब मोटर तैयार है। रैस-कौसैं बसेबे न ?

मनोहर—घाब मैं नहीं जाऊँगा। मोटर को बैराज में छोड़ दो।

[मोटर-डाइबर का प्रस्थान]

मनोहर—यह है हमारा जीवन ! जिस समय इस नगर के हजारों पुषक-पुबतिपां नूड-नूबाएँ, बासक-बासिकारैँ राष्ट्रीय मन्त्रे के नीचे सरकारी घाब्रा की घबहैतना करते हुए, घपने हुरय-सभ्राद् महात्मा गाँधी के प्रति घपना घाबर घीर बिस्वास प्रकट करने के लिए जा रहे हैं, मुझे रैस-कौसैं जाने की सुप्पी पी। यही ठो कारण है कि हम पुताम हैं।

[बँयसे में से खानसामा का प्रवेश]

खानसामा—बाप तैयार है।

मनोहर—बाघो मैं घावा हूँ।

[खानसामा का प्रस्थान]

मनोहर—बाप तैयार है ! कौसा नूसित जीवन है हमारा। हमारे बिल में बेघ के लिए बर-घा पी दर नहीं है। घाब मेरे पाघ साबों की सम्पति है। मुझे घमुसब ही नहीं होता कि रैस घमान की घाप में बस रखा है ! पर बब किसी स्वतन्त्र बेघ के युवक के सम्पने बाठा हूँ ठो घेटी घाबैं नीकी हो जाती है। मैं घर्म के कमील में यड जाना चाहता हूँ। उस समय मुझे यह बन-सम्पति ऐस्वर्य घभिघाप जान पड़ता है। इन्होंने मेरे घाणों को बीब लिया है मैं घाब रैस के स्वर-मै-स्वर मिलाकर घाबादी का पीठ नी नहीं पा सकता।

[मित्र होम्स का प्रवेश]

मनोहर—घोहो, घाप है, मित्र होम्स ! घाब इपर किवर घूल पड़ी ?

मित्र होम्स—घक्कर घाप घूल किया करते ये घाब घैने घूस करने की ठान नी। घाब कौसी कुपी का दिन है घाई मनोहरतात। घाब घाबके

तीसरा दृश्य

[स्थान—मस्जिद के सामने का हिस्सा, कर्नल होम्स, मिस्टर सीताराम और मौलवी पुताम मुहम्मद का बातें करते हुए प्रवेश ।]

कर्नल होम्स—इस शहर में पहले कभी इतना घामदार जुलूस नहीं निकला । यह जानते हुए कि भाब बेम लाठी और मीठ का सामना करना पड़ सकता है लोगों का समूह उमड़ धाया है । गांधी के नाम में ही कुछ बाहू है । इससे जान पड़ता है कि अंग्रेजी राज्य की तरफ से हिन्दुस्तानियों के दिल फिर खड़े हैं ।

सीताराम—ऐसी बात नहीं है कर्नल साहब । यह तो भूके और बैकार भावों का मजमा है और इनमें भी हड़ता नहीं है । यह जुलूस तो बुझते हुए चिरग की धमक है । महारमा गांधी ने अपने ऊपर जो बार्मिकता का धांधारिमकता का पर्दा डाल रखा है उसी से कुछ लोग उनकी तरफ आकर्षित हुए हैं नहीं तो अंग्रेजी शासन के प्रति किसी को सिकापत नहीं है । मेरी तो ऐसी ही आरखा है ।

पुताम मुहम्मद—और धर्मी मस्जिद में से 'वा । अली' के नारे मचने लीये । ये लोग ऐसे भावों मानो ऊपर आसमान से बिजली गिर रही है । मानो नीचे से बसजसा आ रहा है ।

[पास ही से जाने की आवाज आती है]
हम आजादी के परवाने ।

हमने देखा है अजिपाला
अपनी और बुलाने वाला
देखा उसका हुस्न निराला
जाने घाम को गले लपाने ।
हम आजादी के परवाने ।

घाबें हमें मिटान जाने
हम पर तोप चलाने वाले
हम हैं आर मुदाने वाले

घाय, मर-मरकर बी जाने ।

हम आजादी के परबाने ।

कर्नल होम्स—यह तो एक गया ही बुसुस-सा बान पकठा है । सभी तुर्की टोपी पहने है । यह देखो न हाजी साहब आपकी मस्जिद में से टिड्ढियों के झुंझ की तरह निकल रहे हैं । उनके हाथ में भी तिरंगा ऋष्या है ।

मुताम मुहम्मद—मैं खुब हीरान हूँ कर्नल साहब । ये तो मेरे अपने भादमी हैं । किसी ने इन्हें बहकाया है । हम मुसलमानों में भी बपाबाबों की कमी नहीं है । लेकिन कोई फिज नहीं मैं उन्हें रास्ते पर बाठा है ।

[प्रस्थान]

कर्नल होम्स—रास्ते पर बाठा हूँ ? मैं सब समझता हूँ हाजी साहब तुम सब एक ही बँबों के बड़े-बड़े हो । मुझे ही बोधा देते हो । और राम साहब आपके भादमी

सीताराम—बी के घमी तक आप ही नहीं !

कर्नल होम्स—आप ही नहीं । तो आपने क्या खाक किया है ? बैसे ही आप रामबहादुर बन जाना चाहते हैं । आपका लीफों पर बसर ही क्या है ?

सीताराम—उन्हें किसी ने बहका दिया है ।

[कुछ सिपाही मधीनपन लेकर घाते हैं और उसे सड़क के बीच में खड़ी कर देते हैं ।]

कर्नल होम्स—तो फिर यह मधीनपन ही इन आबादी के बीबानों को होश में लाएगी । आप लीफ किसी काम न आ सके । इन लोगों को गुस्ताखी की सजा अपने-आप मिल जाती और

सीताराम—और सरकार बदनामी से बच जाती ।

कर्नल होम्स—आप भी खींट कर रहे हैं राम साहब । हमें सरकारी हुक्म को इज्जत रखना लाजिम है । संघेकी राज की घान को हम बच भी नहीं भुलने देना चाहते । सरकारी कानून को तोड़ने की कुर्त ! इसे ममर पशात किया गया तो बन्दी ही हम लोगों को बोटिया-बचना बाँधकर इन्दीय का रास्ता नापना पड़ेगा ।

[सड़क की दूसरी तरफ से आवाज आती है—'हिन्दुस्तान खिलावार हिन्दुस्तान हो आबाद महत्वा पायी की जय !']

कर्नल होम्स—तो वह जुलूस भा गया है। (एक सिपाही से) तुम जापो प्रीर जुलूस के नेता को समझाओ कि अंग्रेजी सरकार का हुकम तोड़ना बन्धों का खिस नहीं है। यह सड़क पर जो गधीनगन खड़ी है वह महज धमकी नहीं है वह एक बड़ी में धाम उभरने लड़ेगी। धाय लोग धपनी जिम्मेवारी को समझें। बेगुनाह लोगों के खून से इस सड़क की गिट्टियों को तर न करें।

[सिपाही का प्रस्ताव और मुताम मुहम्मद का प्रवेश]

मुताम मुहम्मद—बख्त हो गया सरकार। 'इस बर में धाव लम परी बर के चिरग से। धापनी साहबखारी उयसाहब के साहबखारे प्रीर मेरे छोकरे मे हमारें खिलाफ बयावत की है। हमने जो किसे बनाए वे वे मिट्टी में मिल गए। हमारें धमी धावभियों को उगहोंने पट्टाकर काप्रेस के जुलूस में शामिल कर लिया है। वे तीनों जुलूस में सबसे धाये हैं। सब धाप फयर भी कैंठे करार्ये ?

कर्नल होम्स—अंग्रेज दुष्टी पर यह नहीं देखता कि सड़क बार किस पर हो रहा है। उस बकल न कोई सड़क बाप है न नार्ड न बेरा न बेठी। यह धालें बन्द करके काम किए जाता है।

मुताम मुहम्मद—फिर भी उन्हें समझाने की कोशिश तो करनी चाहिए।

कर्नल होम्स—बकर, तुम उन्हें बुलाकर लाओ।

[कलेक्टर का प्रवेश कर्नल तथा सिपाही सेम्पूट बेते हैं]

सीताराम—धाव जैसे मेरी धाकों पर से परदा हट रहा है।

कलेक्टर—मिस्टर होम्स क्या हास है ?

कर्नल होम्स—धाव देख ही रहे हैं। मेरी लड़का ने भी बयावत का मर्या उठया है।

[मुताम मुहम्मद का मिल होम्स, बली मुहम्मद, प्रीर मनोहरलाल के साथ प्रवेश।]

सीताराम—कैसा सुन्दर हरम है। इन तीनों के बिहयों पर कैसा तेज है !
मिस देव में मिस होम्स-जी पुनी प्रीर बली मुहम्मद प्रीर मनोहर—कैसे पुन

हों वह गुलाम कैसे रह सकता है ?

कर्नल होम्स—मैं धीरे कमबटर साहब भी घाय तीनों बहादुरों से बहुत कुछ हैं धीरे आपसे इस्तेफ़ा करते हैं कि आप सोप पश्मिक को समझाएँ कि वे बुरात बन्द करके घर लौट जाएँ ।

मिस्त्र होम्स—हमें क्या करना चाहिए यह हम खूब जानते हैं ।

मजोहर—हम महात्मा गाँधी की इच्छत सरकारी हुनम से ज़्यादा करते हैं और सब इच्छत को रखने के लिए अपने प्राणों की कीमत देने को तैयार हैं ।

बली मुहम्मद—हम अपने खून के समुद्र में खून की मस्तनज को जुबा देंगे ।

कमबटर—मिस्त्र होम्स मेरी बात भी आप नहीं मारेंगी !

मिस्त्र होम्स—मैं आपको इस वक़्त नहीं जानने को मजबूर हूँ ।

कर्नल होम्स—बेटी !

मिस्त्र होम्स—जहाँ कर्नल होम्स ! इस वक़्त आप मेरे फ़ार नहीं हैं । आप सरकारी मशीन के पुर्णे हैं । मैं इस धनाये बेच की एक पुत्री हूँ । इस बेच में मैं पैदा हुई हूँ इसका नामक मैंने ज़ाया है, इसके लिए मेरा को फ़र्ज है यह मैं बधा कर रही हूँ । मैं इस राष्ट्र का र्ण हूँ । इसके सुख-दुःख मेरे सुख-दुःख हैं । इसकी बिन्दवी धीरे भीठ मेरी बिन्दवी धीरे भीठ है ।

कमबटर—इन्दीय तुम्हाय मुक़्त नहीं हिन्दुस्तान तुम्हाय राष्ट्र है ? यह तुम क्या कहती हो मिस्त्र होम्स !

मिस्त्र होम्स—यह बात आप लोगों से नए सिरे से कहने की ज़रूरत नहीं । अमेरिका की स्वतन्त्रता के युद्ध में अंग्रेज़ों ने अंग्रेज़ों के ही सिलाफ़ हथियार उठाकर अमेरिका को इन्दीय की मुक़ामी से घाबरा किया था । वेच धीरे राष्ट्र किसे कहते हैं यह अंग्रेज़ कौन खूब जानती है । बुनिया का इतिहास क्या कहता है ? हिन्दुस्तान का ही पुराना इतिहास देखिए । मिस्त्र उरू बाबर, अहमदशाह अफ़ग़ानी अंग्रेज़ों का खिरशाह बरीच को हिन्दुस्तान पर हमला करते वक़्त यहाँ के मुसलमानों का मुक़ारता ख़ाना पड़ा था उची उरू आपको भी मिस्त्र होम्स की बचाव का मुक़ारता करना पड़ेगा

का भी उकाया है कि हम इच्छा करना सीखें ।

कर्नल होम्स—मैं इन बातों पर सोचने की जरूरत नहीं समझता । मेरा सुझाव है कि बुलूच को बन्ध कर दो नहीं तो मछीमजद अपना काम करेगी ।

निस होम्स—उसका मुँह किसने बन्ध किया है कर्नल होम्स ! (मछीमजद के जाने लड़ी हो जाती है । उसके पीछे बनी मुहम्मद और उसके पीछे ममो-हुरलाल लड़ा होता है ।) लेकिन उसका पहला निशाना मुझ पर, बुलूच बची मुहम्मद पर, तीसरा ममोहुर पर, उसके बाद भी अपर संघेब हुकूमत की कृत की प्यास न बुके तो बाकी भीड़ पर पोसियाँ बापिए । बाब माँ के तीन लड़के बच्चे एक राष्ट्र-मन्दिर की नींव डालेंगे । अपनी हड्डियों और कून से माँ का यह मन्दिर बनाएँगे ।

कर्नल होम्स—अच्छ तो फायदा

कलकटर—ठहरो ! बरा-सी बात के लिए इतना खर्च करना उठाने की जरूरत नहीं । कर्नल होम्स सभी बुलूच निकलने दो बाब में बापियों से कानून सुपत मिया । के आधे मछीमजद ।

[सिपाही मछीमजद हटा ले जाते हैं । 'इच्छलाब किम्बाबाब' के तारे से घासमान गुँज उठता है । 'महारमा बाबी की जय' के तारे लगते हैं । पाते हुए बुलूच गुजर रहा है ।]

गान

हिन्दुस्तान तुम्हों के नाम ।
तुमकी सी-सी बार प्रहाम ।
तुमकी सी-सी बार लजाम ।

मुस्लिम, धार्म बौद्ध ईसाई,
ब्रह्म बाराही, सिख, सब भाई
तुम पर सब भाई सौदाई ।

तुम सबकी जननी अजिदाम ।
हिन्दुस्तान तुम्हों के नाम ।

बंया में है गान तुम्हारा
 छिमभिरि पर अन्नाल तुम्हारा
 पद बोता है साबर बारा

बड़ा पर्वों पर रत्न लताम !

हिन्दुस्तान, मुर्खों के बाम !

अन्तर कितना भैमवधाली
 बाहर भी कितनी हरियाली,
 कोते-कोमे में बुबहाली,

तुम पर निर्भर जब के काम !

हिन्दुस्तान, मुर्खों के बाम !

कुछ तरियों से हम जब चुले,
 धीरे-धीरे घाकर कुले,
 लेकर बिनाब तुम्हारा चुले

हम कहलाये लये नुताम !

हिन्दुस्तान मुर्खों के बाम !

माँ अन्नाल तुम्हारी धारे,
 धीस्र क्यलने का अल धारे
 बढ़ते हमको प्राण न प्यारे

मुक्ति बिना कौटा बिनाम ?

हिन्दुस्तान, मुर्खों के बाम !

तुमको धी-धी बार प्रलाम !

तुमको ली-ली बार लताम !

[पदाक्षेप]

निष्ठुर न्याय

पात्र-सूची

महाराजा रत्नसिंह
मेवाड़ के महारजा ।
राजकुमार अक्षयसिंह
रत्नसिंह का एक-मात्र पुत्र ।
दयामा
भीमपत्र की पुत्री ।
बापूजी, सेनापति, -सैनिक आदि ।

पहला दृश्य

[स्थान—समस्त में एक कुटी । भीम-कुमारी क्यामा और मेवाड़ के पुत्रराज धर्मपतिहू बड़े हुए बार्ते कर रहे हैं । प्रकाश का अत्युत्पन्न ही क्या है, सोपक बुझने के लिए किसी कृष्ण की प्रतीक्षा कर रहा है ।]

कुमार—क्यामा अब मुझे जाना ही होगा । समाज के नियम निर्बन्ध हैं । दो मिमनीसुक हृदयों को सूर्य के प्रकाश में मिलने की धाजा वह नहीं देता । देखो धाकास जाम हो जसा है, पानी बहक उठे हैं । धाकास में वह जो लाल गोला-सा उदय हो रहा है वह मुझसे कह रहा है बाघी कर्म-मय तुम्हारी बात पोह रहा है ।

क्यामा—मैं जलनी हरिणी हूँ । नयनों से घोर महान् व्यक्तियों के समाज से मेरी जान-बहिषाज नहीं है । लेकिन मेरा भी अपना अस्तित्व और व्यक्तित्व है । मेरे भी माँ-बाप हैं, पड़ोसी हैं, पाठि-माई हैं और सहोदरियाँ हैं और उन सभी न मेरे सामने मर्यादा की कृष्ण रेखाएँ खींच रखी हैं । आप मेवाड़ के पुत्रराज हैं और मैं एक भीम की कन्या फिर भी धारम-वीरव को ऐश्वर्य और धक्ति की तराजू पर नहीं तोला जा सकता ।

कुमार—तुम्हारा मतलब ?

क्यामा—मतलब यही कि भीम-समाज अपनी मर्यादा को किसी प्रकार उबड़पुठों के उच्चतम बंध के बावें झुकाने को प्रस्तुत नहीं । वह आपकी मुम्ह पर कृपा की कोर देखकर समझार से मेरा विर उठारने को जतावता होना ।

कुमार—इसका उपाय ?

क्यामा—उपाय यही है कि पर्वत-माजाएँ इस सरिता को निर्वाहण दें जो आप मुझे समुद्र की सहोदर-सी सुजाएँ में स्थान दें । आप अपना भ्रम-का धावत फैलाएँ तो संसार बिसे समाज कहला है उस कृष्ण से झड़कर मुत्कण्ठी हई ससमें या कूबेनी । लेकिन यह धरमकार का धारण्ड जामकर

सापा कामी नहीं करेगी।

कुमार—तुम क्या चाहती हो ?

श्यामा—वही जो मुझे चाहना चाहिए। साथ रात भाप मेरे एकान्त के प्रतिबिम्ब रहे हैं। यह बात संसार से छिपी न रहेगी और वह इस बात पर विश्वास भी नहीं करेगा कि मनुष्य पुनः के पास आकर भी उस से संबंधित रहा है। मैं कहती हूँ अपनी सातवा की संभेरी गुफा में रहकर चौर न बनाओ प्रकाश में आकर बिगोही बने बनाओ। हमें समाज की संबंधों छोड़नी चाहिए। बीसो कुमार, क्या भाप मेरा हाथ कभी तरह पकड़ सकते हैं, जिस तरह राजपूत कन्या का ?

कुमार—श्यामा ! तुम जीवनराज की कन्या हो। तुम्हारे पिता ने तुम्हें शिक्षा की भाँखें भी दी हैं। तुम्हारे संस्कारों से भी विमुक्ति किया है। जबवान् ने तुम्हें बनाते समय अपने हृदय का सम्पूर्ण रस और स्नेह डाला है। तुम महाशक्ति की एक किरण हो—विद्युत की रेखा हो—आदि-गति के बावत तुम्हारे पैरों को खिना नहीं सकते। उलटे तुम्हारे पैरों से प्रकाशित हो पठे हैं। यदि मैं तुम्हें अपने जीवन में धाम रख सकूँ तो सबसे बड़ी तुम्हें की बात मुझे क्या हो सकती है, किन्तु—

श्यामा—किन्तु क्या ?

कुमार—किन्तु, मैं हूँ मेबाड़ का पुत्रराज। तुम्हें पर मैंत विरह्य अधिकार नहीं है। साथ की रात भी मैंने चुराकर ही तुम्हें दी है और उसका रस मुझे क्या पीवना पड़ेगा वह भयबाहू ही जाने। मेरा जीवन ब्रजा की बरोहर है उसकी इच्छा के विरुद्ध मैं कुछ भी नहीं कर सकता। मैं वह भी जानता हूँ कि समाज के धान्य जीवन में मरकर कीहरण पैदा किए बिना हम अपनी इच्छाओं के फल नहीं खा सकते।

श्यामा—तो कुमार, क्या फिर काल के लिए काज राशि से भी अधिक काशा सम्पन्न कर देने के लिए ही मापके पैरी कूटी में स्नेह का हीपक बलापा का ? जो कूटी मापकी प्रेय भरी सामो से अनुप्राणित हो चुकी है उसमें जीवन भर प्रलय की भाँखी बतली रहेगी ? जिस भाँखों में मापका देया है, के निरन्तर

जसती ही रूँयी ? मौसुधों का महासमुद्र भी उन्हें बुझ न सकेमा उनकी ज्योति बुझ जाएगी लेकिन जसन नहीं बुझेगी ।

कृमार—श्यामा ! तुम मुझे जो कहोभी मैं बही करूँया किन्तु मुझे तुम्हारे बिनेक पर निस्वास है ।

श्यामा—कृमार, मैं भीख नहीं माँगती धीर भीख नहीं माँगूगी । मैं समझती हूँ बिसे हूबन चाहता है उसे प्यार करने का मुझे अधिकार है धीर उस अधिकार से मुझे समाज का न्याय-बन्ध भी बंधित नहीं कर सकता ।

[निपप्य में तुरही की आवाज]

कृमार—सुनती ही श्यामा ! हमारे छिनिक-छिबिर में रण की तुरही बज रही है । तुममें कितना लडा है श्यामा मैं भूख ही बया या कि मुझे भाव रख यात्रा पर जाना है । तुम्हें सामने पाकर मैं अपने जीवन का आदि-मन्थ भी भूख जाया हूँ किन्तु संसार का कट्ट सत्य तुरन्त ही तुरही बजाने लगता है । मुझे प्रेम-महिष का प्यासा फेंककर कर्म की तलवार हाथ में लेनी पड़ती है ।

श्यामा—किन्तु, हिंसा ही तो जीवन की चरम आचना नहीं है ।

कृमार—बिमर्के हाथ में राजबन्ध है वे हिंसा का उत्तर हिंसा से देने की सबबुर है । मैं कितना सोचता हूँ कि मैं राजकुमार न होता एक बटीब किसान होता तो मेरा उत्तरवाचित्य कितना हल्का रहता । मैं अपने-आपको तुम्हारे चरणों पर डालकर जीवन को सफल समझता । लेकिन अब मैं हूँ मेबाड़ का राजकुमार । मेरे ऊपर देख धीर जाति की मान-रखा का बोझ भाठों पहर लडा रहता है । फिर मेबाड़ ! उस पर तो सालबी भाँखें उसके उन्मत्त मस्तक को झुकाने की सर्वा निकर टकटकी लगाए रहती हैं । मामजे के सूदेवार मैं फिर मेबाड़ पर आक्रमण किया है । हमें भाव उससे मोहा मेना है । तुम मुन जुझी हो कि तुरही छिनिकों को बुझा रही है लेकिन मुझे वा तुमने जीन लिया है ।

[निपप्य में गान]

सैनिक, बैद्य गणन की जाती ।

गिरा की धब छोड़ कुमारी

पकड़ प्रेम की प्याली प्यारी

पकड़ हाथ में तेज कुमारी

तुम्हें पुकार रही है कासी ।

सैनिक, बैद्य गणन की जाती ।

गुड़ फूलों की सेज बना दे

पलकड़ी का हार दूदा दे,

बड़ घोंड़े पर, एक लया दे,

रख मुण्डों को माला, माली ।

सैनिक, बैद्य गणन की जाती ।

जब नम में उजियाला छाया

बसों कुरिया में बीच बनाया,

रबि ने तुम्हको मार्ग दिखाया

तेरे बच पर रोती जाती ।

सैनिक बैद्य गणन की जाती ।

कुमार—तुम रही हो, क्यामा । बाहर चारखीं या रही है । मुझे उतका
बादेस मानना ही पड़ेगा । घाघा है तुम मुझे रण-वाता पर लगी तरह
मुत्कण्ठी हुई उल्लसित हृदय में दिख बोधी जिस तरह राजपूतनियां देती हैं ।

[बाते-बाते चारखी का श्लेष]

क्यामा—तुम धा नहीं, चारखी । तुम्हारा बस बसे ती रक्त के महासमुद्र
में सारे संसार को बुना बो जिनमें केवल तुम्हारा विमल मंडि की तरह पड़ा
दिखाई दे ।

चारखी—क्यामा । तुम मेरे लिए अपरिचित नहीं हो । तुम्हें जितना मैं
जानती हूँ उतना धायर कुमार भी नहीं जानते । तुम इस बात से अनभिज्ञ नहीं
हो कि लाल समुद्र में प्रेम का श्वेत कमल बहुत सुन्दर दिखाई देता है । पवित्र
पीर स्नेह इन्हीं तानों-बानों से मृष्टि के पत्र का निर्माण हुआ है । तुम्हारे

धरमार्तों को संसार का धासीबाँध मिलेगा या नहीं यह मैं नहीं जानती किन्तु इस चारणों का अनुमोदन प्रबन्ध मिलता रहेगा । मैं कुमार की भाँखों में प्रेम का पानी धीरे धीरे बूझ की उबासा रोमों डेलना चाहती हूँ । कुमार, तुम्हें एउ-माया पर प्रस्मान करने का समय याब है न । तुम बहु बड़ी बूझ गए हो ।

कुमार—मुझे तुम्हें पहुँचना चाहिए । विलम्ब के लिए पिताजी से क्षमा माँग लूँगा ।

[सबका प्रस्वान]

[पद-परिर्वतन]

दूसरा दृश्य

[स्वाम—महाराजा रत्नासिंह का सैनिक-धिमिर । महाराजा सैनिक-बैद्य में बूम रहे हैं ।]

महाराजा—कितनी पीड़ियों से मेराङ्ग धीरे मानवा का संवर्ष बला सा रहा है । स्वर्गीय पिता भी महाराजा सीमा से न केवल मासवा बल्कि गुजरात के बारणाह को भी मेराङ्ग के झुंके के धाने धिर भुङ्काने के लिए मजबूर किया था । ऐसी क्षीम-धी शक्ति भी जो मेराङ्ग के प्राये धर्ष-धुर्ष इष्टि से देख सकती ? बयाना के बुद्ध में एक राजपूत राजा के विरबास-बाठ से स्वर्गीय पिताजी को जो पराजित होना पड़ा उससे दूसरे राज्यों को हमारी शक्ति पर शक्तिबास कराने का प्रबन्ध मिला । इसीमिष्ठ प्राय मामबा के सुबेदार ने बिलौड़ की तरफ मानव-धरी धीखों से देखा है किन्तु, बहु जान मिया कि महाराजा संशान के पुत्र की तसबार उनसे कम ठीक धीरे कठोर नहीं है ।

[मेराङ्ग के सेनापति का प्रबन्ध]

सेनापति—(प्रतिबाराण करके) सेना सीवार हो चुकी है ।

महाराजा—तो फिर बूझ का डंका क्यों नहीं बजा ?

सेनापति—युवराज की प्रतीक्षा है। सेना के अग्रमार्ग का संभालन उन्हें सौंपा गया है किन्तु वे अभी तक उपस्थित नहीं हुए।

महाराजा—बाप्या राजस के बंधनों में आज तक ऐसा कोई क्युत पैदा नहीं हुआ जो रण-यात्रा पर जाने के समय देर से आया हो। कहीं कुमार बिकार को आते समय घबुघों के बेरे में तो नहीं पड़ गए ?

सेनापति—आपका तो मुझे यही हुई थी। रात को आचलक परामर्श के लिए जब मैं उनके बिकार में गया तो उसे खाली पाया। मेरा हृदय मड़का। मैंने गुरज ही गुप्तचरों को देखकर उत्तम पठा लवनाया।

महाराजा—तो क्या वह रात-भर बिकार से घायब रहे ? यह तो सैनिक-नियमों के विरुद्ध है सेनापति। मुझे विश्वास है कि राजकुमार जान-बूझकर सैनिक-नियमों की अवहेलना नहीं करेंगे। मेरा हृदय मड़का है सेनापति ! वह अवश्य ही किसी विपत्ति में फँस गए हैं।

सेनापति—नहीं महाराजा ! वे किसी विपत्ति में नहीं फँसे। केवल बोक रास्ता भूल गए हैं।

महाराजा—इसका मतलब ?

सेनापति—मतलब यही कि रणभूमि की संपादन के समय वे वातना के बिलास-मन्दिर से बिल बहमाने गए हैं।

महाराजा—यह तुम क्या कहते हो ? सेनापति सीछीबिया-बंध के किसी साल के प्रति एसा लक्षण बताते समय तुम्हें डर नहीं लगा। यदि वह लक्षण अत्यंत विरह हुआ तो जानते हो इसका क्या उपाय दिया जाएगा ?

सेनापति—महाराजा ! देवाङ्क का सेनापति भारत-वीर्य सीछीबिया बंध की प्रतिष्ठा प्रकृत यद्यपि और साहस की पूरी इच्छा रखकर ही कोई उपाय अपने मुँह से निकालता है। यदि मेरा वचन झूठा हो तो मुझे प्राण-दण्ड दिया जाए। जिस सौम्य-सूक्ति की आठवका में कुमार ने बत रात व्यतीत की है उसे मैंने रकड़वाकर अभी बुलाया है। आप जान लेंगे कि मैं सत्य कहता हूँ या असत्य।

महाराजा—तुमको भ्रम हुआ होगा सेनापति ! यदि यह बात सत्य हुई तो महाराजा अग्रमार्ग के पुनः रणविह का न्याय-दण्ड अपने इकलौते बेटे,

सेनापति के घाबी महाराजा के ऊपर जो उठी निर्ममता से प्रहार करेगा जिससे कि साधारण जन पर करता है ।

[राजकुमार का प्रवेश]

सेनापति—सीबिय, ये राजकुमार का नए । आप इनसे पूछ सकते हैं कि रात में कहाँ रहे और इस समय विलम्ब से क्यों आए ?

महाराजा—कहो कुमार, तुम्हारे पास इस बात का क्या उत्तर है ?

[कुमार चुप रहते हैं]

सेनापति—महाराजा ! इसका उत्तर कुमार अपने मुँह से देने में घायब नज्मा का अनुभव कर रहे हैं । मैं इस प्रश्न का भीषित उत्तर सामने उपस्थित करता हूँ । (घोर से कहता है) गम्भीरसिंह !

[श्यामा के साथ गम्भीरसिंह का प्रवेश]

राजकुमार—सेनापति तुम्हारा इतना साहस ! एक स्वतन्त्र नागरिक को इस प्रकार पकड़वाकर बुलाने की श्रुष्टता ।

महाराजा—और कुमार रण-यात्रा के समय रमणी के रूप-बाल में फँसे रहने की श्रुति तुम्हें किसने दी । तुम्हारा क्या नाम है बेटी ।

श्यामा—मुझे श्यामा के नाम से पुकारा जाता है ।

महाराजा—यह कौन-सा कुल है जिसकी स्मरणी पूनी ने घोषीरिया कुल के एक नक्षत्र को अपनी छवि-भंग-माता से संसार की धाँसों से ग्राम्म करने का प्रयत्न किया । तुम राजपूतनी हो ।

[चारली का प्रवेश]

चारली—हाँ महाराजा ! यह भीमराज की कन्या श्यामा है ।

सेनापति—तो श्यामा का अपराध अश्रम्य है । एक हीन कुल की कन्या का इतना साहस ।

महाराजा—अबस्य धान राजकुमार और श्यामा का धाम्य एक ही स्थाई से जिज्ञा जाएगा ।

राजकुमार—पिताजी ! जहाँ तक मेरी भावना कहती है इस कुमारी ने कोई अपराध नहीं किया और मैंने भी इतना ही अपराध किया है कि वियत

समय से कुछ बेर में मैं यहाँ पहुँच पाया हूँ। उसके लिए धाप जो बन्द बंदे वह स्वीकार करने के लिए मैं प्रस्तुत हूँ।

महाराजा—कुमार, महापराणा तो अपनी प्रथा का आजापानक सेवक है। धाप प्रथा तुम दोनों को अपराधी मानती है। धीर मेरा न्याय-दण्ड कहता है कि तुम दोनों प्राण-दण्ड के भापी हो।

श्यामा—महाराजा! मैं राजा के न्याय-दण्ड को नहीं जानती मैं जाति धीर बंश की मर्माशयों से भी अधिक परिचित नहीं मैं कम में कभी धीर बड़ी हुई हूँ। कम में जो फुन मुझे प्रच्छा सबा है उसे मैंने तोड़ लिया है। कभी महाराजा का न्याय-दण्ड मेरे भाग्य में बाधक नहीं हुआ।

महाराजा—तुम क्या कहती हो श्यामा?

धारखी—महापराणा क्षमा कीजिए मैं बीच में बोलने का इस्तेाहम कर रही हूँ। धमी एक धारख धीर धारखी बीच पुरुषों के कुछ धाने धीर धीरों को मरन-भारने के लिए उचित करना ही धपने कर्तव्य की इतिमी समझते रहे हैं। किन्तु हमारे भी हृदय है धीर मनुष्य के हृदय को समझने का षोड़ा-सा ज्ञान हमें मिला है। निश्चय ही श्यामा से भूल हुई है धीर राजकुमार से भी किन्तु भूल क्या हुई है इध निषय मे संसार को भ्रम न रहे एसा उपाय होना चाहिए। सेनापति! धाप बता सकते हैं कि श्यामा से क्या भूल हुई है धीर राजकुमार ने क्या धपराध किया है?

सेनापति—श्यामा से यह भूल हुई है कि उसने हीन कुल में जन्म लेकर भी राजपूतों के उच्चतम बंश के साथ स्नेह-भून बाँधने का प्रयत्न किया है। धीर राजकुमार से यह धपराध हुआ है कि उन्होंने धपने कल के धीरव धीर उच्चता को एक हीन कल की मुवती के धरणों पर बड़ा दिया।

धारखी—यही तो भ्रम है। धाप भूलते हैं सेनापति धीर महापराणा धाप धपराधी को दण्ड देने तो जने हैं लेकिन धापको यह पना नहीं है कि इनका वास्तविक धपराध क्या है। न्याय-भावन पर बैठते समय धाप न महाराजा हैं न धापका किसी उच्च कुल में जन्म हुआ है। न्याय-भन्धिर का देवता एक निष्पक्ष निर्दिधार, जाति-कल-हीन समता-भावा के धावरण से मुक्त यथ

अपराध के पदे रहने वाला मनुष्य है। महाराणा यदि आप इस समय इन दोनों को बच देंगे तो संसार यही समझेगा कि मनुष्य का मनुष्य से प्रेम करना पाप है। मैं नहीं जानती कि एक राजपूत का एक भीसनी से प्रेम करना कोई अपराध है और एक भीसनी का एक राजपूत के साथ स्नेह-सम्बन्ध जोड़ना दुस्साहस है। हमने बीच और ऊँच की भावनाएँ प्राणों में पालकर अपने देश की संकड़ों टुकड़ों में बाँट दिया है। मैं आपसे पूछती हूँ यदि भीनों को आप अपने समान अधिकार देने को प्रस्तुत नहीं तो क्यों वे निरन्तर अपमान के बाँस प्राणों पर फेंकने के लिए मैदाड़ की स्वाधीनता के लिए अपने प्राणों की बलि दें? क्यों हजाराओं की संख्या में वे आपकी सेना में भरती हों? महाराणा विजय बंध की उच्चता के बन्ध को राजी करने के लिए इन दो प्राणों की बलि बढ़ाने की आवश्यकता नहीं। मैं आपसे बीच मंगले धाई हूँ। बंधामिमान के विरुद्ध प्रेम की धर्ती पेश करने धाई हूँ। महाराणा! स्वामी और राजकुमार को विवाह करने का अधिकार मिलना चाहिए।

महाराणा—तुम ठीक कहती हो चारणी! सेनापति! बाधो बाध रण यात्रा स्वगिठ रहो। बाध मैदाड़ के मुखराज का भीसराज की कन्या से विवाह होगा।

सेनापति—आपकी आज्ञा सिर धाँसों पर, किन्तु सैनिक अनुशासन भी आपसे कुछ प्रार्थना करना चाहता है। ऐसा जान पड़ता है कि ग्यादाधीश पर पिता ने विजय पा ली है।

महाराणा—नहीं सेनापति। तुम भूल कर रहे हो। ग्यादाधीश अपना कार्य करेगा किन्तु उसके सामने प्रेम की जो धर्ती धाई ली उसका पिता के रूप में नहीं ग्यादाधीश के रूप में मैंने फैसला सुनाया है और सैनिक अनुशासन की धर्ती का फैसला कल सुनाया जाएगा। अच्छा अब हम लोग बिदा होते हैं।

[सबका प्रस्थान]

[दर-परिचर्च]

तीसरा दृश्य

[स्वाम—सैनिक-निबिद के पास काली का मन्दिर । राजकमार और श्यामा का एक बूँदरे का हाथ पकड़े हुए प्रवेश ।]

कुमार—श्यामा पानी के दो बुलबुलों की तरह हमारा-बुन्हाप मिलन है। संसार के महा समुद्र में दो बिघारों से दो बुलबुले ठठे । एक-बूँदरे की तरह बड़े—घौर एक होकर सब से नहीं हो सकते ।

श्यामा—किन्तु अभी तक महापराणा के न्याप की तजवार हमारे सिर पर लटक रही है ।

कुमार—मैबाङ का न्याप-बन्ध बहुत कठोर है । आज महापराणा क्या पैसता करेसे यह मैं पहले से ही जानता हूँ ।

श्यामा—हम इस संसार में मूल से ही पाए । हमारी बीणा के स्वर संसार के कोबाहुल में नहीं मिल सके । हम यहाँ के राज-नियमों से विरोध करके अपनी स्वासी को सुरक्षित नहीं रख सकते ।

[निपप्य में पात]

किसने भाबी को पहचाना ।
 जो बाबल बरसाली पानी
 जिसने पाली भूमि बबाली

के भी बन जाते तुझनी
 केन उन्हें है बख पिराना ।
 किसने भाबी को पहचाना ।

यह प्रघात सापर सोता है
 किन्तु, प्रघात घनी होता है,

बहु बहाव भीवन पोता है
 सहरे हैं घम का बुलबुना ।

किसने भाबी को पहचाना ।

नम की यह सिन्दुरी रीखा,
मिचती निरि में काला रिखा,
जप से कम अपना जप रीखा

दिया हूँसी में धनु मिराना ।

किससे माबी को पहचाना ।

श्यामा—बारली बहन भा रही है ! बारलियों के दिल में भी प्रेम की हियामत करने की भावना है, यह पहली बार ही देखने में आया । यह जो पूर्णिमा से भी अधिक उज्ज्वल धरात से भी अधिक उन्मादक धीर अमृत से भी अधिक बीबन-बादिनी राशि हमें प्राप्त हुई है इसका भेय बारली बहन को ही है । हमारा प्रेम जो अन्धकार में भुँह दिखाकर सिंसक रहा था वह जप के सुझाव धरे प्रकाश में खुलकर पा सका है ।

[माते-माते बारली का प्रवेश]

बारली—किसने माबी को पहचाना । बारली का प्रेम के बीबनों को सम्पूर्ण हृदय से घासीर्भाव ।

श्यामा और कुमार—माबरलीया बारली के बरलों में हमारा प्रखाम ।

बारली—श्यामा ! तुम मेकाड़ के माम्पाकाश में दिनास की टारिका बन कर आई हो । तुम बितनी सुन्दर हो तुम्हारी प्रामा में सतनी ही आता है । युग-युग के धन्व-विस्वाधों को नात मारकर, बंध-मर्वाध की प्रबहेतता करके, गहिराखा ने अपने हाथ से एक भीलगी की घोड़नी से राजकुमार के उत्तरीय का धोर बांध दिया है वह एक साधारण-सी घटना नहीं है । धाव जिस रुई काव का धर्प भीतर-ही-भीतर फुफकार रहा है उसके बिप से श्यामा का सुझाव किसने दिल तक अम्मान रह सकता है वह बिधाता के सिवाय कोई नहीं जानता ।

श्यामा—बहन, मेरा बीबन तक प्रारम्भ हुआ था जब कि मैंने पहली बार कुमार को देखा था । मेरे बीबन की जबानी तक आई थी जब कि हमारा गठ-बगन हुआ था धीर मेरा बीबन तक समाप्त हो गया जब कि हमारी साँसें एक-दूसरे को सूने लगीं । जब श्यामा समाप्त हो चुकी जो सुख लेव है वह कुमार

की छाया है। स्वामा तो एक प्रसव का भ्रूण लेकर आई थी और उस भ्रूण से राजमहलों का प्रतिमान हिजाकर जब जाने में ही उसकी स्वामाबिच्छा है। एक क्षण के लिए तो मुझे संसार ने बाप्या राजन के बंसव को अर्थाविति माना है अपने इस विद्यमोस्मास के प्रकास में जीवन की श्रेय अविरी उठें में उन्तोप के साथ व्यतीत कर रूगी।

[महाराजा और सेनापति का प्रवेश। स्वामा और राजकुमार महाराजा के अगल पुते हैं।]

महाराजा—मसखी हो देहा। तुम्हारी कीर्ति अमर हो स्वामा। स्वामा भीस बनने के पहले विता का धाकत हूबद अपने पुत्र और पुत्रवतु को अपने हृदय के सम्पूर्ण बल से धाधीबाँध देता है। मेवाड़ के इतिहास में तुम दोनों नखत्रों के समान अमकोये। अन्धा ! अब तुम दोनों की पेयी मेवाड़ के महा राजा की अमानत में होनी। सेनापति ! बोलिए राजकुमार के विरुद्ध तुम्हारा क्या अभियोग है ?

सेनापति—महाराजा ! यह अणिक बकार बा। मेरा राजकुमार क विरुद्ध कोई अभियोग नहीं। बिस हृदय में कल सुहाम का प्रकास हुआ है—वहाँ में शोक का अन्धकार नहीं फैलाना चाहता। वहाँ पर कल आनन्द की भेरी बजी है, वहाँ बेरगा का विहाग नहीं छिड़ाना चाहता। जो होना बा हो चुका मुझे जो अम बा डूर हो चुका। मैं कुमार से अपनी मृत्तता की अमा चाहता हूँ।

बादली—किन्तु देह में अमी तक अपना अभियोग आपस नहीं बिना। बंध और बाति का स्वामा के विरुद्ध अभियोग बा उसका कैसता स्वामा के पस में हो चुका है और यह उसका पुरस्कार बा चुकी है। किन्तु बाति और बंध से भी बड़ी भीज हमारी आत्म-भूमि है और उस आत्म-भूमि का मुखरतन के विरुद्ध यह अभियोग है कि उसने प्रेम को अर्त्तम्प से अँबा स्वाग दिया है, उसने प्रेयती को आत्म भूमि से अँबा माना है। एण-आबा पर निरिबत समय पर धाक में बिलम्ब किया है। महाराजा देह-जोही को जो लख दिया जाता है क्या कुमार उसके आगी नहीं ?

महाराजा—अबस्य ! क्यों कुनार तुम इस अभियोग को असत्य सिद्ध कर सकते हो ? तुम्हारा जो मुख्य गवाह या वह तुम्हारे विरुद्ध हो गया है ।

कुमार—मेरा गवाह पक्ष और विपक्ष की सीमाओं के परे है । उसने सत्य को सामने रख दिया है और अपराधी बन्ध सहने के लिए प्रस्तुत है ।

महाराजा—तो फिर मैं तुम्हें प्राण-दण्ड की धागा देता हूँ । काँपते क्यों हो सेनापति तुम्हें आश्चर्य होता है कि एक पिता के मूँह से अपने पुत्र के लिए प्राण-दण्ड की धागा कैसे निकल सकी ?

सेनापति—हाँ ? महाराजा यह आश्चर्य की बात है ही । युवराज मेवाड़ के नानी महाराजा हैं । और महाराजा के वृत्त और कोई पुत्र भी नहीं है । युवराज ने आपके साथ और मेरे साथ रहकर अभियन्ता का पूर्ण लेख घनेक युद्धों में प्रकट किया है । आप अपने भाई विक्रमाधीन और उदयसिंह को भी जानते हैं । आपके अनुभव विक्रमाधीन वासना के पुत्रापी हैं और उदयसिंह सिधु । उनके हाथों में मेवाड़ का अभियन्ता उज्ज्वल न रह सकेगा । देश के धारा-केन्द्र युवराज के प्राणों की मिखा मेवाड़ का सेनापति महाराजा से मीगता है । मेवाड़ के महाराजा की घोर से न्यायाधीन महाराजा के धामे अनुरोध करता हूँ कि कुमार को जमा किया जाए । मैं नव विवाहिता स्वामा की घोर से उसके सुहाव की भीख मीगता हूँ ।

महाराजा—न्यायाधीन ! मेवाड़ के सेनापति मेवाड़ के महाराजा और नव-विवाहिता नारी के अनुरोध को न्याय के विरुद्ध जाने के लिए उपयुक्त कारण नहीं समझता । मेरी धागा का पालन होना ही चाहिए । अभियन्ता में मेवाड़ का प्रत्येक मनुष्य जान से कि देश की स्वाधीनता के लिए जिसकी पुकार हो उसी समय उसे धाना पड़ेगा नहीं तो उसे यही दण्ड भोपना पड़ेगा जो कि मेवाड़ के युवराज ने हँसते-हँसते स्वीकार किया है । क्यों राजकुमार, तुम मरने के लिए प्रस्तुत हो ?

राजकुमार—यह मेरा सीमाय है ।

महाराजा—तुम नानी की मूर्ति के सामने खड़े हो जाओ ।

[कुमार मूर्ति के सामने जाकर खड़े होते हैं । स्वामा भी उनकी वक्ता हैं]

जाकर बड़ी होती है ।]

चारली—स्वामी तुम कहीं जाती हो ! महाराजा ने केवल राजकुमार की मृत्यु की धाम्ना ही है । तुम्हें अभी इस दुनिया में ही रहना होगा । और पुण्यों की सतक तीर के निधानों की तरह सुभाग यत भी स्वयं नहीं जा सकती । मेकाङ्क का स्वाम-दम्ब धाव हीन-हीन प्राणों का भूजा नहीं है । तुम्हें मृत्यु के पथ पर कुमार को धकेला ही जाने देना पड़ेगा । मनुष्य का फैसला चाहे हम न मानें किन्तु विवाला के नाम-विवाल के विच्छ कुल भी करने का हम मयिकार नहीं है ।

[स्वामी की धार्मिकों में धार्मिक जाती है]

चारली—अभी तुम हँसती थी ! राजकुमार को प्राणों का दम्ब सुनाया गया, तब भी तुम्हारी धार्मिकों की विवली बरत भी धम्ब नहीं हुई थी । अब धार्मिकों के धारस बरसने क्यों सो ?

स्वामी—विवाला का स्वाम-मन्दिर मनुष्य के स्वाम-मन्दिर से भी अधिक निष्ठुर और कठोर है ।

महाराजा—देवापति यह तो मेरी समवार ।

[सेनापति की समवार देता है]

महाराजा—कुमार कासी के धामे यतन मस्तक सुभायो । मरामी की प्यासी भीन तुम्हारा घून मांग रही है ।

[कुमार मरामी के धामे यतन मस्तक सुभायो है । स्वामी कीरकार करके चारली के बरतों में गिर जाती है ।]

महाराजा—देवापति ! बड़ी हीर देवी के परणों में यह बलि बड़ा हो । इतनी बहुमूल्य बलि बहाने का हीनाम्य धाव तुम्हें मिल रहा है । आज तुम्हारे बीता मायवान कोन होगा ? चाओ मेरी धामा का वासन करो ।

सेनापति—महाराजा ! ऐसा निष्ठुर कार्य—

महाराजा—देवापति ! अनुपासन मंग करने का दम्ब तुम जानते हो ।

[सेनापति कुमार के पास बहते हैं और समवार बहाते हैं]

[पदाक्षेप]

पश्चात्ताप

पात्र-सूची

कन्हैया

प्रसूनोदर में जमा हुआ एक कुत्तीन पुष्क ।

पंचश्रीदास

एक ब्राह्मण वैद्य ।

डॉक्टर

एक ईसाई डॉक्टर जो पहले भंगी था ।

रामकुन्दा

वैद्यकी की पत्नी ।

रविदा

एक धर्मज्ञ ऊर्मा ।

रविदा की माँ वैद्यकी के छापी कन्हैया से पढ़ने वाले प्रसून विद्यार्थी

पहला दृश्य

[एक गाँव के छोटे-से मन्दिर की सीढ़ियाँ। मन्दिर के आस-पास घड़े आगर और घोड़े आदि के बजने की आवाज हो रही है। आरती भी वादें जा रही हैं—लेकिन दूसरी आवाजों में मिलकर वह घाफ़ सुनाई नहीं देती। एक १२-१३ वर्ष की लड़की मन्दिर की सबसे निचली सीढ़ी पर बैठी हुई ध्यान लगाकर मन्दिर में से आने वाली आवाजों को सुन रही है। लड़की सुन्दर भी है, भोली भी है और साफ़-सुन्दर भी। कपड़े बड़े साफ़-छल्ले हैं, कहीं-कहीं फटे भी हैं, लेकिन येने नहीं। पैरों पर समझवारी की जलक है—येता नाम पड़ता है जैसे वह कब पड़ती-निचली भी है। लड़की का नाम है रमिया। रमिया कंधे लीच में डूबी-सी बैठी है कि उसी गाँव में समो-समी गया गया हुआ मुबक—कन्हैया जाता है। उसके हाथ में कुछ फूल हैं। रमिया का ध्यान उतकी तरह नहीं जाता। लड़का ठीक उसके पीछे आया होकर उसके बिरबर कुछ फूल फेंक देता है। रमिया चौंकर पल में पड़े एक पत्थर को उठाती है और खड़ी होकर उस फूल फेंकने वाले को मारना चाहती है कि कन्हैया को रोककर धरती जाती है।]

कन्हैया—तुम के बरसे पत्थर देती हो रमिया।

रमिया—देवता पर चढ़ाए जाने वाले फूल तुमने मुझ पर क्यों फेंके ?

कन्हैया—इसलिए कि तुम बेबी हो। मनुष्य ही तो सच्चा देवता होता है

रमिया ! तौ मनुष्य की पूजा नहीं करता वह मयवान् की पूजा कैसे कर सकता है।

रमिया—मनुष्य की पूजा करने से देवता नाराज होते हैं।

कन्हैया—तो क्यों ?

रमिया—जेरे हिस्से की पिछाई यदि तुम या बाघो तो क्या मुझे बोध न आया ?

कन्हैया—तुम्हारी माँ का हिस्सा भी तुम्हें दे दिया जाए तो तुम्हारी माँ प्रसन्न होगी ना ? मनुष्य भी तो भगवान् की सन्तान है—जो उसकी सन्तान की पूजा करता है उससे भगवान् प्रसन्न होते हैं । अब बाऊँ भगवान् की धारती में भी शामिल हो नूँ ।

[कन्हैया जाता है और रबिया की माँ धारती है । उसके हाथ में बलिघा घीर फाड़ू है ।]

रबिया की माँ—मरी रबिया तू यहाँ क्या कर रही है अभी तक भद्रकू ही नहीं लवाई सड़क पर । मरी पुजारीजी नाउज हो जाएँगे घीर भगवान् के भोग में से हमें कुछ नहीं बेंगे ।

रबिया—जरा भगवान् की धारती सुनने समी भी फिर—कन्हैया रंया घा बए उनसे बातें करने खपी ।

रबिया की माँ—बेटी हमारे लिए तो सोर्षों की सेवा करना ही भगवान् की पूजा है । चल फाड़ू जगा ।

रबिया—नहीं माँ घाब में भगवान् के दर्शन कसेमी ।

रबिया की माँ—मैं तुम्हे कितनी बार समझ चुकी हूँ कि हमारी मन्दिर के भीतर जाकर भगवान् के दर्शन करने की प्रीकाश नहीं है ।

रबिया—क्यों क्या हम मनुष्य नहीं हैं ?

रबिया की माँ—मनुष्य तो है लेकिन नीच जाठ है—ऊँची जातवासों का बराबरी हम कैसे कर सकते हैं ?

रबिया—लेकिन कन्हैया बाबा तो कहते हैं कि जो सेवा करते हैं वे ऊँचे पावपी होते हैं—हम सब सोर्षों की सेवा करते हैं—संघे माँ बच्चे की सेवा करती है—फिर हम नीच कैसे हुए ? हम मन्दिर में भगवान् के दर्शन के लिए क्यों नहीं जा सकते ?

रबिया की माँ—हमारे मन्दिर में जाने से मन्दिर अपवित्र हो जाता है बेटी । हम गन्धे काम जो करते हैं—गन्धे जो रहते हैं ।

[वैद्यराज पंचकौड़ीबास घाते हैं और तीड़ियों पर चढ़ते हुए मन्दिर में जाते हैं । वे एक मैली बीती पहने हैं जो घाबी से पहने हुए हैं घीर घाबी फाये

पर डाले हुए हैं। बदन घनाड़ा है। एक सीमा घोर मोटा जैक पहने हुए हैं। उनके एक हाथ में कुनों से भरा एक बीना है। दूसरे हाथ में बल-गरा मोटा। पंचकौड़ीबास रबिया की माँ और रबिया बीनों वर बुध्दि फेककर मन्दिर में घुस जाते हैं।]

रबिया—माँ हम ऐसे पण्डितों से तो पबिक स्वच्छ हैं। वे मन्दिर में जा सकते हैं तो हम क्यों नहीं ?

रबिया की माँ—बड़ी जात बाधे पन्हे रहकर मो पबिक गिने जाते हैं। वेटा यह सब कमी का फल है। हमने घुरे कार्य जो किए वे इसलिए संधी बनी हैं—इन्होंने प्रच्छे कार्य किए वे इसलिए ये बामन हुए।

रबिया—भूठी बात। यह व्यवस्था इन्हीं की बनाई हुई है। यह इनका धर्याचार है और हमारी बेसमझी। जैसे माँ सब बच्चों को बराबर प्यार करती है—इंसे ही भयवान् भी। क्या हम भगवान् की सन्तान नहीं हैं क्या हममें मन्दिर-भाव नहीं ? क्या हम मनुष्य नहीं ?

रबिया की माँ—हैं क्यों नहीं ! लेकिन भयवान् की प्राज्ञा भी तो हमें माननी होगी। पंचों की प्राज्ञा ही भयवान् की प्राज्ञा है जलो वेटी हम धपता काम करें।

रबिया—उँ—हूँ—मैं तो प्राब मन्दिर में जाऊँगी।

[एक छोड़ी बड़ती है कि ऊपर घोर मुनाई बैठा है। पंचकौड़ीबास कन्हैया को बन्के माछा हुपा पाहर ला रहा है।]

पंचकौड़ीबास—तुम गांधी के बच्चों ने बल-कर्म को मूठ करने की ठान ली है। बाग्बाब रोब मयियों के मोहलो में पढ़ाने जाटा है और भयवान् के मन्दिर में घुस घाया। बाघो निकल बाघो फिर कमी मन्दिर की सीढ़ी पर वीर रबा तो सिर फेड़ बुपा। यह धर्म का मामला है इसमें हम रिदायत नहीं कर सकते।

[और से बन्के बैठे हैं। कन्हैया सीढ़ियों पर से लुडक जाता है—उसके सिर में जोड घातो है। रबिया घोर रबिया की माँ उसे संभालती है। रबिया धपती घन्धे फेककर जोड पर पढ़ी दीपती है।]

रबिया—धैया तुम्हें हमारे कारण बहुत कष्ट मिला।

रबिया की माँ—मैं तो तुमसे पहले ही कहीं भी कि हमारे मोहम्मद में मत पाया करो। इसे ठीकी बात बाने कभी सहन नहीं करिये।

कन्हैया—वे लोग अभी समझने नहीं हैं—एक दिन समझ आएंगे।

रबिया—हम लोग इनका काम छोड़ दें तो एक दिन में इनकी बुद्धि ठिकाने पा जाए।

कन्हैया—नहीं रबिया हम सेवा भीर प्रेम से ही इन तापानों को रास्ते पर बाँधें (बटकर लड़ा हो जाता है) जब मैं टीक हूँ तुम अपना काम करो।

[कन्हैया जाता है। एक भयत मन्दिर से बाहर निकलता है। उसके हाथ में एक बीजा है जिसमें कुछ प्रसार है जिसे वह खाता या खा रहा है सीढ़ियों से नीचे धाकर वह कुछ रबिया की बैठा है—लेकिन रबिया बैठी नहीं, मुँह फेरकर लड़ी हो जाती है।]

रबिया की माँ—बे से, बेटी। भगवान् का प्रसार है।

रबिया—बूटल जाने के हुआ हा जाता है, माँ। धाबकन हुआ कैम भी खा है।

रबिया की माँ—भगवान् के प्रसार का भयमान नहीं करते बेटी।

[बीजा घाय से लेती है। जच्छती बने जाते हैं]

रबिया—(माँ के हाथ से बीजा छीनकर लेंचते हुए) बीजों में भीच समझते हैं उनकी बूटल जाने की हमें क्या बकरत ? बनी माँ यहाँ से चलो।

रबिया की माँ—काम ठा कर लें। (बच्चू लवाने लच्छती है। रबिया रोय में मरी बनी जाती है।)

[मन्दिर में से भजन के बाने का सव्य जाता है]

[कैपय में घाल]

प्रभु कीरे सबपुच बित्त ब करो।

समहरबी है नाम तिहारो जाहो तो बार करो।

इक लोहा बुजा में राखत इक घर बधिक परो।

बारस युन-बबगुन नहि बित्तबे कचन करत करो।

[बच्चू लपटो-नगाने रबिया की माँ सोकन हो जाती है]

[पर-परिवर्तन]

दूसरा दृश्य

[बेधराज पंचकौड़ीबास एक बटिया में पाँव के कुछ बिलों के साथ बैठे हुए हैं। एक व्यक्ति सिल पर नंग धोख रहा है। भंग का सभी सामान मौजूद है।]

भंग खोदने वाला—बैचबी आपकी बकली में भंग के भी कुछ लिए होंगे ना ?

पंचकौड़ीबास—हाँ-हाँ क्यों नहीं। हमारे प्रायुर्वेद में हर एक फूँव-पत्ती एक मूल के कुछ-बोप लिए हैं। भरे नंगा कहीं तक हमारी बेसी चिकित्सा-विधि की पहुँच है कहीं तक तो संघेबी बॉन्टरी घनी हमार बरस नहीं पहुँच सकती।

एक साथी—बेकिम घाघकन सब लोप बीड़-बीड़कर बॉन्टरी के पास ही बाते हैं।

पंचकौड़ीबास—कुछ नहीं यह पश्चिमी सम्पत्ता का प्रमाण है। जो ही पत्तर धंघेबी के पड़ गए तो अपने बड़े-बुढ़ों की बेसी वस्तुओं को बेसी रीति रिवाजों को निकम्मा धोर हीन समझने लगे।

दूसरा साथी—हाँ पश्चिम की हर एक वस्तु पाराम्य बन गई है। ईशान है—ईशान बैचबी !

भंग खोदने वाला—बेकिम बैचबी भंग के कुछ तो आपने बताए ही नहीं।

पंचकौड़ीबास—भंग क्या है ? भारत में यही तो धार्य ऋषियों का सोम-रस था। एक प्यासे में स्वर्ण की छीर कर बकते हो। बैचक के अनुसार देखो तो कर्म को यह हूर करे, बल बड़ाए, बुद्धि बड़ाए धीन भुख बड़ाए।

दूसरा साथी—भूल वाली बात तो हितकर नहीं है। हम राघन के कुण में दूख बड़ना धार्यण बोपपूर्ण है।

[सब हँसते हैं। पंचकौड़ीबास की पत्नी रामकुमारी घाठी है]

रामकुमारी—यहाँ तुम्हारी भंग बुट रही है कहीं नत्ता का हान करार है।

पंचकौड़ीबास—घरे, तुम जब धाघोयी—झोई बला सेकर धाघोयी। धारा मजा फिरकित कर दिया।

रामकुलारी—रहने का अपना यह मना ! जब बेखो गिठस्तों को बिठाकर भंग घोटते हो । धर्म नहीं घाटा । अपने नाम-बचर्षों की भी चिन्ता नहीं ।

एक साबी—क्या हुआ भामीजी !

रामकुलारी—हुआ क्या, अपना सिर ! मेरा माम् ही बुरा है जो हमके घर आई ।

पंचकौड़ीबास—हाँ-हाँ नहीं तो कोई बच्चा सेठ तुम्हें मिल जाता ।

रामकुलारी—तुमने बड़ा नीलबा हार पहना दिया है मुझे । जब यह बताओ पर चलते हो या यहीं भंग की तरंग में पड़े रहोने ?

पंचकौड़ीबास—बस—एक यिलास बढाकर अभी घामा ।

भंग जोड़ने वाला—हाँ भामी जब तैयार ही समझो ।

बुधरा साबी—हुआ क्या है लक्ष्मा को ?

पंचकौड़ीबास—धरे कुछ नहीं मामूली वस्तु है छाव ही एक दो क मा गई तो इन्हें धक हो गया । पीरत को जाठ ठहरी—बस्की बबरा जाती है ।

पहला साबी—नहीं बैचबी इनका पबराता ठीक है । आपकत कुछ हैके की भी थिकायत मुनी जाती है ।

पंचकौड़ीबास—मेकिन मैं ठीक बबा से घामा हूँ । घाबुबेद में सभी बीमा रियों का हमाब है । हैके की बबा तो मेरी रामबाण है । हाँ—सचमुच—मेरे मुस्के सेकर ही तो बड़े बड़े बँचों ने अपना बबाएँ तैयार की हैं ।

बुधरा साबी—हाँ बचजी ! आपको तुमना कौन कर सकता है । यहाँ माँब में पड़े हैं—सहर में होते तो लोप सिर घाँचों पर रखते । हबेसिया बग जाती हबेसिया ।

[एक १३ १४ साल की लड़की घाती है । बबरारुं हुई जान पड़ती है ।]

लड़की—मैया ने फिर कै कर बी । सच कपड़े भी खगाब कर जाते हैं ।

पंचकौड़ीबास—सचमुच तबियत प्याब खराब जान पड़ती है । (एक साबी से) ऐसा करो मैया अभी बीड़कर सहर जामो घीर बहाँ से किसी योग्य डॉक्टर को सेकर घायो ।

भंग जोड़ने वाला—मेकिन बैचजी उलटे बाँस बरेली को

जकरत है ? आपके रहते डॉक्टर की क्या जकरत ? भला आपसे अधिक यह क्या कर सकेगा ?

यंगकीर्डीबास—एक से दो अच्छे होते हैं, मैया ! बैसे तो मुझे अपनी बिकिरसा पर भरोसा है फिर भी तुम जागते हो ऐसे समय पर बुद्धि भी काम नहीं लेती । (परमी से) जलो मस्तू के कपड़े बदल जाओ और देखो जब राधो मठ—भगवान् सब ठीक करेगा ।

एक साथ—हाँ मामी मैं सभी डॉक्टर को लेकर जाता हूँ ।

[सब जाते हैं]

[पर-परिवर्तन]

तीसरा दृश्य

[एक लुने मंचान में कहींया कुछ प्रकृत नये जानेवाले लोगों को पढ़ा रहा है । पढ़ने वालों में बालक-बालिकाएँ भी हैं—पुरुष-पुत्रियाँ भी हैं एक-दो बूढ़े महाशय भी हैं ।]

एक बूढ़ा—भैया हमारे साथ आप क्यों माया-पच्ची करते हैं—कहीं बूढ़े लोभे भी पडे हैं ?

कहींया—क्यों नहीं जायाजी फारमी के एक बहुत बड़े कवि हुए हैं येक-साही उन्होंने जातीय बर्ष की समस्या के बारे पढ़ना शुरू किया था । इसी तरह संस्कृत के महाकवि कालिदास ने भी बचपन में कुछ नहीं पढ़ा था । बिधा पढ़ने के लिए कोई भी समस्या ठीक है ।

एक लड़का—(स्मैट बिल्ला हुआ) मास्टरजी यह सवाल नहीं थाता ।

कहींया—(स्मैट हाथ में लेकर देखकर) धरे यह क्या किया है २ और २ कितने होते हैं ?

लड़का—जी बार ।

कन्हैया—यहाँ पाँच क्यों लिखे हैं ? तुम ध्यान नहीं देते । बापों समाज को फिर करो । (लड़का बला जाता है ।)

बुधरा लड़का—मास्टरजी मैं कम से पढ़ने नहीं चाहूँगा ।

कन्हैया—क्यों बरीदा ?

बरीदा—धम्मा कहती थी कि पाँच भासि कहते हैं कि धपर तुम लोग मास्टर कन्हैयाकास से कोई छरोकार रखोये, उससे बच्चों को पढ़वाघोने लो गाँव से निकाल दिए बाघोये ।

एक बूढ़ा—हाँ ऐसी बर्षाँ गाँव में है सही । वे कहते हैं कि पढ़ सिखकर ये कमीने लोग हमारी बराबरी करेंगे ।

कन्हैया—हाँ बाबाजी ये लोग मुझे भी डराते-बमकाते हैं । नाम से मार देने की भी धमकी देते हैं ।

बुधरा बूढ़ा—फिर भैया तुम क्यों हमारे पीछे अपनी नाम जोकम में आसते हो ?

कन्हैया—अब बात में पैदा होने के पाप का प्रायश्चित्त कर रहा हूँ । संसार में न कोई बड़ा है, न कोई छोटा । विद्या प्राप्त करने का सबको अधिकार है । धीरे सबके साथ एक-सा बर्तन होना चाहिए । धाय सबको समाज में बराबरी का बर्षाँ मिलना चाहिए । धायको इसकी भाँप करनी चाहिए, उसके लिए लड़ना चाहिए ।

एक बूढ़ा—आज पढ़ता है तुम हमारी धायीबिका किनबाघोने ।

[हँसता है]

कन्हैया—ऐसे डरने से काम नहीं चलेगा । जो काम करने का किसी का भी साहस नहीं होता—बदको बिन धाती है—ऐसा कठिन काम धाय लोग करते हैं । सपनाई न हो लो इन अंधी बात बानों का जीबित रहना भी कठिन हो जाए । इसके बदले में ये क्या देते हैं तुम्हें—बड़ा उपकार दिखाते हैं, चार धाने—धाठ धाने महीने धीरे बूठी रोटियों के टुकड़े ! नहीं बाबा, तुम्हें इस धम्याय के बिकड़ धायोलन सठाना चाहिए ।

रबिवा—(कन्हैया के पास आकर) मास्टरजी मैंने एक कविता लिखी है ।

(कायम कन्हैया की तरह बड़ाती है।)

कन्हैया—तुम्हीं मुनामो । नाकर । प्राबकत तुम मूब धर्या लिखती हो ।

रबिया—(नाकर कबिता मुनाती है)

देखते सब जिन्दगी को, कौन जतको भीखता है ?

जन्म पाया है मुसीबत

में, मुसीबत में बिप्लेने ।

जून धपना पी रहे हैं

जून धपना ही पिप्लेने ।

हैं हजारों पाब बिल में

हम उन्हें कब तक लिप्लेने ।

देखने तस्बीर बिल की कौन बिल में भीखता है ।

देखते सब जिन्दगी को कौन जतको भीखता है ॥

कन्हैया—बाह रबिया । तुमने तो कमात कर दिया धीर मुनामो ।

बलिर्वा हम बिब-बोपक

को बने जतते रहेंगे ।

प्राग में पलते रहे हैं

प्राग में पलते रहेंगे ।

लाक होने का रहे पर

भीख में जतते रहेंगे ।

स्वर्ग का मालिक मरीची को गरक में हाँकता है ।

देखते सब जिन्दगी को कौन जतको भीखता है ॥

भीखता भीख हमारा

भीखता करते रहेंगे ।

पाब में धीरा रूप हैं

पाब में मरते रहेंगे ।

मान प्राणों पुण्य की हम
 देखकर डरते रहेंगे ।
 शेष दिखताते सभी पर कौन उनको डाँकता है ।
 देखते सब जिनकी को कौन उसको डाँकता है ॥
 क्षेत्र को आजाब करने
 बल पड़े गैता हमारे ।
 स्वर्ग-शु पर घा रहा है
 हँस रहे नम के छितारै ।
 बल रहे बपू हवा में
 घा रही नैया छितारै ।

कौन इन बड़े परों की जाय धाकर डाँकता है ।

देखते सब जिनकी को, कौन उसकी डाँकता है ॥

कनूया—बाहू शूब बितनी प्रबंसा की पाय बोड़ी । कहो बाबाजी, फितना प्रबंसा सिखा है रबिया ने । कौन कहता है कि प्राप सोपों में बुद्धि नहीं होती । धबधर भिजे तो प्राप सोप बने-बड़े काम कर सकते हैं । प्रबंसा धब धाव हमारा स्मृत खत्म होता है ।

[सब उठकर बने जाते हैं]

[बट-परिचर्तन]

श्रीया दृश्य

[पंचकौड़ोवाल के मकान के बाहर । रबिया की भी बरहूवात-सी घाली है ।]

रबिया की माँ—(पुकारती है) बँदजी महाराज । बँदजी महाराज ।

[अम्बर से पंचकौड़ोवाल घीर बाँधर नबनीतराय बाहर निकलते हैं ।]

पंचकौड़ीबास—महाराज, बच्चे की क्या खेती है ?

डॉक्टर—मैंने इन्हे बहुत समा दिया है बच्चा जब चाप्या ! चिन्ता :
कीबिए ।

पंचकौड़ीबास—परमात्मा धापको सुखी रहे ।

डॉक्टर—सच्चा देखो । बवाई में चितना पानी मैंने मिसाया है इससे
प्रथिक न मिसाएया ।

रबिया की माँ—बैचबी, मुझ पर कृपा करो । मेरी रबिया को हुआ हो
पया है ।

पंचकौड़ीबास—इजा हो पया है तो दवा से जा ।

रबिया की माँ—बच देख लेते तो ।

पंचकौड़ीबास—मुझे भी कहींया की तरह भ्रष्ट समझ लिया है तूने । परे
शाहूण का बेटा मंत्री के घर कैसे जाएगा ?

रबिया की माँ—एक बाल का उवाह है । मैं धापके पैरों पड़ती हूँ ।

[पैरों पर बिरना चालूती है । पंचकौड़ीबास चौंकर दूर हो जाते हैं]

डॉक्टर नवनीतराय—(जो धत्री तक चुपचाप इस घटना को देख रहे
थे—कस मुस्कराते हुए बोस्तते हैं) क्या बात है बैचबी ऐसे चौंके क्यों ? क्या
बाप काटने घाया है ?

पंचकौड़ीबास—धत्री नहाना पड़ बाठा । इन लोगों के धर्म-धर्म सब छोड़
दिया है ।

डॉक्टर—सच्चा धाप धर्मियों को नहीं छूते ?

पंचकौड़ीबास—हम तो इनकी छाया से भी बचते हैं ।

डॉक्टर—(मुस्कराते हुए) धापको पठा है, मैं कोन हूँ ?

पंचकौड़ीबास—धाप" धाप ठूरे बड़े धाहमी

डॉक्टर—मैं भी बात का मंत्री हूँ

पंचकौड़ीबास—मंत्री ?

डॉक्टर—हाँ मंत्री । जब तक मंत्री रहा तब तक लोगों के मुझे इसी तरह
ठुकराया जैसे इस नरीबनी को धाप ठुकरा रहे हैं । मैं जब तक हिन्दू का

भुगवान् का मन्त्र वा चोटी खूँठा वा भजन माता वा तब तक प्रसूत वा ।
 सदाई बन जाने से मानो मेरी कामा ही बरन गई । भाप जोब सब मेरे पीरों
 पड़ते हैं—पर मैं बुलाते हैं—मेरे हाथ की बजा पीठे हैं । (रघिया की माँ से)
 बसो बहुत मैं तुम्हारी बच्ची का इलाज करूँगा ।

[डॉक्टर और रघिया की माँ बने जाते हैं ।]

[पंचकौड़ीबास हल्का-बल्का होकर रजु जाता है ।]

[एक भिन्न के बाहर]

पंचकौड़ीबास—सुनती हो मनुष्या की प्रम्मा !

पंचकौड़ीबास की पत्नी—(घाबर) क्या बात है—क्या हो गया ? क्यों
 धोर मचा रखा है ?

पंचकौड़ीबास—भरी प्रपन्ना लो धर्म बूट हो गया ! इन प्रदेवी क्यड़ों
 में पता ही नहीं चलता कि डॉक्टर मंत्री वा ।

पंचकौड़ीबास की पत्नी—मंत्री !

पंचकौड़ीबास—हाँ मंत्री ! वह क्या फिकरा हो ।

रामकुमारी—लेकिन क्या से लो बच्चे को कुछ प्राराम है । धर्म क्या बच्चे
 से भी क्यावा प्यार है फिर गाँव वाले क्या जानें कि वह डॉक्टर मंत्री वा ।
 बात यों ही बची रहने हो ।

पंचकौड़ीबास—वह बुझल रघिया की माँ सब जान गई है । वह माँब भर
 से पूँक देवी ।

रामकुमारी—उधे हो क्या पकड़ाकर उसका मुँह बन्द कर देता । इन
 कमीनों का क्या ? वो बँधे मैं हमको इज्जत-भावक सब छीन लो ।

पंचकौड़ीबास—नहीं सब ये ऐसे नहीं रहे । उस कम्हीबा ने इन सबको
 बिगाड़ दिया है ।

[घन्वर से आवाज आती है—'प्रम्मा-प्रो-प्रम्मा ?' दोनों घन्वर बने
 जाते हैं ।]

[पठ-परिवर्तन]

पाँचवाँ दृश्य

[स्थान—रबिया का मकान । रबिया एक बारपाई पर रोबो की हानत में बैठी हुई है । कन्हैया पास बैठी हुमा है । मकान में नरीबी के चिन्ह तो हैं—मैफिन हर तरफ़ ताक-तुबरापत है ।]

रबिया—बी बड़ा बबराता है कन्हैया ।

कन्हैया—बबरापो नहीं रबिया । माँबी पंचकौड़ीबास के यहाँ गई हैं—बह भाकर बबा बेगा ।

रबिया—बह पाञ्चाल हमारे घर कभी नहीं पाएगा । मैं तो बसकी बबा बाँडेनी भी नहीं । मुझे बसकी बुरत से बिन घाती है ।

कन्हैया—किसी से बुरा करना पाञ्च नहीं रबिया ।

रबिया—वे सोच भी तो हूँ किनकारते हैं मेमा ?

कन्हैया—बह हमारी बात का दुर्भाग्य है धीर क्या ?

रबिया की माँ—बेटी भववान् को सबकी बिल्ला है—बेनी ना देवदूत की तरह डॉक्टरजी हमारे बहूँ घा नए हैं ।

डॉक्टर—(रबिया की परीक्षा करता हुमा) बबरापो नहीं बेटा । मैं तुम्हें बसकी पञ्च कर दूँगा । (रबिया की माँ से) बोड़ा पानी गरम करो । इन्जेक्शन लवाना होना ।

[डॉक्टर इन्जेक्शन की तैयारी करता है । रबिया की माँ बनी जाती है ।]

डॉक्टर—(कन्हैया को देखकर) बाल पढ़ता है घापको कहीं देखा है ।

कन्हैया—घाप घायब माहीर से घाए हैं ? मैं बही का खूने नामा हूँ ।

डॉक्टर—मेरे एक छात्री डॉक्टर की पञ्च घापसे बिलती है । वे बेपारे कीजी नौकरी में बसे नए धीर लौटकर नहीं घाए ।

कन्हैया—हाँ मेरे एक भाई डॉक्टर वे । कीर की नौकरी में भी वे । उसका कोई समाचार नहीं मिला ।

डॉक्टर—बह बचपन से मेरे मिन वे । तुम नहीं जानते—मैं भी कहीं पञ्चन कहे जाने बातों में बा—मैफिन लीपों के घत्याचारों ने मुझे तंग कर

दिया। ईसाई हो जाने पर सब धर्मोन्मुखों को घोर दंड देते हैं।

कन्हैया—लेकिन प्रकृत से ईसाई हो जाना तो इस बीमारी का इलाज नहीं डॉक्टर साहब। हमें तो जैसी जाति वालों के हृदय बदलने की घोर प्रकृत कही जाने वाली जातियों का खून-सड़न बदलने की जरूरत है। मेरे जैसे पयलों को दुतरफा नकाई करनी पड़ती है—इधर इनकी पिरी हुई प्रकृति को उठाना पड़ता है—उधर उनके प्रकृतिवादी हृदय को बदलने की कोशिश करनी पड़ती है।

डॉक्टर—धर्मोन्मुखों का सुधार कर रहे हैं।

[रविधा की धी पानी लेकर जाती है। डॉक्टर इन्वेन्शन लगाता है। इतने में बंखोड़ीबास जाता है।]

बंखोड़ीबास—(डॉक्टर से) डॉक्टर साहब! मेरे लड़के की हानि फिर बिना गई है। प्राय इसी समय चलने की कृपा करें।

डॉक्टर—लेकिन मैं तो भंगी हूँ—धीर धीर बका से तो प्रायका धर्म-

बंखोड़ीबास—मुझ पर क्या करो डॉक्टरजी! मैं मूल में था।

डॉक्टर—आपके घर जाने से मेरा धर्म नष्ट होया। मैं नहीं जाऊँगा। आपने मेरी एक बहन का अपमान किया है।

रविधा की धी—बैठजी के मेरे घर आकर अपना धर्म तो भ्रष्ट कर ही लिया।

डॉक्टर—बैठ तो मुझे अपने घर बुलाकर धीर धीर ही इनका धर्म बता रहा।

बंखोड़ीबास—महाराज समा।

रविधा—मनुष्य का धर्म क्या करना है—धीर डॉक्टर का विशेषकर। ये अपना धर्म मूल गए, लेकिन प्राय अपना धर्म नहीं मूलिए। जाइए—इनके लड़के के बकर प्राण बचाइए।

कन्हैया—(बंखोड़ीबास से) देखा बिन्हे प्राय नीच कहे हैं उनका हृदय कितना ठंडा होता है?

डॉक्टर—लेकिन बंखजी, प्राय धीर बहन के धीर धीर धीर मैं आपके

बर बर्लूगा ।

[संजसौड़ीदास रबिया की माँ के पैर में बिरते हैं । रबिया की माँ हँस जाती है]

रबिया की माँ—घाप क्यों मुझे पाप में बसीटते हैं ? बैचजी । कुछ भी हो हमारे लिए तो घाप सदा बड़े हैं ।

कन्हैया—(बचजी को उठता है) सुबह का भूना शाम को भी बर लौट घाएँ तो वह भूना नहीं कहलाता ।

[पटाघोष]

